बोले - बतियावे से आगा/ पढ़े-पढ़ावे के जरूरत!

लोकभाषा भोजपुरी में अभिव्यक्ति के पुरनका रूप, अउर भाषा सब नियर भले वाचिक (कहे-सुने वाला) रहे बाकिर जब ए भाषा में लिखे-पढ़े का साथ साहित्यो रचाये लागल तब एह भाषा के साहित्य पढे वालन क संख्या ओह हिसाब से ना बढ़ल, जवना हिसाब से एकर बोले-बतियावे वालन क संख्या रहे। पहिल कारन ई रहे कि खेतिहर संस्कृति से उपजल ई भाषा लिखे-पढ़े आ पढे पढ़ावे क माध्यम ना रहे। पहिले संस्कृत, उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी आदि रहे। राष्ट्रभाषा-आन्दोलन के प्रभावी क्षेत्र रहला का कारन, एने क क्षेत्रीय भाषा भोजपुरी, अवधी, ब्रजी, मैथिली आदि साहित्यिक रूप में समृद्ध रहलो पर हिन्दिये में शामिल मान लिहल गइली स। हिन्दी-साहित्य का बुनियादी आधार का रूप में विद्यापति, कबीर, सूर, तुलसी, जायसी आ ब्रजी कवियन के ले लिहल गइल आ पढल-पढ़ावल जाये लागल। तब भोजपुरी-क्षेत्र समर्पित भाव आ निष्ठा से हिन्दिये का पक्ष में रहे।

हिन्दी खातिर भोजपुरियन का एह पक्षधरता आ निष्ठा क ई अरथ निकालल गइल कि भोजपुरी भाषाभाषी, हिन्दी भाषा भाषी हउवन लोग ।अनर्थ ई भइल कि ए भाषा में लिखे-पढे वालन के खतियावले ना गइल आ विशाल जनसंख्या वाली भाषा रहला का बावजूद भारतीय भाषा सब का सँग आठवीं अनुसूची में मान्यता का लायक ना बूझल गइल । मान्यता का नाँव पर बिजुके आ रोड़ा अँटकावे वालन में भोजपुरिये क्षेत्र के कथित ''हिन्दी-दाँ'' लोग के नाँव रहे ।

भाषाई चेतना आ अस्मिता का ममिला में भोजपुरिहा लोगन क आपन भाव-सुभाव संकोची त रहबे कइल, सोना में सोहागा ई कि ऊहो लोग अंग्रेजी आ हिन्दी के तरक्की के भाषा मानत-मानत अपना मातृभाषा के पिछड़ल आ गँवरऊ माने लागल। तबे नऽ अपना भाषा में लिखात-छपात साहित्य का दिसाईं ओतना ललक आ उछाह ना देखावल, जेतना दोसर भाषा-भाषियन में अपना भाषा-साहित्य खातिर लउकेला। एगो अउर बिसंगति ई पैदा भइल कि भाषा का गंभीर आ भोजपुरी जीवन से जुड़ल साहित्य का बजाय गावे-बजावे आ मनोरंजन का लिहाज से भोजपुरी भारतीय बजार (मार्केट)मे पइसा आ शोहरत का जरिया का रूप में चमके लागल। एही के 'लोकप्रियता' से जोड़ि के कइ एक लोग फायदा भलहीं

उठवले होखे, बाकिर नुकसान ई भइल कि मनोरंजन में, फूहर-पातर, सतही दुअर्थी, अश्लील गीतन का प्रचार से भोजपुरी भाषा आ संस्कृति के बदनामियो मिलल। भोजपुरी के सृजनशील स्तरीय आ अच्छा साहित्य का प्रति बने वाला नजरिया आ धारना एही कुल्हि का चपेट में, आ गइल । भोजपुरी बोले बतियावे के भाषा का खाँचा से बहरा त निकलल, बाकि पढ़े-पढ़ावे के लकम (अभ्यास) आ दिलचस्पी का अभाव में प्रतिष्ठित ना हो सकल।

कुछ दिन पहिले हम अपना संपादकी में, भोजपुरी का एगो नया सकारात्मक (पाजिटिव) पहलू के चर्चा कइले रहनी कि भोजपुरी भाषा भाषियन मे पढ़ल लिखल युवा लोग भोजपुरी भाषा के सोशल साइट्स आ 'ई मीडिया' से जोड के संवाद खातिर बहुत आगा बढवलस। फेसबुक, वाट्सएप आदि आधुनिक तकनीकी का जरिये अपना भाषा के आत्मीयता अउरू बढल। इन्टरनेट विस्तार में सहायक त बा, बाकि सबका खातिर ना। बहुसंख्यक लोग आजुओ, प्रिन्टेड पत्र-पत्रिका आ किताब पढ़े के अभ्यस्त बा। दोसर बात ई कि दुनिया में एक बेर फेर गंभीर अध्ययन खातिर प्रिंन्टेट किताब खरीदे आ पढ़े के रूझान बढल बा। आज पढ़े-पढावे बदे बड़-बड़ नगरन में राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला लागत बा। भोजपुरी में साहित्य का हर विधा में हजारों किताब छपल बाड़ी स आ छप रहल बाड़ी सऽ। जरूरत बा ओकरा प्रचार-प्रसार आ पढला-पढवला के। एही से भोजपुरी साहित्य के आकलन आ मूल्यांकन होई, जवन नइखे हो पावल।

आकलन मूल्यांकन खातिर पुरनका-नवका साहित्य पढ़े-गुने के परी ..... उहो भोजपुरी का भाव भूमि पर उतर के, बिना कवनो पूर्वाग्रह के। भोजुपरी भाषा साहित्य पर शोध करे वाला लोग प्रचलित ढंग से आ मानक का हिसाब से हिन्दी में पी-एच० डी० कर रहल बा। बाकिर पढे-पढावे वाला आम पाठकन के कमी बहुत अखरत बा। मन के संतोख खातिर कहा सकेला कि एघरी के इलेक्ट्रॉनिक (टी०बी०, लेपटॉप, टेबलेट) जमाना में अखबार किताब पढ़े के गंभीरता आ टाइम हइये नइखे। एह सब के बावजूद भाषा-साहित्य के महातम बनवले रखला खातिर भोजपुरिया लोग के टाइम निकालहीं के परी।

भोजपुरी का नाँव पर होखेवाला ज्यादातर आयोजन में गंभीर प्रभाव डाले वाला चर्चा-परिचर्चा आ विमर्श कमे होला। भीड जुटाके प्रभाव डाले खातिर, गाना-बजाना, डांस तक भोजपुरी भाषा-संस्कृति के सीमित कइला का कारन, चयनित आ उत्कृष्ट पर पर्दा पर जाला। एही में भाषा आ ओकर उत्कृष्ट रचनात्मकता दबा जाले। एगो अउर असंगति बा। भोजपुरी मान्यता के सवाल होखे भा साहित्यिक संस्थानन के गतिविधि, इमानदारी आ निरपेक्षता ना रहला से सभत्तर झोल आ दरार साफे लउकत बा । ना त भाषा-भूगोल एकवटत लउकत बा, ना प्रतिनिधित्व करे वाला सही लोग जुटत बा। नेतागिरी, दलबन्दी, मठाधीशी आ संकीर्ण सोच वाली राजनीति हर रचनात्मक कोसिस के चउपट कइ धइ देले बिया। स्तर के बात छोड़ीं, आयोजक लोग अपना हेली-मेली आ ग्रुप का लोगन का बाद, जादातर अइसन उठाऊ लोग के बोलावत बा जे भोजपुरी साहित्य के अध्येता होखा भा ना होखे, बाकि मनमाफिक आ भविष्य में कामे आवे वाला होखे। आपन पीठ अपने थपथपवला से का होखे वाला बा ? भोजुपरी से अपनाइत आ प्रेम राखे वाला के जदि नीयत आ उद्देश्य साफ बा आ ऊ अपना भाषा खातिर कुछ बढ़िया कइल चाहत बा, त सबसे पहिले, ऊ पढ़े-पढ़ावे वाला लोगन के जमात बरियार करो।

नयका साल में सकारात्मक सोच का साथ, अपना रचनात्मकता के धार दी। हमार शुभकामना।

••

अशोक द्विवेदी

शोषन-उत्पीड़न के अमानवी प्रथा : 'गिरमिटिया'

डा0 सान्त्वना

'गिरमिटिया' बेवस्था, निर्बल श्रमजीवी किसानन के शोषन–उत्पीड़न के एगो अइसन जालिम पद्धति रहे, जवन कुटिल औपनिवेशिक शासक अपना फायदा खातिर गढ़ले–बनवले रहले सऽ। उनइसवीं सदी के चउथे दशक से एग्रीमेन्ट का तहत भारतवासियन के गिरमिटिया का रूप में, अंग्रेज फीजी, गुयाना, मारीशस, सूरीनाम, दक्षिण अफ्रीका, वेस्टइंडीज आदि देशन में मजदूरी खातिर ले जाये सुरू कइले रहले सऽ। धीरे–धीरे बहरा ले जाइल गइल श्रमिक–मजदूरन ओह दुर्दशा, उत्पीड़न आ शोषन के खाका ना खाली गिरमिटिया बलुक एहू देश में साफ होखे लागल। तब गिरमिटियन खातिर सबका भीतर ना खाली सहानुभूति उपजल बलुक अपनापन क भावो जागल। ई एह कारन, काहे कि गिरमिटिया बनल भारतवासी इन्सान रहलें स, बलुक ऊ अमानवीय–यातना आ बिपरीत परिस्थितियन के शिकार बन गइल रहले सऽ। बीसवीं शताब्दी आवत–आवत भारतीय लोकमानस में अमानवीय पद्धति के शिकार 'गिरमिटिया' चर्चा के अइसन विषय बन चुकल रहे कि ओके साहित्य, समाज आ इतिहास से विच्छिन्न ना कइल जा सकत रहे। एही कारन एकर अनुगूँज हिन्दी साहित्यो में सुनाये लागल।

मैथिलीशरण गुप्त जी 1916 में "किसान" शीर्षक से एगो लमहर कविता लिखले रहलन। एह कविता में किसान के 'गिरमिटिया' बनला के पूरा प्रक्रिया, परत–दर–परत उघारल गइल बा। कविता में, एगो सपनजीवी नवहा (युवा) के जीवन का खुरदुरा आ जटिल जथारथ से टकरा के 'गिरमिटिया' बन गइला के करुन दास्तान बा। वास्तव में ई कविता समसामयिक समय–सत्य आ जथारथ के व्यक्त करे में सफल बिया, जवना में ओह समय के आर्थिक, राजनीतिक आ समाजिक दबावन का चपेट में एगो सीधा–सरल, श्रमजीवी मजबूर किसान एगो दयनीय–अभागा गिरमिटिया बन गइल। ई जथारथ ओह घरी के भारतीय कृषि–समाज के हजारन किसानन के जीवन के जथारथ बन गइल। कविता के सुरुआत में ओह किसान के चित्र उभरत बा– संसाधन, सहायता, सुबिधाविहीन, नियति के मारल असहाय...

एक वर्ष भी वृष्टि बिना समुदाय तुम्हारा
भीख माँगता हुआ भटकता मारा–मारा।[1]

एही किसान के बेटा पर प्रेम विवाह का बाद उलट परिस्थितियन में कर्जा क बोझा लदा जाता, ओकरा माई–बाप के दुखद मृत्यु हो जाता आ घोर अकाल पर जाता। फसल बरबाद, मेहरारू के गहना गुरिया बिका जाता आ ऊ गाँव छोड़े पर मजबूर हो जाता। ओकरा एह दारुन–दयनीय हाल के फायदा एगो एजेन्ट (अराकारी) ओकर भाग्य बदले क प्रलोभन देता आ ओकरा सकार लिहला पर, भरोसो जगावऽता–

किन्तु अब चिन्ता नहीं, तुम पर हुई प्रभु की दया
जान लो, बस आज से ही दिन फिरे, दुख मिट गया।[2]

बेबस किसान डिपो में ले जाइल जाता आ 'गिरमिटिया' का रूप में 'फीजी' रवाना कर दिहल जाता। किसान तनिको खुश नइखे खाली ई सोच के कि अब ऊ दास हो गइल, ओकर स्वाधीनता अब छिना गइल। ओकर इहे व्यथा, दरअसल हर गिरमिटिया के व्यथा रहे। आपन मातृभूमि आ देस केहू ना छोड़ल चाहे आ जे छोड़ल ऊ बड़ा गहिर व्यथा में छोड़ल। कविता में ऊ गिरमिटिया बनल किसान बहुत पीर में आपन गाँव, खेत–बधार इयाद कइले बा आ बेमन आ गहिर उदासी में विदा भइल बा। फेर ओकरा सँग शोषन आ दमन के चक्र शुरू भइल बा। जवना जहाज से ओकर जतरा भइल ओकर हाल कुछ एक तरह के रहे–

हम कुली थे और काले, गगन से मानो गिरे
पशु समान जहाज में, थोड़ी जगह में थे घिरे!
भंगियों का काम भी परवश हमें करना पड़ा
और कुत्तों की तरह पापी उदर भरना पड़ा।...

XXXX XXXX XXXX

वध्य–पशु सम अर्द्धमृत हम तीन मास सड़ा किये
तब कहीं जाकर फिजी ने सामने दर्शन दिये।[3]

कविता ओह गिरमिटिया के आत्मकथा से आगे बढ़त बिया आ गिरमिटिया मजदूरन के पीड़ा, बेबसी आ दुख–दर्द में विस्तार पावत बिया। कविता में कवनो नाँव त नइखे बाकि एगो समय–सन्दर्भ के संकेत देत बेचारी अबला के जरिये गिरमिटिया क दारुन–स्थिति खुद–ब–खुद प्रगट हो जात बा–

'देखो, दूर खेत में है वह कौन दुःखिनी नारी
पड़ी पापियों के पाले है वह अबला बेचारी
देखो, कौन दौड़ कर सहसा कूद पड़ी वह जल में
पाप–जगत से पिण्ड छुड़ाकर डूबी आप अतल में!'4

गिरमिटियन के संघर्ष आ दुःख से गुजरत कवि दीनबन्धु एण्ड्रज आ ग्रियर्सन के बतावल फिजी यात्रा का ऐतिहासिक तथ्य आ सच्चाइयन से गुजरत गिरमिटिया–व्यवस्था का अन्त ले पहुँचत बा जब मुख्य नायक स्वतंत्र होके देश वापस लौटत बा आ सैनिक का रूप में मर जात बा। ई आखिरी परिघटना काल्पनिक बा बाकि पूरा कविता, ऐतिहासिक रूप में तथ्यन के काव्यात्मक विस्तार बा।

भवानी दयाल जी के उपन्यास 'नटाली हिन्दू' 1920 में छपल रहे, ओहू में गिरमिटिया–मजदूरन का जीवन के चित्रण कइल गइल रहे। प्रेमचन्द जी के 'शूद्रा' कहानी मारीशस के भारतीय प्रवासियन का जीवन पर आधारित रहे, जवन 'चाँद' पत्रिका में जनवरी 1926 का अंक में प्रकाशित भइल रहे। प्रेमचंद का ओह कहानी के नायक 'मँगरू' आ नायिका 'गौरा', एही तरह एजेन्टन का प्रलोभन आ धोखा में आके मारीशस जात बाड़न स, उहाँ शोषन–उत्पीड़न झेलत अन्त में स्त्री–यौन–उत्पीड़न से आजिज होके आत्महत्या कर लेत बाड़न सऽ। मारीशस के एही गिरमिटिया–पृष्ठभूमि के आधार बना के अभिमन्यु अनत कई उपन्यासन के रचना कइले बाड़न।

अभिमन्यु अनत के 'हम प्रवासी' उपन्यास (2004) में 'डोना कामेलिया' जहाज से, कलकत्ता से मारीशस ले जाइल जाये वाला गिरमिटिया मजदूरन के बिपदा भरल कष्टकर यात्रा के परिस्थितिजन्य संकटन आ बेबसी के सजीव चित्रण बा। जहाज में सवार विविध गिरमिटिया–पात्र अलग–अलग आस–उमेद का साथ जा रहल बाड़े। केहू का अपना बेटा से, त केहू के बिछड़ल सगा–संबंधियन से भेंट करे क इच्छा बा। एक तरफ समुद्री यात्रा क संकट बा, दुसरा ओर जनमभूइं आ घर–परिवार छुटला के टीस भरल पीड़ा। एक ओर आवे वाला सपना भरल भविष्य आशंका आ के भय। बासी अरुवाइल भात–दाल आ दुर्गन्ध भरल पिये वाला पानी से हैजा फइल जाता। कतने यात्री बेमार छटपटात बाड़े। जे मर जाता ओके तुरन्त उठा के समुन्दर में फेंक दिहल जाता। दारुन आ रोआँ–रोआँ खाड़ करे वाला दृश्य बा। जब जहाज तट पर पहुँचत बा त लोगन का एगो दुसरे अन्तहीन दुख के सिलसिला सुरू होता। दुख आ यातना भरल कठिन यात्रा का बाद, शोषण–अत्याचार आ अमानवीय यातना का यथार्थ जमीन पर कूल्हि आस–उमेद–सपना चूर–चूर हो जात बा। स्वदेश के डंक मारत इयाद हूक बन के उभरत बा।

"लाल पसीना" नाँव के एगो दुसरा उपन्यास (1977) में अभिमन्यु अनत के ई परिवेश चित्रण दुसरा तरह के बा। एम्मे लेखक परिस्थियन से संघर्ष आ ओकरा के बदले के उपायन का सँग–सँग शोषन आ अन्याय का खिलाफ गिरमिटिया संघर्षो के चित्रण करत बा। बीच–बीच में भोजपुरी लोकगीतन के प्रयोग ई संकेत करत बा विस्थापित आ प्रवासी होइयो के ऊ मजदूर अपना लोकपरंपरा, भाषा आ सांस्कृतिक चेतना से बिलग नइखन स हो पावल। एगो अइसन लोकगीत आइल बा जवना में, उहाँ गइल गिरमिटियन के समान असहाय स्थिति दरसावत बा– "हमरा लगे न आटा बा, न पाटा पड़ोसिहा किहाँ के आटा गीले हो गइल बा, का कहीं हमनी दूनों जाना परेशान बानी जा। ना चूल्हि जरत बा, ना रोटी बनत बा।" एह विपरीत हाल में रहत भारतीय मजदूरन के ओह जिजीविषा आ जुझारूपन का पसीना से मारीशस के भूमि हरियर हो गइलो के चित्रण बा उपन्यास में। गिरमिटियन के एगो नेता किसन सिंह के हत्या से एगो नाटकीय मोड़ आवत बा, हत्या से उपजल आक्रोश गिरमिटिया संगठन आ स्वतंत्रता–समानता खातिर ओकरा संघर्ष के बल प्रदान करत बा। लेखक के टिप्पनी बा, "किशन सिंह की मृत्यु इतिहास की मृत्यु थी। इतिहास की मृत्यु प्रलय होती है। बड़े साहब को यह समझते देर नहीं लगी थी।"5 एकरा बाद मजदूर 'गिरमिटिया' के आपन नियति माने से इन्कार कर देत बाड़न स। उपन्यास में एकरा के कुछ एह तरह से देखावल गइल बा– "गिरमिटिया अब कोई नहीं रहा तो फिर क्या वजह है कि हम जीवन भर उसी तरह बंधेज में रहें और अगर हम दास नहीं रहे तो फिर क्यों हमें मालिक विशेष की कोठी में काम करने को मजबूर किया जाय? हमारा जन्म इसी मिट्टी पर हुआ है। इसके चप्पे–चप्पे पर हमारा अधिकार होना चाहिए।"6 ई चेतन–स्वर गिरमिटिया

मजूरन का दुसरा पीढ़ी के स्वर रहे, जवन अधिकार चाहत रहे, स्वतंत्रता आ समानता खातिर संघर्ष करे पर तइयार रहे। उपन्यास के अंत में नायक पात्र मदन अपना प्रेमिका मीरा से, एह उमेद आ भरोस पर अलग होत बा कि अगिला होली के त्यौहार के ऊ भारतीय प्रवासियन का संगठन का साथ मनाई।

1984 में अभिमन्यु अनत के एगो दुसरा उपन्यास "गाँधी जी बोले थे" में एकरा आगा के कथा बा जवन तीन खंड में बा। पहिला खंड में मजूरन के दयनीय स्थिति आ गाँधी जी के मारीशस आगमन के वर्णन बा दुसरा खण्ड में गाँधी जी के बतावल–सुझावल राह पर लड़िकन के शिक्षा–दीक्षा खातिर व्यवस्था का जरिये, उन्हन के अपना अधिकार आ जिम्मेदारी खातिर सजग होत देखावल गइल बा। तिसरा खण्ड में अप्रवासी भारतीयन के राजनीतिक सक्रियता का जरिये स्वतंत्र चेतना के उदित भइला के वर्णन बा। जन–जन में अपना विचार के प्रसार खातिर जवन इश्तहार ओघरी बनावल–चिपकावल जाँ सऽ, ओम्मे लिखल वाक्य एही चेतना के व्यक्त करत लउकिहें सऽ, जइसे–

"सौ वर्षों से परिवर्तन के सारे वायदे आज भी
फरेब हैं...
पसीने की सही तौल चाहिए हमें
मेहनत की सही कीमत।
गन्ने के खेतों के मजदूर आज भी इज्जत और
अधिकार
के मुँहताज हैं...
हम इज्जत चाहते हैं, अधिकार चाहते हैं
अपने बच्चों का भविष्य चाहते हैं!
सौ बरसों के शोषण का अन्त होना चाहिये।
विधानसभा में हमें भी अपने प्रतिनिधि भेजने का
हक चाहिये।
मजदूरों को भी वोट देने का अधिकार चाहिये!
इस भारी जुटाव में आकर अपनी शक्ति
बतानी है।"7

कथाकार गिरिराज किशोर के उपन्यास "पहला गिरमिटिया" एह सन्दर्भ में बहुत महत्वपूर्ण बा, जवन रंगभेद का खिलाफ, गाँधी जी का जरिये छेड़ल गइल लड़ाई, अहिंसक संघर्ष आ ओसे मिलल सफलता पर आधारित बा। गोरन खातिर आरक्षित ट्रेन से गाँधी जी के उनका सामान सहित बाहर फेंक दिहल, इतिहास के अइसन निर्णायक घटना रहे, जवन औपनिवेशिक शोषण आ उत्पीड़न का खिलाफ एगो नये तरह के संघर्ष के सूत्रपात कइलस आ आखिरकार ऊहे शोषण आ भेदभाव गोरन का औपनिवेशिक शोषण के अवसान के कारन बनल। उपन्यासकार एह घटना के वर्णन करत ओह प्रतिक्रिया आ प्रभाव के आकलन एह तरह से कइले बा– "मोहनदास को बाहरी चोटें नहीं आईं थीं। अन्दर की चोटें गहरी थीं।"8 गाँधी जी ने इसे एक मानसिक स्थिति के रूप में देखा। एक ऐसी मानसिक स्थिति जिसमें आधिपत्य और शासन करने की मानसिकता मूल तत्त्व थी।" गाँधी जी के अइसन महसूस भइल कि "रेल में हुये उस अपमान के पीछे न निजी शत्रुता थी, न स्वार्थ, एक मनोवैज्ञानिक नफरत थी, जो सर्वत्र फैली है।"9 ई मानसिक बेचैनी उपन्यास में गाँधी जी के लगातार परेशान करत रहे, उनके बार बार ईहे सपना आवे कि "वह रेल में सवार हैं जिसमें उन जैसे और भी लोग हैं। दो–चार गोरे आकर उन्हें हर स्टेशन पर धकेल देते हैं, गाँधी जी फिर चढ़ते हैं और फिर धकेल दिये जाते हैं। सब पंगु हो चुके हैं किसी का हाथ टूटा है, किसी का पाँव, किसी के सिर से खून बह रहा है।"10 गाँधी जी का भीतर निरंतर चल रहल ई लड़ाई उपनिवेशवाद विरोधी सत्याग्रह का रूप में बाहर फूट परल। एह घटना का बाद उपन्यास में ऐतिहासिक तथ्यन के इस्तेमाल करत लेखक गाँधी जी का नेतृत्व में गिरमिटिया प्रथा आ रंगभेद के खिलाफ उनका संघर्ष के कथा शुरू कइले बा। गाँधी जी का संघर्ष के साधन रहे अहिंसा अउर सत्याग्रह।

दरसल ई संघर्ष दू गो जीवन–दृष्टि आ विचारधारा के संघर्ष रहे। एगो चरम रूप में अनैतिक आ दुसरका अपना सिद्धान्त आ व्यवहार में अत्यंत नैतिक आ अडिग। अन्ततः उपन्यास में गाँधी जी के नैतिक आन्दोलन सफल होत बा। आ गिरमिटिया बनल भारतीयन का बहुसंख्य माँग मान लिहल जाता। एह आंदोलन का सफलता के, इतिहास में कवन कवन दूरगामी परिणाम भइल, ई केहु से छिपल नइखे। उपन्यास के अंत में गाँधी जी के कहल ई बात, जवन ऊ दक्षिण अफ्रीका छोड़त खा कहले रहले, आवे वाला इतिहास का ओर संकेत रहे– "21 वर्ष पहले नटाल के किनारे एडिग्टन–बीच पर उतरा था एक गिरमिटिया की तरह...। आज लगभग 21 साल बाद मैं यह मुल्क छोड़कर जा रहा हूँ.... यह मेरे रोम–रोम में रच–बस गया है। आजादी का रास्ता दिखाने वाला यह देश.... मेरे प्रयोगों और अनुभवों को इस्तेमाल में लाकर सफलता का तिलक लगाने वाले आप सब लोग हैं।"11 छगनलाल का नाँवे अपना चिट्ठी में जवन लाइन लिखले रहलन ऊ एगो पद के लाइन रहे। गिरमिटिया मजूरन के पीर संघर्ष आ अनथक श्रम के चरितार्थ करत लाइन–

"अँसुवन–जल सींचि–सींचि प्रेम–बेल बोई।"12 उन्हनी सँग, ओह देसवो खातिर अइसन प्रेमबेल बनल, जवना से परदेसो हरियरा उठल आ जवन अपना श्रम–संघर्ष का महागाथा से नया इतिहास के नेइँ धइलस।

समय बीत जाला, बाकि अपना कदम के निशान छोड़ जाला। गिरमिटिया–पद्धति का अमानवीय पहलू से मुक्ति खातिर, लड़ल गइल लमहर लड़ाई इतिहास बन गइल। ऊ सदी भले बीति गइल बाकिर शोषन, दमन, उत्पीडन आ स्त्रियन का बलात्कार के दंश लोगन का स्मृतियन में विद्यमान बा। अन्याय का खिलाफ, समानता, स्वतंत्रता आ सम्मान खातिर लड़ल गइल ए लड़ाई के भुक्तभोगी गिरमिटिया के आगा के पीढ़ी पर एकरा मनोवैज्ञानिक असर के भला कइसे नकारल जा सकेला। का ई सब अधिकार आ स्वतंत्रता ओह नारियन के मिल गइल? गिरमिटिया परिवार के सन्तानन के दक्षिण अफ्रीका, फिजी, सूरीनाम, मारीशस आदि देशन में का आजुओ संघर्ष से मनोनुकूल परिणाम मिलिये गइल? का आजो ऊ एक अदद घर खातिर नइखन स भटकत? मैथिलीशरण गुप्त जी के 1916 में लिखाइल कविता के किसान–स्त्री, जवन देह–शोषन से बाँचे खातिर भागत–परात घायल होके मर गइल, मुवे का बेर व्यक्त ओकर वेदना, क्षोभ आ सराप लोगन का भोर परि जाई?

"सती गर्भिणी अबला का वध वृथा नहीं जायेगा
यही नहीं यह कुली–प्रथा भी उसमें बह जायेगी...
... रहे न वह अपमान–स्मृति भी प्रभु से यही विनय है
पूर्व निरादर भी मानी को बन जाता विषमय है!"1[3]

सन्दर्भ-ग्रन्थ :-

1. मैथिलीशरण गुप्त ग्रन्थावली, भाग–2, कृष्णदत्त पालीवाल' (संपा0) वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ0–2।
2. उपरिवत, पृ0–90।, 3. उपरिवत, पृ0–92–93।,
4. उपरिवत, पृ0–95।,
5. 'लाल पसीना', अभिमन्यु अनत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृ0–22।
6. उपरिवत, पृ0–243।,
7. 'गाँधी जी बोले थे', अभिमन्यु अनत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ0– 237।
8. 'पहला गिरमिटिया', गिरिराज किशोर, राजपाल ऐन्ड सन्स, दिल्ली, 2010, पृ0–103।
9. उपरिवत, पृ0–105।, 10. उपरिवत, पृ0–153–54।,
11. उपरिवत, पृ0–901–902।
12. उपरिवत, पृ0–903। 13. 'मैथिलीशरण गुप्त ग्रन्थावली', उपरिवत, पृ0–97–98।

••

मालवीय नगर, नई दिल्ली

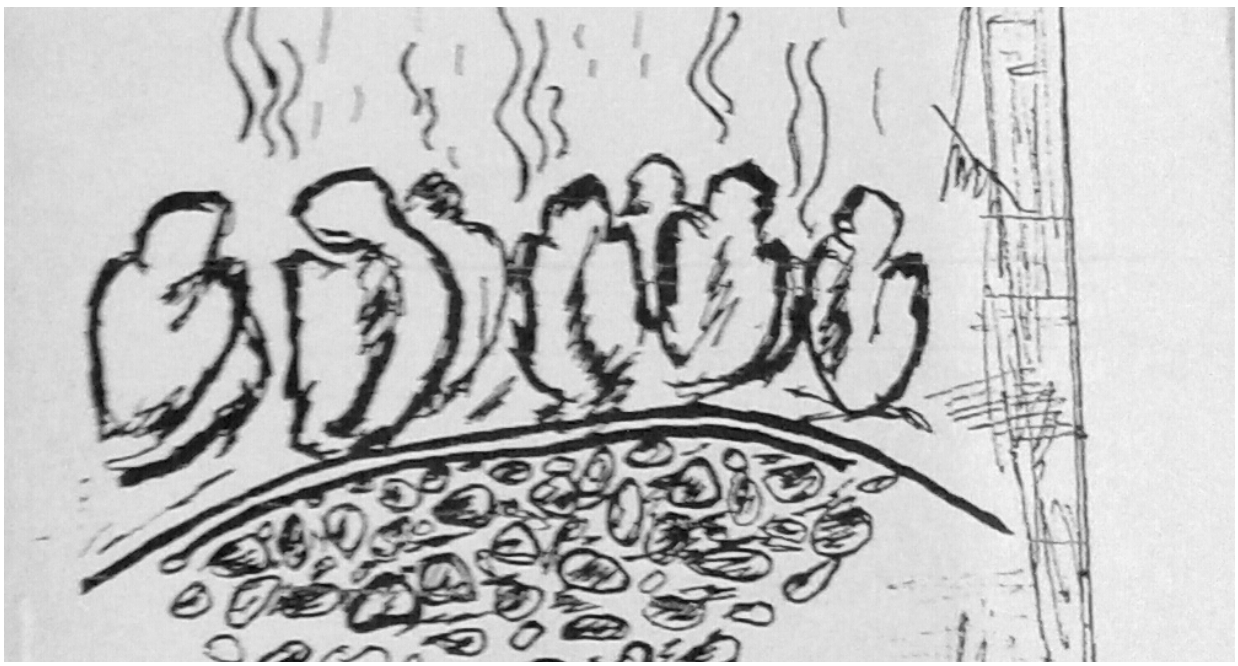

भोजपुरी समाज : जीवन दर्शन आ वैचारिक संस्कृति

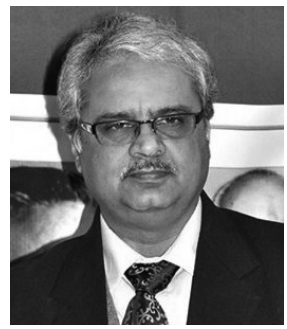

✍ सौरभ पाण्डेय

मूलरूप से देखल जाव त भोजपुरिया समाज नाता–रिश्ता आ गृहस्ती के सँवारत–जियत समाज हऽ। मन से मन के जोरे में लोगन के छन भर ना लागे। तवना प अध्यात्म, कर्मकांड आ लौकिक बेवहार के जवन सुभग संजोग एह समाज में रउआ देखे के मिली, अइसन संतुलन कवनो आउर समाज में साएदे मिलो। एही से भोजपुरिया भूभाग के हर गाँव आ ना त जवार खातिर कवनो ना कवनो परमहंस देव भा पचीस–पचास–सइ पीढ़ी पहिले के जनमल कवनो बाबा पुजात मिल जइहें। करीब–करीब हर गाँव में कवनो पीपर भा बड़, पाकड़, नीम, सिरफल के फेंड़ कवनो ना कवनो पूर्वज भा गाँव–देवता के नाँवें पुजात भेंटा जाई। समाज के देखे के, निभावे के आ चलावे के भोजपुरिया लोक के आपन एगो अलगे नजरिया रहल बा। सत्ता आ शासन के जवन बेरुखी से कवनो समाज टूट के खतम हो जाये के चाहीं, भोजपुरिया समाज अपना भासा, संस्कृति, आपन सात्विक परम्परा आ ढङ के जियवले, भलहीं एकर मनई कतहूँ काँहें ना बसल होखसु, जियत चलल जा रहल बा। सउँसे समाज सही कहल जाव त अछछ गरीबियो में जियत मन से धनी समाज रहल बा। एक सुरुवे से।

हतना लमहर इतिहास वाला भासाई समाज विषम से विषम इस्थिती–परिस्थिति में आजु ले जियत–जियत अपना के कवनो तरी के अबेवस्था में जी जाय लायक बना लेले बा। ई एही तागद के कारन बा, जे सउँसे भोजपुरिया समाज दुनियावी जागरुकता के लेके एकदम्मे से फरहर हो गइल बा। हम अपना निजी जिनिगी में कवनो ना कवनो कारन से अकसरहाँ जात्रा–भ्रमण करत रहल बानीं। एकर बड़हन फाएदा हमरा ई मिलल बा जे लोगन के जाने–सुने के आ मनोजोग से उनकर भितरी भाव के पढ़े के बेर–बेर निकहा संजोग मिलत रहल बा। दुर्बेवस्था–दुर्गती से हर मौसम–ऋतु में अपना के अथाह भँवर में पावत आ बाँचत–निकलत भोजपुरिया आम–मनई के महीनी से खँघालत आँखि हमरा के हर समै चकित करेले। हे ढङ से जमाना के दिकवत, अगोरत आ पढ़त आँखिन से पढ़ल भाव हवाई त हो ना सके, बलुक अपना जमीनी सुघराई से आमजन के ऑब्जर्वेशन करे के तागद एकबेरगी झकझोर देले। लोगन के अइसन समझ जदी बूझल जाव, त दोसरे ढङ से बतियावत बुझाले। ओह बतियवला के, ऊ चाहें हँसी–ठाठा होखो भा कपारे परल बीपत के बयान, कवनो सचेत मन सहजे थाह ना लगा सके। बाकिर ई जरूर बा जे मनई के एह जियल–भोगल भावना के सटीक शब्द मिले त एह भाव के ना त कवनो मत आ 'वाद' होला, ना त एकर कवनो 'रङ' होला आ ना भोजपुरिया मनई गढ़ल–बनावल कवनो हवाई सिद्धांत के पिछलग्गू होले। ई तनिकियो जरूरी नइखे, जे करिया के करिया भा ऊजर के ऊजर कहे खातिर कवनो 'वाद' के मुँह जोहल जाव, जइसन अक्सरहाँ मान लियाला। भोजपुरी लोक के आपन समुझ, आपन दरसन आ आपन बेवहार बा।

बेक्ती से बेक्ती के सोच–बिचार में एका ना भइल, परिवार आ समाज के बेवस्था के सहज ना भइल आदि अगर मूलभूत 'भूख' के बढ़ल रूप हऽ, त बूझि लीहीं जे भोजपुरिया जन एही 'भुखिया' के जियेले। आ एही भूख के मारे के उतजोग में बनल रहेले। कवनो आश्चर्य ना, जे भोजपुरिया मनई इच्छा, आसा, जरूरत के हतना गझिन रूप के जिये आ बरते में लागल रहेलन, जे कइ हाली दोसरा समाज के लोगन खातिर भोजपुरिया समाज के कला–संस्कृति में महीनी के दरसन हाल्दे ना बुझाइ। सरकार राज्य के होखो भा केन्द्र के एह भूभाग के दूहत रहल बिया। आ तवना प एहू समाज में से जिनके मौका मिलल ऊ लोग अपने समाज के लूटे में बाझल बा। का नेता, ठेकेदार, इंजिनियर, डाक्टर, बेपारी, रउआ बेवसाय के नाँव लीहीं, सभ अपनहीं समाज के हलुक बूझत आपन–आपन हिस्सा से लूट रहल बा। गरीब–गुरबा आदिमी के कवनो मोले नइखे। हतना संवेदनशील कौम खातिर हइसन मिजाज केनियों से तर्क के कसौटी प ना कसा सके। बाकिर जवन बा ऊ ईहे बा। ईहे एह समाज के सचाई बा। एह कूल्हि के ऊपर

सोचत बिचार कइल जाव, त आजु के हइसना बेवहार के कइ गो कारन बड़ुए।

तवनो प भोजपुरिया समाज आपन जिनिगी में भारतीय संस्कृति आ सनातनी कर्म–सिद्धांत से अपना के दूर नइखे कइले। ई बात नइखे जे नवका बेवहार आ उतान भइल जात आजु के बाजार समाज प जोर भर आतंक नइखे मचावत। बाकिर ईहो साँचा बा, जे आजु ले जवने तरीके होखो, आधुनिकता के नाँवें अपसंस्कृती से बाँचल आवत भोजपुरिया समाज आस्ते–आस्ते अपना सोरि के कमजोर होत देख रहल बा। आजु के नवकी पीढ़ी के भोजपुरिया इतिहास आ संस्कृति से जनवावल पहिचनवावल निहायत जरूरी हो गइल बा।

एगो अउरी बाकिर महत्वपूर्ण बात। आधुनिक समय के लोगन के सोच में हलुकपन भइल बूझीं, समाज के दुर्दसा के देखे–बूझे के नाँव प ढेर तथ्य इकाईबद्ध होत चलल जात बाड़न स। एही इकाई में से कॉम्युनिजम एगो प्रभावी इकाई हऽ। जवन आपन बिसेस बेवहार आ बिचार, आपन अंतर्विरोध, भितरिया कइ तरह के भेद के बावजूद समाज के एगो वर्ग के अपना सङे बहा ले जाए के क्षमता राखेले। भलहीं ई इकाई भूभाग के परम्परा आ बेवहार के आधुनिक सोच के नाँव प करीब–करीब बिना तर्कसंगत बिचार के सोझे नकार देवे के अकुताही में रहेले। ई ओह भूभाग में कइ तरह के बिचारभेद के कारनो बन जाला। भोजपुरी समाज के नजर से एह बिचार–इकाई के जानल बड़ा रोचक बुझाइल बा। अछछ गरीबी से जूझत–बाझत आ तवनो प सम्हरत–जियत भोजपुरिया समाज आखिर कम्युनिजम के ओह गहिराई से काँहें ना अपना सकल, जवन अइसना समाजन में अक्सरहाँ हो जा रहल बा। भा हो जाये के चाहत रहे। एह प सोचे से पहिले, कम्युनिजम भा बिसेस रूप से मार्क्सवाद के आजु के समय में फइलल सरूप के जानल जरूरी रही।

अपना सुरुआती दौर में मार्क्सवाद एगो बिचारधारा के तौर प सामाजिक विसंगति भा बैचारिक अनगढ़पन के खिलाफ जरूरी आवाज उठावत लउकल। 'आजु के बेकती' के सभ दुख–समस्या, कवनो तरह के सामाजिक परेसानी के 'आजुए के आधार' प चीन्ह के तार्किक रूप से सुलझावत लउकल। एकरा सोच में तर्क खातिर अस्थान आ एकर उपरी बेवहार में 'वैज्ञानिकता' के लउकत आभास ढेर लोगन के घींचेला। एही से, शासक वर्ग भा 'प्रभू–वर्ग' के क्रूरता आ शोषक–आचरण आ प्रवृती के खिलाफ ई बिचारधारा बड़ा क्रांतिकारी बुझाइल। सही बात त ई बा जे शासक–वर्ग भा प्रभू–वर्ग कवनो मानवीय इकाई हइये ना हई स। बलुक ई एगो बिसेस तरी के सोच होले। पूरा नकारात्मक सोच। तवना प कवनो नकारात्मक सोच के बिरोध में आवाज उठावल कवनो जागरुक समाज के पहिल कसौटी होले। एह हिसाब से अपना भर सही, एह बिचारध ारा के मूल काम शोषण के बिरोध में आवाज उठावल भर होके रहि गइल। एकरा आगा, समाज के आधारभूत गठन प काम करे के भा समाज के लगातार बनल रहे के मूलभूत कारनन में से कइ गो सांस्कृतिक, अवयव के नकारत ई बिचारधारा बेवस्था–निर्धारक के तौर प खलिहा लचर ना, कइ हाली मजाक अस बुझाइल। देखल गइल त हंगामा, हूल–हुज्जत, बेवस्था के बिरोध आदी त देखले गइल, बाकिर कवनो तलफत सवाल प एह सोच आ बिचारधारा से कवनो ठोस जवाब ना मिलल। एह सोच के आजु ले कवनो निर्णायक मोड़ ले निकहे पहुँचत ना देखल गइल। कहे के माने, जे अइसना यूटोपियन' सोच के 'अच्छा–अच्छापन' कुछ हद तक रूमानी भलहीं लागे, जमीनी स्तर पर कवनो ठोस काम करत ई सोच कबो ना लउकल। हमरा जाने, ईहे कारन भइल जे, भोजपुरिया समाज, जेकर मूल में आध्यात्मिक सोच संस्कार आ नजरिया बा, कम्युनिजम से कबहूँ प्रभावित ना भइल। भला अइसन कवनो सोच के सहारे जवन सभ समस्या प उमेद त ढेर जगावे, बाकिर समाधान के कवनो उपाय ना सुझावे अझुरा, लड़ा के राख देव, भोजपुरिया समाज अइसना बिचारधारा से आजु ले निकहा दूरी बनवले रहल बा।

आजु के बैचारिक, सामाजिक, राजनैतिक, बेवस्था में ढूकल 'ढोंगी सोच' आधुनिकता के नाँव प कइ गो ना तरह के बेमतलबे बुझात 'अंत' के घोषणा करे में लागल रहेले। एहसे कतना तरह के सांस्कृतिक आ नैतिक पतन के समस्या सोझ ठाढ़ बाड़ी स। बैचारिक आ नैतिक रूप से भारतीय समाज में जवन शून्यता फैल रहल बा ओकर बड़हन कारण ईहे घोषणा आ अवधारना कूल्हि बाड़ी स। बैचारिक रूप से एह शून्यता के माहौल से भोजपुरियो समाज अछूता नइखे। एह कूल्हि के पाछे एगो अउरी शक्ती काम क रहल बिया। ऊ ह कैपिटलिजम। माने, पूँजीवाद। उपरा से दूनो, मने, कॉम्युनिजम आ कैपिटलिजम दू छोर पर के 'वाद' बुझाले स। बाकिर गहिराहे देखल जाव त एगो के जिये खातिर दोसरो के जीयल जरूरी बनल रहेला। भोजपुरिया समाज एही 'ढोंग' आ 'धूर्तई' के नकारत आजु ले चलल जा रहल बा। भोजपुरिया समाज के एह नकार के कारन ऊहे बा, आपन संस्कृति आ भारतीय दरसन। एह भारतीय दरसन के आलम्ब धइले कैपिटलिज्म आ कॉम्युनिजम के भोजपुरिया समाज सांस्कृतिक आ सामाजिक आलोचना करत बनल बा। ईहे दरसन भोजपुरिया समाज के जीवनी शक्ती हऽ। अब ई जरूरी बा जे भोजपुरिया समाज अपना मानसिक उत्थान के सङे–सङे बेवस्थापरक उत्थानो के बात सोचो। ••

एम-2 / ए–17, ए०डी०ए० कॉलोनी, नैनी, इलाहाबाद-211008

भोजपुरी से सवतिया डाह काहे?

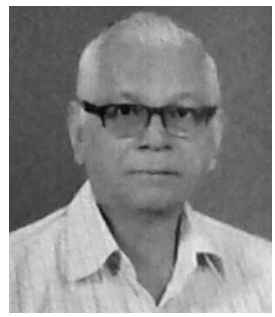

डॉ0 अर्जुन तिवारी

आपन भोजपुरी, बोली से बढ़ के भाषा आ भाषा से बढ़के मनोरम संगीत हऽ। ई अइसन आक्सीजन हऽ, जेकरा चलते रग–रग में सामर्थ्य आ पौरुष के संचार होला। भोजपुरी माई गंगा हऽ, जेमे डुबकी लगवला पर तन–मन भक् दे धप–धप निर्मल हो जाला। भोजपुरी संस्कार हऽ जवना से नवही लोग परम्परा से जुड़ल रहेला। ई पर्व, उत्सव आ व्रत हऽ जवना से सद्विचार, सद्ज्ञान, सत्कर्म के त्रिवेणी पर आसन जमावल जा सकेला। मधु में बोरल, अमृत में घोरल बानी, रवानी आ भोजपुर के पानी मनोरम बा, जइसन डॉ. अनिल कुमार 'आंजनेय' लिखले बाड़े–

"कहल जाला जे भोजपुरी के पानी आ बानी दुनों बड़ा मीठ, बरिआर आ सहजोर होला। एह भाषा का बानी पर शब्दन के जवन पानी चढ़ल बा, ओकर जवाब नइखे। .... एह शब्दन में मोजराइल आम के मदमातल सुवास बा, अपना जोरावर माटी के सोन्हाई बा, भक् दे अंजोर कऽ देवे वाली जोन्हाई बा, भरम के काटि के मरम के डिठार करा देबे वाली भाषा के आँजन बा, पुरखन के मरजाद बा, हिमालय के ऊँचाई बा, सागर के अटल गहराई बा, आ सुरुज के तेज जवरे आगि के गरम आँचियो बा।"

भोजपुरी के पाइके हिन्दी छतनार हो रहलि बा। राष्ट्रभाषा हिन्दी के आँगन में भोजपुरी तुलसी चौरा हऽ जवन अपना ज्वरविनाशी गंध से हवा के नीरोगी बना रहलि बा। साँप–छुछुन्दर एकरा लगे ना आ पाई। भोजपुरी के कहीं जमुना, कहीं सरस्वती, कहीं गोमती, कहीं घाघरा, कहीं नारायणी, कहीं फल्गू, कहीं कोशी के रूप में अंगीकार कइल गइल बा। माई के मिठास कहीं कम ना होखी, एही खातिर भोजपुरी भाव नदियन के जलधार लेके अभिषेक करत रहेले। अइसन धियरी हिन्दी का कहवाँ मिली? हिन्दी एही के पाके गद्गद बा, गद्गद रही, फरी–फुलाई आ विश्वव्यापी बनी। कुछ लोग बेबुझले नारा लगावता कि भोजपुरी के चलते हिन्दी के जान–मान–सम्मान कम होई। अइसन लोगन के समझे के पड़ी कि भोजपुरी हमेशा से क्षेत्रीयता से बढ़के राष्ट्रीयता के महत्व देत आइल बिया, संकीर्णता ओकरा खातिर पाप हऽ। हिन्दी के समृद्ध बनावे वाला एह क्षेत्र के सभ साहित्यकार मूलतः भोजपुरिए रहे। ई सभ चाहित त हिन्दी के स्थान पर भोजपुरी के प्रतिष्ठित करित। ओह सभ में क्षेत्र ना देश रहे, राष्ट्र रहे। एक राष्ट्रीय भाषा खातिर ऊ सभे संकल्पित रहे। भोजपुरी आ हिन्दी परस्पर साधक रहे, बाधक ना भइल–

यों रहीम सुख होत है बढ़ति देख निज गोत
ज्यों बड़री अँखिया निरखि, आँखिन को सुख होत।

देश के आशा–निराशा, मोह, मोह–भंग से अछूता हिन्दी के कुछ साहित्यकार आ पत्रकार सरल–तरल हिन्दी के विकास पर ध्यान ना देके, ओकर मूल स्रोत भोजपुरी से सवतियाडाह पर उतर गइल बा। अपभ्रंश मैथिली के महान कवि विद्यापति 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा' के मरम समझवनीं, जवना के विपरीत भोजपुरी माटी के सपूत नवका कूप–मंडूक भाई लोग हिन्दी के उन्नति में भोजपुरी के बाधक मानता। चर्चा में बनल रहे खातिर हिन्दी प्रेमी लोग अपने माई, आ माई के दूध आ माई के भाषा पर कंस नीयर आघात कर रहल बा। ऊ लोग अपना के भाषा– 'ज्ञान के सागर' कहत बा, बाकिर हमरा त ऊ सभ 'ज्ञान के गड़ही' लागता। ओ सभ के समर्थक पत्रकार 'सूझ के सिन्होरा' के बदला में 'सूझ के सितुही' बुझाता।

'भोजपुरी धरती और लोकराग' में डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र जी लिखले बानीं–

"भोजपुरी धरती, हवा, पानी ने मुझे चलना–बोलना सिखाया है, अंखफोर बनाया है लोक–चक्षु से चक्षु मिलाने की संवेदना और शक्ति दी है। इसलिए इसे जब कोई अन्यथा दृष्टि से निहारता है तो अनायास मेरा स्वाभिमान उत्तेजित हो जाता है।"

भोजपुरी के उपेक्षा, आलोचना अब सहात नइखे। हमनी के नारा बा–

"हिन्दी हमार आन हऽ
त भोजपुरी पहचान हऽ!"

हम भोजपुरिया भाई हिन्दी के बढ़न्ती खातिर फिकिरमंद बानी त कुछ ज्ञान के गड़ही–हिन्दी–प्रेमी–लोग भोजपुरी के जरी–सोर से उखाड़े के चर्चा करत बा। एही चर्चा से ऊ सभ अजर–अमर बने के चाहता। एह समय हमरा 'आल्हा–ऊदल' के लाइन इयाद पड़ऽता–

"जेकर दुसमन सामने बइठल ओकर जीअल बा धिरकार!" अब हमनी के जगला के जरूरत बा। आपन भोजपुरिया पानी चमकावे के जरूरत बा। हम अपना करम के रचना खुद करबि। सुनल जाला 'मेरी आवाज मद्धिम है कि तेरे कान बहरे हैं'। इतिहास खँघरला पर इहे पता चली कि भोजपुरिहा भाई सभ अपना राम, कृष्ण अइसन मर्यादा में बँधल बाड़े, हाथ पर हाथ धइले ऊँघ तारे, उनका कुछ लउकते नइखे। कुँअर सिंह के सभे भुलाइ देहले बा। अब फिराक गोरखपुरी के सुमिरन करे के पड़ी–

लेने से ताजो–तख्त मिलता है,
माँगे से भीख नहीं मिलती।
उहाँ के ईहो कहनाम रहे–
तेरी धरती का दूध पीकर माता
तकदीर से हम आँख लड़ा सकते हैं।

अपना भोजपुरी–जगत के 'त्रिदेव' हमनी के संबल बाड़े। पहिलका देव हम जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन (1851–1941) के मानीले जे भोजपुरी भाषा के भूगोल–इतिहास बतवले रहे। "Linguistic Survey of India" (Vol.V), Page - 40 में ऊहाँ के लिखले बानीं–

".....Bhojpuri is the practical language of an energetic race, which is ever ready to accomodate itself to circumstances, and which has made its influence felt all over India. The Bengali and the Bhojpuri are two of the great civilisers of Hindustan, the former with his pen, and the letter with his cudgel."

(भोजपुरी एगो दमदार जाति के व्यावहारिक भाषा हऽ, जे परिस्थिति के अनुसार अपनाके ढाले खातिर हरदम तैयार रहेले आ पूरा भारत पर जेकर प्रभाव पड़ल बा। बंगाली अपना कलम से आ भोजपुरी अपना लाठी से हिन्दुस्तान के सभ्य बनावे वाली भाषा ह।)

अइसन जुझारू, व्यावहारिक, व्यापक भाषा से सवतियाडाह कइल आत्मघाती सिद्ध होई।

भोजपुरी के अलख जगवैया, अजातशत्रु, प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद रहीं। राष्ट्रपति भवन (नई दिल्ली) में भोजपुरी के पताका उहें के फहरवनीं। ई बात जाने के चाहीं कि जनगणना में मातृभाषा लिखवावे के बेरा उहाँ के 'हिन्दी (भोजपुरी)' लिखववनी आ भोजपुरी के मान–मर्यादा देहनीं। राष्ट्रपति रहते अपना पोती के बियाह में राजेन्द्र बाबू शादी के नेवता भोजपुरिए में छपववनीं जेकर शुरुआत रहे– 'सोस्ती सिरि सरब उपमा योग लिखीं....'

सन् 1935 ई. में 'बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के अधिवेशन भइल। ओमे एगो प्रस्ताव पास भइल कि सभे घर–बाहर सगरी हिन्दिए में बोले–बतियावे। एकर जानकारी राजेन्द्र बाबू के दिआइल त उहाँ के मुँह से निकलल– "प्रस्ताव त बड़ा सुन्दर बा, बाकिर ई सँपरी?" एह प्रस्ताव के असहमति, अपना अंचल आ माई के भाषा के प्रति आपन प्रेम, बोल–चाल के भाषा के अपरिहार्यता, भोजपुरी के सहज अभिव्यक्ति पर आपन दु टूक बात रख दिहनीं।

भोजपुरी–जगत के त्रिदेव में तिसरका नाम महापण्डित राहुल सांकृत्यायन के बा। अखिल भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के दिसम्बर 1947 ई0 के सभापति के रूप में उहाँ का अपना लिखित भाषण में बतवनीं– ".... अबहिन हमनी के ई मतारी भाखा के केहू ना पूछत आछत बा, लेकिन केतिक दिनवा हो, केतिक दिनवाँ। हमनी के देस के दिन लौटल। लोग सचेत भइल। ऊहो दिनवा आई जब हमनी के भाखा सरताज बनी। एक करोड़ से अधिक वीर बंका जेकर पूत, ऊ भाखा केतना दिन ले एह तरह भिखमंगिन बनल रही। हिनुई हमनी के बड़की माई हऽ, ओकरा से नेह तूरे के काम नइखे। दुसरा जगह केतना भाई समझत बा जे हमनी के भाखा के जे पुछार होए लागल, त हिनुई के बाड़ नोकसान होई। तब लोग खाली अपने भाषा में लिखे–पढ़े लागी, अउर हिनुई के केहू ना पूछी। हिनुतान हमनी के देस, हमनी के बड़का देस के भाषा हिनुई, भला ओकर पुछार के ना करी? हिनुई के राज समूचा हिनुतान में रही। ओरा के हटावे वाला केहू ना जनमल बा।"

हिन्दी–भोजपुरी के बीच अटूट सम्बन्ध बा जेकरा में भेद–भाव राखल बुद्धि के दिवालियापन बा। ग्रियर्सन, डॉ. राजेन्द्र बाबू आ राहुल बाबा के सुस्पष्ट विचार जानके अब तृतीयपंथा के बुद्धि सुधरी, मन निर्मल होई आ भारत में हिन्दी भोजपुरी के डंका बाजी –

जय–जय–जय भोजपुरिया माई
तोहरे खातिर गीति गवाई
तोहरे खातिर समर लियाई
कइसन होई ऊ भोजपुरिया
जे ना तोके माथ बनाई। ••

(मोती बी.ए.)
निदेशक, काशी पत्रकारिता पीठ, वाराणसी

कुछ घर के कुछु बहरा के

आलोक पाण्डेय

मलिकाइन आ हमार संबंध गजबे संसदीय हऽ, सत्ता हमार बा एकर खाली हाला बा, बाकी ई बिपच्छे में रहि के कमाल करेली, हमरा एगहू काम से ई खुस ना रहेली। जान लीं सभे कि कैमरा आ करमकांड के छोड़ि हमके देखि के ई कबो ना मुसकियाली। अब साँझिए तनि कुबेरा घरे चहुँपलीं, त बड़ा परेम से मुसकियात चाह लेके अउवी, मने–मने हम ई सोचे लगुवीं कि ई नइहर वाली मुसुकी आजु ससुरा में कइसे छिटकल बिया ए दादा? बाकी मरद आ नेता उहे ह, जवन मन के खुसी मुँह पर ना आवे दे, ना त जीयल दुसवार हो जाई। एगो बाति अउरी कि मेहरारू भा बिपच्छ जेतना बोले, सरीर आ सरकार दूनो ओतने आराम से चलेला। चाह ध दिहुवी आ परबचन सुरू क दिहुवी, "रउवाँ के त घर–परिवार से कौनो मतलब बाऽ ना, आगि लागो, बज्जर पड़ो, कुछु मतलबे नइखे? कुछु करे के कहि दियाई त आगिए लगावे लागेनी, जेबा से आपन इयारे–दोस्त बा, घर बनो कि बिगड़ो कि उफर पड़ो, हमनीं से त कवनो मतलबे नइखे। एगो ई आदमी बा कि जीव–जान लगा के परिवार के सहेजे–सँगेरे में लागल बा आ एगो रउवाँ बानीं कि कबो घर बदल दे तानी त कबो नोट धरे के जगहि बदल दे तानीं, अइसे–कइसे चली घर? तनी आपुसियो प्रेम–भाव बढ़ाईं, राम–राम करब ना, बुढ़ारी में, अभी लइका बेरोजगार बाड़न स, लइकी कपार पर सवार होत जात बिया, आ रउवाँ मंदिरे बनवाये के फेरा में लागल बानी। जवन धनवा एह पर आ अपना इयरवन पर लुटवले जातानी, तनि हमरा भइयवो के दे दीतीं त ओहू के रोजी–रोजगार खाड़ा हो जाइत, बर–बियाह हो जाइत, हमार माई देस पार ले तिरिथ–बरत क आइत, दवा एलाज करा आइत बाकी ई ना होई।"

हम के हमार मलिकाइन हमेसा भाजपे के नजर से देखेली, हमार एकहू काम उनुके ना रुचेला, रामो राम करेनी न, त मुँह बिचुकावे लागेली, हम अपना इयार–दोस्त से तनि हँसियो बोलि लेनी त ऊ हँसलका हमरा जीवन के आँवर हो जाला। जले हमार नोकरी ना लागल रहे तले इनका नजर में हमरा ले निमन केहू ना रहे, बाउजी के धन रहे। इनिका पर खूबे लुटावल करीं, हालाँकि इनकर पूरा खनदान हमके आ हमरा बाबूजी के आजु ले ना पसन कइल, बाकि जइसे हमार नोकरी लागल गुजरात में, त 'तूँ कातिल तेरा दिल कातिल' कहि–कहि के, हमरा लाख बिरोध के बादो आपन संबिधान पढ़ा – पढ़ा के हमसे किरियो धरवा लिहली। आछा भाई चलऽ नोकरी लागी त बियाह होखबे करी, बाकि ई बियाहे के बाद से लगली बवाल नाधे कि अपना बाउजी के छोड़ऽ, माई के छोड़ऽ, आछा जो ना छोड़बऽ त ओ लोग के सिधांत छोड़ऽ, हमार संबिधान अपनावऽ? बाकी 'लड़िकाई के प्रेम कहो अलि कइसे छूटत' आदत त जिनगी भर के संगी ह। त ई फेर हाला उठावे लगली कि ई कतली ह, खूनी ह। हम बुझि गइनीं कि ई अब हमार टरांसफर करवाइए के मनिहन।

ऊहे भइल हमार गुजरात से दिल्ली टरांसफर हो गइल, पदबियो बढ़ि गइल एतना कि बुला हमरा ऊपर रामे जी बाड़न खाली। समान–ओमान सरिहा के अपना सोहाग के सेज पर एक दिन उँघाइले–उँघाइल इनकर (इनका माई संगे के बाति) सुने लगनीं, कि देखु माई बाबूजी के नाना के चाल–चलित्तर के असीम अनुकंपा से पहिलहीं से भिन्न संसकीरती वाला हमनीं के देस अब कई धरमन के ठेहा बनि गइल। बाबूजी के नाना के रचल संबिधान से अइसन कुछ खाका खिंचाइल बा कि हमने के अलावा जे, जे आपन हकूमत चलावे चहले बा, मुअली के मार मराइल बा, ना त रचि के फिंचाइल बा। अब ई एगो हमार मरद उपराइल बा, एकर लछन ठीक नइखे, हम एके सरिहारे में लागल बानीं। बाकी तूँ नइहर सम्हारू। भउजइयन के आँकुस

में राखु, ऊ इनकरा से बतिया के बड़ी लहर ले ताड़ी, बड़की जानी। उनुकर जमीन, जैदाद, जर,–जजिमनिका हमनीं के भले बड़ जाति, नान्ह जाति, आदिवासी, मूल निवासी, आवल–पावल कहि के लुटवा दीहनीं जा, बाकिर उनकर अब रहन ठीक नइखे बुझात। केतने रिसर्च सेंटर खोलवा के, उनकरा बेद, पुरान, उपनिषद्, रमाएन, महभारत के कपोल–कलपना–झुठिया बता के, इतिहास के पूरा फर्जी आ अपना मन लायक दस्तान बना के, हमनी के तुरनीं जा, बाकी अभी ऊ जियतारे बाड़ी। केतनों हमनीं के अलगा–अलगा दल पाटी बनववनी जा ऊ इनकरा सँगे सटले जात बाड़ी सन। नवकी जानी के तनि सरिहारू उनुका राज–रजला के बड़ी गुमान रहेला, बड़की जानी के देखा–देखा के तनि डेरवाउ उनके। अब एतनो मत डेरवा दिहे कि उहो आके इनहीं में सटि जासु। अगर उनकर मरद आरे छोटका भइया चारि गो बियाह नइखन कर सकत त भउजिए से कहि दे कि चारि गो बियाह क लेसु। देखतानी कि दूइए–तीन गो में उनुकर पेट पुचुके लागल बा, याद दियाउ उनुकरा के कि उनका खनदान में परिवार नियोजन ना सहेला। समुझाउ उनुके कि अगर उनुकर खनदान ना बढ़ल त हमनिके ऊहो खतम हो जइहें।

का करीं, कइसे आपसी प्रेम बढ़ाई। जवन देस रामोजी ले ढेर गोरकी चमड़ी पर बिसवास करत रहे, ऊ गोरकी चमड़ियो वाला बुझाता इनिकरा से मिल गइल बाड़न सन। कवन दो नासा वाला बा, कहता कि राम सेतु मनुष्य के बनावल ह। "आरे माई... आरे तनी इटली वाला मामा के फोन करू रे...!"

तले हम खाँसि के करवट बदलनी त पिनिक गइली हमरा पर – "मुँह फेर के चुपचाप सुति जाईं आगि जन लगाईं।" मने हम आगि लगवले जा तानी आ तूँ पियार बँटले आवताडू? अरे बाह रे मेहरारू? 'निज कर नयन काढ़ि चह दीखा' तहार त भाषा सुनि के हमार निनिये उड़ि गइल। ई सगरी नियम–कानून–संबिधान, कोट–कचहरी खाली अपना लाभे खातिर बनववले बाडू हो? एतना सरिहार के रचल गइल बा कि जे जहाँ पावे तहवें लूटे आ जे साफ साँचा बा साबुत ढूँढ़े, चाभुर कूटे। तोहँन लोगन के आजु ले ई ना बुझाइल कि हमनीके देस के कला, संस्कीरति, धरम, अर्थ बेवस्था के समाजिक ताना–बाना के पिछिलका हजार साल से बड़ी सोच–समझ आ षडयंत्र कइ के निनासल गइल बा, ना खाली निनासले गइल बा बलकी जे–जे एकरा आड़े आइल भा आवे के परयासो भर कइल ओकरा के खर–खनदान सहित नष्ट–भ्रष्ट क दीहल गइल। अइसन परिस्थिति ठाड़ा क दीहल गइल कि ऊ जहर–माहुर खा के अपने मरि जाव?

मुसलमान, अँगरेज आकि तहरा बाप के नाना के उपराजल समाजवादी, माहुरवादी बामपंथिये काहे ना होखऽस ई सगरी एकोर से हमरा देस के मय बिरासत के, तथ्य–कथ्य–कथा–प्रमाण के नष्ट करे में उठाइ नइखन स रखले। राम, कृष्ण, देबी–देवता कल्पना ह लोग, ए लोग के करतब झूठ हउवन जा, बाकी एकलब्यवाली घटना सही हऽ, महिषासुर मूल निवासी ह, आरे तोहन लोग त खगवो पूजमान बना देले रहितू जा बाकी ममिलवा ए से अटक–अटक जाला कि ऊ बाभन रहे।

सन् '47 से 2014 ले ए देस के जेतनी निर्दयता आ निरममता से तोहँन लोग लुटववले आ लुटले बाडू जा ओतना त हजार साल में मुसलमनवा आ अँगरेजवो ना लुटलन स। चपरासी से ले के अधिकारी लेके कि मंतरी से ले परधानमंतरी ले आकंठ ए लुटहाई में सउनाइल बा। एतना अँधेर मचा के धइ देले बाडू जा ए देस में कि जीव, जंतु, परिस्थितिकी–तंतु, हवा, दाना–पानी ले असुद्ध हो गइल बा, हालत ई भ गइल बा कि पैदा भइला से लेके मुअलो तक खातिर दम गने के परऽता।

बाकि सुनि लऽ, हमहुँ अब सुधियाइए के रहब, ए नोट तंत्र के उधियाइए के छोड़ब, तहरा कुल्हि घाति के तहरे घातिए से घातब, बड़कन के बड़हन आ छोटकन के अब से छोटहने बखरा बाँटब। आ जे तरे तूँ आपन संबिधान चोरी–चुपे लदववलू हमरा पर, ओहीगँने हम अपना बाउजी के सिद्धांत अब तहरा प लादब। एक हाली त हम अपनी देस के जनता के ऊ हजार साल पुरनका वाला सवाद त चिखाइये के रहब। एकरा बाद ई तहार सगरी कील ना छूटि गइल त कहिहऽ?

एकाएक ऊ हमरी ओर मुड़ली– "मार तबे से आगिए उगिलले जात बानीं, आरे कबो प्यारो जताईं जी, एगो गाना ना सुनाईं?"

हमहूँ कहनीं कि काहे ना? सुनऽ हमनी के ऊहे देस हऽ जवन मुअलो पर सुरे में गावेला काहें कि सुतल आ मुअल एके नु हऽ–

जवन बीत गइल तहरा से, ऊ दौर अब ना आई
ए दिल में सिवा उनुका, अब केहू ना समाई।
घर फूँकि त दीहलू तूँ, हमके राखि उठावे दऽ
जवन बाँचल बा, सइहारे दऽ आ नया घर बनावे दऽ!

••

रतसर, बलिया (उ० प्र०)

आनन्द संधिदूत के
तीन गो गीत

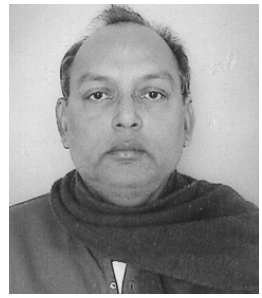

(एक)

हँसेले न रोवेले
न बोले बोलिया
पिया फूलि-फूलि
झरेले रँगन बेलिया।

हाँक पारे रात भर
भितरा पपिहरा
जोहत-जोहत भइल
भोर-भिनुसहरा
साधु धरे बीने के
चाउर-दलिया।

गुनी धइ पुछलीं
सगुन कइ पुछलीं
दूध-भात अँगना
बँड़ेर धइ पुछलीं
उचरे ना कउआ
बिगाड़े खेलिया।

कवन अपराध भइल
चेत में अचेत में
अमवाँ के डढ़िया
पतइया का पेट में
बइठ मारे कोकिला
सुरीली गोलिया।

दूर ले सड़क हम देख नाहीं पवलीं
छतवा पर ठाढ़ हो
नजर दउरवलीं
आँख रोके अहनी
उड़ेले धूलिया।

(दू)

मोरा मनवाँ का बगइचा में
कवन रितु अइली-
अलँग-अलँग फरि-फूलिके
छिंटइली। मोरा....

सुरभि-पराग जोहे बगिया में पइठे
मीठ गीत गावत पंखुरिया प' बइठे
लाजने भँवरवा का
मारे दबि गइली। मोरा....

लड़ेले कि देत गाँछ भेंट-अँकवरिया
घरवा क भेदिया भइलि कोइलरिया
जवन कहे के नाहीं
ऊहो कहि गइली। मोरा....

अजब सुरभि धन जग फइलाइ के
माली देख हँसेली कुसुम लुटवाइ के
रखली न कुछ सुख
ठाढ़े सूखि गइली। मोरा....

करुआ सुरभि रात जग गमकवली
भोरे-साँझ नाच-नाच नेह टपकवली
घमवा पहिरि छींट
पियरी लजइली। मोरा...

(तीन)

खेत फाटे
फाटे कइसे फूट-ककरी
असों फेर परे झूर
झँखे गाँव-नगरी।

डांड़ परे खाद-बीया खेत के मजूरिया
रेट-पोत टेकटर भाड़ा-महसूलिया
धान कहे कौन
सूखे ज्वार-बजरी। असों...

आज के त नाहीं बाटे काल्ह के फिकिरिया
बुचिया का संग के सहेली लरकोरिया
कइसे होई जुटी कइसे
डाल-दउरी। असों...

आधे छोंड़ चउरा में कुल्हिये इजतिया
हीत नात दसमी-देवाली डाला-छठिया
किस्त फेल बैंक माँगे
लोन जबरी। असों...

कइसहूँ कीने के बा रुपियवा के जोड़ के
धूमिल रहे के नाहीं बिटिया-पतोह के
रंग छोड़े चुनरी
भइल लुगरी। असों... ••

पदारथलाल के गली, वासलीगंज, मिर्जापुर

दू गो ग़ज़ल

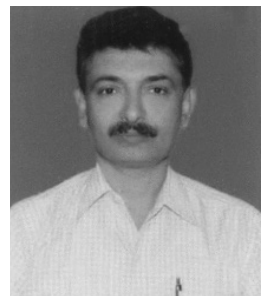

शशि प्रेमदेव

(एक)

उजरो के करिए में गिनल अगर जाई!
ढेला से मुन्सिफ क' बँगला भर जाई!
सनन्-सनन् तलवार चली जब आन्ही के
कान्ही से बरगद के बाँहि उतर जाई!
हमहम कऽ जिनगी जइसे कवनो गेना
जतने पटकाई, ओतने ऊपर जाई!
सुख प' जेकर कब्जा बा सबले बेसी
दुखओ ओकरा बखरा में सैगर जाई!
हम तऽ ओके रखवारा बूझत रहनीं
हम का जनलीं खेत बिजूके चर जाई!
हेठ करे धन् कऽ घमण्ड छत पर आ जा
तर कइ के तहरा के, सावन तर जाई!

(दू)

अब कहीं ऊ खानदानी शान असली ना मिली!
एह रईसन में केहू बबुआन असली ना मिली!
लाख सोना के महल रावन क' होखे मिल्कियत
बाहुबल का जोर पर सम्मान असली ना मिली!
इश्तहारी स्वागतम् पर मत करऽ बिसवास तूँ
प्ला'स्टिक का फूल में मुस्कान असली ना मिली!
डालि के तूँ जाल छानऽ भा, खँघारऽ राति-भर
झील के पानी में तहके चान असली ना मिली!
एह् तरे रफ्तार से फइली अगर अँगूरेजियत
शह्र का, गँउवों में हिन्दुस्तान असली ना मिली!
पंथ, मज़हब का बतावल राह पऽ चलि के 'शशी'
सात जिनगी में कबो भगवान असली ना मिली!

••

अंग्रेजी प्रवक्ता (अँग्रेजी) कुँ.सि.इ.का., बलिया

मिथिलेश 'गहमरी' के दू गो गीत

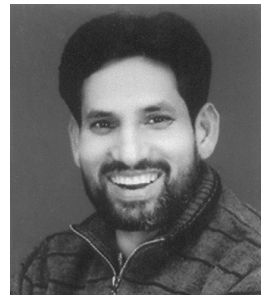

(एक)

आरे आवऽ, बारे आवऽ नदिया किनारे आवऽ
कतहूँ ले आवऽ दुख बाबू के सँवारे आवऽ होऽऽऽ।।

सोने के कटोरिया में कहाँ दूध-भात बा
मटिया के खोर में बिपते-रिन्हात बा
झर-झर झहरेला सुखवा-सपनवाँ
कि, अँखियन के लोरवा सम्हारे आवऽ होऽऽऽ।।
आरे आवऽ बारे आवऽ.... ....।।

घरी-घरी, घिरि-घिरि घहरे अन्हरिया
तेल-बाती बिना पयगर बा दियरिया
जिनगी के जोतिया अकास छूवे लह-लह
कि, करिखा झँवान से उबारे आवऽ होऽऽऽ।।

आरे आवऽ बारे आवऽ.... ....।।
देखिहऽ कि टूटे नाहीं डोर बिसवास के
सिया-जइसे होखे ना हरन मोरा आस के
कहीं सून होखे जनि मन के अजोधिया
कबो, एही लजियो के मारे आवऽ होऽऽऽ।।
आरे आवऽ बारे आवऽ.... ....।।

(दू)

जिनगी के बीखि पीके, मुअबऽ कि बचबऽ तूँ
कइसे एह पतझर में 'मेघदूत' रचबऽ तूँ।

भोरे के आगम प' डूबली तरइया
लहर-लहर आकुल बा मनवाँ के नइया
पतवार टूट रहल आन्ही के जोर से
फइलावा जाके निहारे खेवइया
अपना बल-बेंवत से झिझिरी बा खेले के
अपने परताप अब भँवर बीच नचबऽ तूँ।

अथरा ले, पथरा तक घात में शिकारी
का जाने अबकी, ई कवन तीर मारी
लाल-पियर दाना फिर छींटल बा जाल पर
धोखा से मारल जाई चिरईं बेचारी
घातिक समइया से कइसे पार पइबऽ
धत् मरदे, अब कहिया एकरा प' सोचबऽ तूँ।

माँझा के शान से मगरूर बा लटाई
अपना मनमर्जी से चंग कहाँ जाई
रोज-रोज धमकी, ई ओरहन, ई खोभसन
नयका जमाना के देखि लऽ ढिठाई
साँच के छनौटा प' झूठ के गुलौरा
रिश्तन के खटरस में कवना तरी पचबऽ तूँ। ••

गहमर, गाजीपुर, मोबाइल : 9451936687

दोहावली

रमेश राय

तनिको मानत बा कहाँ आज सियासतदार।
दूध पियावे नाग के करि-करि बड़ मनुहार।।१।।

पइसा फरे न फेंड़ पर, ना टपके असमान।
आवे छप्पर फारि के जब देलें भगवान।।२।।

'जनवादी' जनतंत्र में कहाँ करे बिस्वास।
तानाशाही-मंच से, चाहे दिहल प्रकास।।३।।

घूस घास का नाँव पर पड़ल छई में जान।
खून मुँहें जब लगि गइल, का मानी शैतान?४।।

कइल-धइल पानी भइल, बिगड़ि गयल सब खेल।
लालू गइलैं छोड़ि के बेपटरी के रेल।।५।।

खाद-बीज से फसल तक घपला भइल हजार।
शहर बनत एह देस में बस किसान लाचार।।६।।

खिलल न हियरा आजु ले, पाकल सगरी केस।
अउँजाइल जियरा पकल, सुनि-सुनि के उपदेस।।७।।

दामन पर लगते गयल, चकती-चकती दाग।
वोट-बैंक के मोह से, अबले छुटल न राग।।८।।

आँख-कान के सँग अब हिय के खिड़िकी खोल।
जाति-पाँत का नाँव पर अब न अधिक विष घोल।।९।।

नया-नया इतिहास रचि, बदलत रहे भुगोल।
प्रगतिशील का आड़ में कइलस डाँवाडोल।।१०।।

कश्मिरियत के नाँव ले होते आइल खेल।
आतंकी-ब्यापार अब देस न पाई झेल।।११।।

खुदा कसम तोहसे कहीं, एह माँ तनिक न झूठ।
'परधानी' में गाँव का उपजल खाली फूट।।१२।।

••

ग्राम - भुजहीं, पो०- सौसरवाँ, मऊ (उ० प्र०)

तनिकी मिले ढेर के हाला

कन्हैया पाण्डेय

हूक हिया में उठि-उठि जाला
भूखे जब लरिका छपिटाला!

दिन भर जांगर रोज खटावे
तब खर्ची भर अन्न जुटावे
कबहूँ तर-बर कबहूँ ठाला!

पहरा लागल सांस-सांस पर
गड़ल नजर बा हाड़-माँस पर
जकड़ल बा जुबान पर ताला!

सुबहित राह न सुबहित पानी
भइली जरजर अउर पलानी
मड़ई के आगे बा नाला!

मनरेगा के कवन कमाई
मजदूरी कइ जगह बँटाई
गर्दन में काँटन के माला!

मँहगाई बा पुलुई छुवले
जियलो लागे इहवाँ मुवले
दूध-दूध मुनवाँ चिचिआला!

अदिमी के अनगिनत रूप बा
चालन जइसन भइल सूप बा
सुन्दर मुख, दिल अजबे काला!

कबले कोसबि हम नसीब के
राह देखाई के गरीब के
तनिकी मिले, ढेर के हाला!

••

2ए/298 आवास विकास कालोनी, हरपुर, बलिया।

कबित-कहनी

विजयशंकर पाण्डेय

नवका जुग क बबुआ

इन्टर क रिजल्ट आयल। घर -बाहर खुसी छायल।
बबुआ यू०पी० में फस्ट निकरल।
पड़ोसिहा किहाँ कुफुत पसरल।

बड़ होइके बबुआ डाक्टरी पढ़लस।
अउर पढ़े बदे बिदेस जाय चहलस ।
बाबूजी क कुल्हि एफ.डी. तुड़ायल।
बबुआ बदे बिदेस भेजायल।

समय क तान, बूढ़ा-बूढ़ी क जान। बस एकही सन्तान।
कुल-खानदान क उभरत शान हौ।
लोगन के नजर में बूढ़ा-बूढ़ी त अब पकल आम हौ !

जानि लीं कि एक दिन जोर क आन्ही आयल।
सुखात आम जरिये से भहरायल ।
माई घरे क आड़ रहल।
नीम जइसे दुअरे पर ठाढ़ रहल।

जिनगी क नइया पाल के सहारे चले लगल।
हवा के रुख का साथे बहे लगल।

एक दिन बबुआ क फोन आयल।
सनेसा सुनि माई क मन गदरायल।
अब बबुआ जल्दिये घरे अइहैं।
माइयो के सँगे बिदेश लेके जइहैं।
बाप-दादा के समे क ई घर बिकाई ।
माई बँचल जिनिगी बबुआ संग बिताई।

बबुआ सँचहूँ एकदिन अइलन।
घर-दुआर सब बिकवउलन।
बिदेश क रहन-चाल माई के समझउलन।
उहाँ रहै क नियम-कैदा बतउलन।
माई अब हवाई अड्डा जइहैं।
पहिली बेर हवाई जहाज देख पइहैं।
बिछड़ल सवाँग के दुख भुलाये लगल।
मन नया रंग में कुनमुनाये लगल।
पासपोरट-बीजा बनवावे के रहे।
ओकरे बाद बबुआ सँग जाये के रहे।

बबुआ समझाय के गइलैं, पूरा दिन बिताय के अइलैं।
कहलैं मेहराय के, कुछ अनकसाय के ''अबहीं महिन्ना भर लगी, हमरे रुकले बहुतै अकाज होई, लवटब दोबारा त तोहके ले जाब !
तबले तोहके इहें रहे के होई।
जवन हो, दुख-दरद सहै के होई !''

माई तबसे अगोरत हईं ।
कबो बइठत हईं, कबो उठत हईं, कबों उड़त हईं । ••

नारायणी बिहार कालोनी, चितईपुर, सुन्दरपुर, वाराणसी -5

चुनरिया ए बालम

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

तिकवेले भरि भरि नजरिया ए बालम
रँगब रउरे रंग मे चुनरिया ए बालम ।।

तोपले तोपाई ना लकदक सेहरा
करबे निबाह जब लागल ई लहरा
निकलब जब तोहरी डहरिया ए बालम ।।

करके करेज सभ उजरल महलिया
सून कइ गउवाँ के साँकर गलिया
चलि अइलीं तहरी दुअरिया ए बालम ।।

खनका के कँगना उड़ि जाई सुगना
अचके पसर जाई, लोर भरि अँगना
बिछी जब ललकी सेजरिया ए बालम ।।
रंगब रउरे रंग मे चुनरिया ए बालम ।। ••

सी-39, सेक्टर-३, चिरंजीव विहार, गाजियाबाद (उ०प्र०)

आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी में पहिला दिन

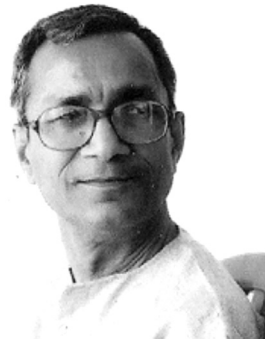

डा0 रामदेव शुक्ल

बहुत दिन से– लइकइए से– ग्रेट ब्रिटेन–यूनाइटेड किंगडम के साहित्य आ इतिहास पढ़ले के साथे साथे ओह धरती के देखले के ललसा लागल रहे। ओकर दरसन भइल चउदे सितंबर के एयर इंडिया के हवाई जहाज से। उड़नपरी (एयर होस्टेस) सुनवली कि आधा घंटा में जहाज लंदन के हीथरो हवाई अड्डा पर उतरि जाई। हमार निगाह निच्चे की ओर लागि गइल। समने पहाड़ रहल आ ओपर खेत के सीढ़ी लउकत रहल। जइसे कशमीर में लउकेला। धरती से पहाड़ पर चढ़ी तऽ एक खेत से दुसरे खेत में चढ़ि के जाए के परी। दस बीस भा पचास साठ सीढ़ी पर पहुँचत पहुँचत रउवाँ एतना ऊँच जगहि पर खाड़ हो जाइबि कि धरती पर खाड़ मनई बौना लागे लागी। ओह खेतन कि उप्पर पेड़ पालो के हरियरी। निच्चे पहाड़ से उतरत नदी, झरना आ जीव जुड़ावे वाली हरियरी। जइसे जइसे जहाज आगे बढ़े लागल शहर के अकास में छेद करे वाली बिल्डिंग लउके लगली सन। गड़गड़ा के जब जहाज धरती पर उतरल त एगो झटका देके धरती पर धावे लागल। ओकर वेग कम करे खातिर पाछे की ओर खींचे वाला बड़का फुलौना खुलि गइल रहलें।

जहाज से धरती पर गोड़ धरत में हमरा मन परि गइल इतिहास के ऊ छन जब ईस्ट इंडिया कंपनी के लोग कन्या कुमारी की धरती पर पानी के जहाज से उतरि के खड़ा भइलें आ देस के गुलाम बनवले के तइयारी शुरू हो गइल। चारि डेग चलते दरवाजा खोलि के बस खड़ा रहल। ओह में बइठते अपने से फाटक बन्द हो गइल। तीन चार मिनट चलि के रुकल। दरवाजा खुलि गइल। सब लोग उतरिके आपन झोरा झन्टा सम्हारत ओह जंजाल की ओर बढ़ल जवने में ढुकले पर चालीस पैंतालिस मिनट बाद ओह अँगरेज हाकिम लोग की मेज के समने हाथे में आपन आपन पासपोर्ट, बोर्डिंग पास आ एह देश में अइले के कारन बतावे वाला नेवता वाला कागज थमले खड़ा हो गइल। कुछ जने से एतना कड़ाई से पूछताछ होखे लागल कि दुसरे लोग के गोड़ कांपे लागल। सब कागद पत्तर देखले कि बाद अंगुठा के निशान एगो मशीन पर लीहल जाव। हमसे त एतने पुछाइल कि का करे इंगलैंड आइल बानीं? हम बतवनीं कि आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी से नेवता मिलल बा। दू हफ्ता ले ओइजा ब्रजभाषा, अवधी, भोजपुरी में जवन रिसर्च हो रहल बा। ओके देख के ओकरे विषय में आपन राय देबे के बा। अँगरेज बहादुर के ओठे पर माछी की मूड़ी भरि के मुसुकी झलकल। अँग्रेजी में बात होत रहल। ओके तनि अउर नरम बना के ऊ पुछलें– 'कहिया लौटे के बा?' हम कहनीं– 'दू हफ्ता बाद के लौटानी टिकट बा। देखि लिहल जाव।' हम फाइल बढ़वनीं। उनके मुसुकी एक बेर अउर झलकल। कहले– प्रोफेसर हईं रउवां। वीजा ओही लेखा खास बा। अब हम कवनों कागद नाहीं देखब। रउवाँ जाईं। उनकी बगल से हम उहां गइनीं जहां लिखल रहे– 'जहाज से आइल आपन सामान लेवे खातिर एहर से जाईं।' जा के आपन सामान सहेजनीं। हवाई उड्डा के गेट से बहरा निकड़ते आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी ओरिएंटल इंस्टीच्यूट के प्रोफेसर इमरेबंद्या देखते लपकि के अँकवारी दिहलें। हमार समान सहेजलें आ एक जगहि बइठा के अपने पीठि पर बान्हल बेग खोलि के ओमे से एक ठो सेब निकाड़ि के कहलें– 'सबसे पहिले एके खाईं।' जहाज में खाए पिए के समान झोंकते रहे उड़नपरी लोग। बाकि उतरले की बाद लगभग दू घंटा ले जाँच परताल कि बिच्चे भूखि पियासि भुलाइल रहल। इमरे के साढ़े चार बरिस के छोटका बेटा उनकी साथे आइल रहलें। सभे केहू एक सेब खाइल। ओकरे बाद लगभग पौने

दू घंटा बस में चलिके आक्सफोर्ड के सिटी सेंटर पहुंचल गइल। रस्ता में जीव परान जुड़ा देबे वाली हरियरी आ फुलवारी रहली सँ, बाकि हमार अँखि नींद से भरल रहे।

बस से उतरि के प्रोफेसर इमरे एगो मैदान में ले गइलें। चारू ओर दुकान के पाँती। बिच्चे में खाली मैदान। एगो दुकान के आगे आठ दस गो छोट छोट मेज। चारू ओर चारि गो स्टूल। एगो पर हमके बइठा के समान नीचे राखि के बंघा जी सामने वाली दुकानि के भित्तर ढुकलें। तुरंते लवटि के हमसे पुछलें– आप शाकाहारी हईं बाकि अंडा त खात होखब। एइजा शाकाहारी भोजन में अंडा डारल जाला। हम बतवनीं कि अंडा वाला कवनो चीज हम नाहीं खाइबि। पाँच मिनट बाद ऊ लवटलें त उनके एक हाथ में एक जोड़ा सैंडविच रहल आ दुसरा हाथ में एगो अद्धा बोतल। मेज पर धऽ के कहलें– सैंडविच में अंडा नइखे, मक्खन आ टमाटर खीरा के टुकड़ा बा। एके एहीजा खा लेईं काहे से कि गेस्ट हाउस में आजु खाना नाहीं मिली। ओह लोग के अतवार के छुट्टी रहेला। एह समें पाँच बजल बा। उहां पहुँचत पहुँचत छव बजि जाई। रउवाँ थाकल बानीं। चलि के सूति रहबि। ओह समे तनिक भूखि नाहीं रहल। बाकि एगो सैंडविच कवनो लेखा खइनीं। एगो उनके बेटा कि ओर बढ़वनीं। ऊ मूड़ी हिला के इनकार कइलें। हम उनके बाप से कहनीं। ऊ हमार बात मानि लिहलें, खइलें लइकवा दउरि दउरि कबूतर से खेलत रहल। कबूतर अदिमी से तनिक डेरात नाही रहलें। सैंडविच खाके पानी मँगनी। इमरे अद्धा वाला बोतल खोलि के मोटका कागद के गिलास में ढारि के हमके दिहलें। पनिया में छोट छोट बुजबुजा लउकल, जइसन सोडा वाटर में लउकेला। पुछनीं– ई सोडावाला पानी ह का? ऊ कहलें– नाही ई मिनरल वाटर हऽ। कई गो कंपनी योरप में झरना से पानी बोतल में भरिके बेचेली। ई सबसे बड़की कंपनी के पानी हऽ। एक घोंट पियनी त बुझाइल कि खार लागत बा। दुसरका घोट से पानी के मिठास आपन असर देखवलसि। बोतल पर दाम पढ़नीं। लिखल रहल डेढ़ पौंड। इंगलैंड के मुद्रा हवे पौंड। एक पाउंड में भारत के एक सौ रूपया मिलेला। मतलब आधा बोतल पानी डेढ़ सौ रुपया के रहल। हम उहाँ के सैंडविच वाला कागज उठा के पढ़नीं। ओहू पर दाम डेढ़ पाउंड लिखल रहे। एकर मतलब ई भइल कि तीन सौ रुपया में दूगो सैंडविच आ आधा बोतल पानी मिलल रहल।

मैदान में बुध आ बियफे के दिन भरि बजार लागेला जवने में जरूरत के सब समान बिकाला। जियादा दुकान पुरान कपड़ा, किताब, खेलौना के होला, जवन देखले में नया लागेला। आधा दाम पर बिकाला। ई कुलि देखावत एगो दुसरका गेट की लग्गे जाके खाड़ भइनीं जां। एगो कार के इसारा कऽ के इमरे बोलवलें। ओमे से निकड़ि के एगो हिन्दुस्तानी जवान आके खड़ा भइल। इमरे कहलें– आक्सफोर्ड चूनीवर्सिटी के ऊल्फसन कालेज के गेस्ट हाउस में चलेके बा। हमरा अचरज भइल। डराइवर साहब– कहलें– 'चलिए जनाब'। टैक्सी में बइठि के हम पुछनीं– आप हिंन्दुस्तान के कवने जगह के रहवइया हईं? ऊ बतवले– हम पाकिस्तान के कराची सहर के रहवइया हईं बाकि आक्सफोर्ड में बाइस साल से बसल बानीं। टैक्सी के डराइवर नाहीं एकर मालिक हईं। ओकरे बाद उनके नाम पता ठेकाना सब पुछाइल। खुसी खुसी बतवलें। ईहो बतवलें कि उनके पाँच जने लइका लइकनी एही जा स्कूल कालेज में पढ़ेले। महतारी बाप पाकिस्तान में रहेलें। उनहीं से पता चलल कि इंग्लैंड में टैक्सी चलावे वाला सबसे ढेर पाकिस्तानी हवें। कुछ बँगलादेस के आ पंजाब के। गेस्टहाउस की समने जब केराया पुछाइल त बतवलें– आठ पाउंड माने आठ सौ रुपया। पनरह मिनट के दूरी के किराया आठ सौ। इमरे उनके केराया देके रसीद लिहलें। हमार सब खर्चा यूनिवर्सिटी की ओर से होत रहल। रसीद देखवले पर सब मिलि जाई।

गेस्ट हाउस के स्वागत वाला काउंटर पर हम अपने नाँव पता के छपल कार्ड धइनीं। हँसिके हमार सुआगत कइलें आ पुछलें, 'जात्रा कइसन रहल। कवनो तकलीफ नाही न भइल?' सब बातचीत अंगरेजी में होत रहल। अबले अँगरेज लोग के उच्चारन समझ में आवे लागल रहल। बतवनीं कि जात्रा ठीक भइल। ओकरे बाद ऊ एगो बंद लिफाफा हमके थमवलें। ओपर हमार पूरा नांव, पता त लिखले रहल, इहो लिखल रहल कि गेस्ट हाउस के कमरा नं0 बी–314 में हमरा दू हफ्ता रहे के बा। ओमें पचीस तीस छपल पन्ना राखल रहे जवने में ओह गेस्ट हाउस में रहले के नेम धरम समुझावल रहे। ओमें से आधा अपने लग्गे राखे के रहल। लिफाफा पकड़ा के बहुत मधुर आवाज में हमसे कहलें– 'ई सब बाद में पढ़िके लवटावल जाई। अबहिन त कमरा में जाके आराम करे के चाहीं। इमरे आगे चलि के कमरा खोलले आ हमके ओकर बिजली–पानी, बिस्तर, आलमारी, मेज–कुर्सी, बाथरूम के कैदा कानून समुझवले। नहान घर के बत्ती जरवले–बुतवले के एक ठो डोरी खींचे के रहल।' एक बेर खींची त भक् से मर्करी बरि गइल। दुसरका बेर खिचले पर बुताइल। बिस्तर पर बइठि के जुत्ता उतरनीं

आ रजाई में ढुकि गइनीं। गरमी बुझाइल त जागि के घड़ी देखनीं– ओइजा के बारह बजल रहल माने हमरे देस के चाढ़े चार। ई त हमरे उठले के टैम से एक घंटा बेसी। पैंट कमीज उतारि के सम्हरि के सुतनीं त ओइजा के टैम से चारि बजे उठि के अपने ढंग से दिनचर्या में लगनीं। ध्यान के बाद आँखि खोलि के तकनीं त चकचिया गइनी। ई देखि के कि हमार कमरा त जंगल के बीच में बनल बा। एक ओर के देवाल शीशा के बा। उप्पर निच्चे बहुत सुन्नर पतई वाली बँवरि लहरा मारति बा। ओकर पतई हलुक हवा से हीलि रहलि बाड़ी। बाकि कमरा में हवा के कवनो चाल नाहीं मिलल। उठिके देवाल हाथे से छुवनी। बन्द रहल। एक जगहि से शीशा खोले वाला पेंच हटा के सीसा एक ओर सरकवनीं त अपने इहाँ के माघ के भिनसहरा के कँपावे वाली बयार से कमरा भरि गइल। जल्दी के बन्द कइलीं। बाल्कनी बना के फूल पौधा लगावल रहलें। अढ़ाई तीनि हाथ कि बाद ओतने मोट शीशा के दुसरकी देवाल रहल। ओह में दहिनी ओर के हिस्सा खुलल रहल। हमरे देखते एगो कबूतर उड़ि के ओही राहि से बालकनी में उतरि आइल। निच्चे से कवनो चीज अपने ठोर में दबा के उड़ि गइल। ओकरे पाछे हमार चकचियाइल निगाह ओह उँचका पेड़ पर गइलि जवने पर कईलेखा के चिरई बइठल रहली सँ। अगल बगल लाल, पीयर, हरियर बैगनी आ नीला रंग के फूल से भरल लता आ झाड़ झंखाड़ अकास के नीला रंग से मिलि के अजगुत लीला रचत रहलें। बाहर हवा में झूमत पेड़ पालो देखि के अन्दाज भइल कि केतना सरदी होई। धीरे धीरे दिन के उजास आ पेड़न की पुलुई पर घाम चमके लागल। नहा धो के तइयार भइनीं। साढ़े सात से साढ़े आठ अतिथि भवन के भोजन घर में खरमेटाव (नाश्ता) के समय रहल। हम उहां न जाके अपने साथे आइल सुक्खल मेवा खा के पानी पियनीं। कुछ पढ़नीं। नौ बजे प्रोफेसर इमरे बंघा अइलें। इनवर्सिटी के बस हमन के ओरिएंटल इंस्टीच्यूट की लग्गे उतारि दिहलसि। लिफ्ट से उप्पर जाके काम शुरू भइल। हमार पहिला भाषण अकबर बादशाह के समय के ब्रजभाषा कवि आलम पर भइल। इमरे आलम की कविताई पर कई बरिस से रिसर्च करत बाड़े। जवन जवन सवाल लिखि के हमसे पूछे खातिर धइले रहलें, पुछलें। हम बतवनीं। बारे बजि के बीस मिनट की बस से अतिथि भवन आके दुपहर भोजन खातिर बइठल गइल। उहां सब कुछ अपने परोसे के रहे। बड़हन ट्रे में प्लेट, छुरी, काँटा धऽ के एक लाइन से सजा के धइल पकवानन में से अपनी पसंद के चीजु निकाड़े के रहे। इमरे कहलें कि आप अंडा नाहीं खाइलें, त एह लोग से ओह शाकाहारी भोजन के बारे में पूछे के परी, जवने में अंडा नाही होखे। खूब सजा के राखल पकवान में से सूप आ उसिनल गोभी, घीव में छानल आलू में से हम लिहनीं। समने दूध, दही, मक्खन, चीज आ दस तरह के सलाद सजावल रहल। ओमे अंडा नाहीं रहे। दही के नाव योगर्ट रहल। बंद डिब्बा के उप्पर ओह फल के छापा रहल जवने के सुगंध ओमे मिलावल रहल। एगो डिब्बा पर सादा लिखल रहल। सोयाबीन, मटर, मकई उसीनि के राखल रहल। पत्ता गोभी के महीन काटि के क्रीम में सानल रहल। चोकंदर के लाल लाल टुकड़न पर क्रीम डालल रहल। सेब, केला, स्ट्राबेरी आ कुछ अइसन फल सजावल रहे जवन हम पहिले नाहीं देखले रहनीं। मांस के भांति भांति के बिज्जन रहल। गोल गोल गुलाबी रंग के पान के बड़का पत्ता बराबर पोर्क आ बीफ रहल, माने सूअर के आ गाइ बाछा के। देखले पर चोकंदर के टुकड़ा जइसन लागत रहल। ओह देस में न एगो माछी, न एगो मच्छर। पूरा के पूरा हाल ठंडाघर जइसन। अपने अपने प्लेट में अपने सब कुछ परोसि के एक पाँती में खाड़ होके आगे सरकावत ओहिजा चहुंपल जाव जहां कंप्यूटर पर हर चीज के नाव लिखात रहल। कंपूटर चलावे वाली परी के आँखि भकजोन्ही एइसन भुकभुकाति रहल। इमरे बंघा हमार परिचय करवलें। ऊ हमरे ट्रे के सब समान कंपूटर में दर्ज क के, हमरी ओर एतना होह से तकलसि जइसे हमार बेटी भा छोट बहिन होखे। कहलसि– जाईं, भोजन के सवाद लेईं (प्लीज एंज्वाय)।

हाल में बड़हन बड़हन मेज पर आमने सामने बइठि के खाए के रहे। इमरे बतवलें एह जगह पर आपस में परिचित लोग बइठेलें। कब्बो कब्बो कुछ बतियावेलें। एह बात के धेयान राखल जाला कि दू जन के बाति तिसरका के काने तक न पहुंचे। सैकड़न अदिमी से भरल हाल में आधा लोग के बतियावल ऊहे सुनि पावे जे सुनल चाहे। ई ओही देश में हो सकेला। अपने इहां दु जने बतियावेलंन त सैकड़न के नींद उचटि जाले। छोट–छोट मेज की चारू ओर चारि कुर्सी रहली। ओपर ऊ लोग बइठे जो आपस में परिचित नाही रहे। हम इमरे के साथे अइसने कुर्सी पर बइठनीं। भोजन कइले कि बाद आपन आपन ट्रे उठा के ओह कमरा की ओर बढ़ल गइल जवने में रैक पर बनल जगह में प्लेट सरका के राखल जाव। आगे वाला अदिमी आपन प्लेट सरका के बहरा निकड़ि जां तब पाछे वाला अदिमी आगे बढ़े। केहू केहू से कुछ बोले नाहीं बाकि सबके चेहरा पर एक दुसरे के देखि के मुसुकी झलके। ओह कमरा के उप्पर बड़हन हाल में सोफा लागल रहलें। सबके

समने मेज पर अखबार। लोग चुपचाप बइठि के अखबार पढ़े। काउंटर पर चाय काफी के मशीन। लोग अपनी अपनी रूचि के चीज उठा के अपने सामने राखि के पियत रहे। अखबार पढ़ले के बाद अपने कमरा में आके हम पनरह मिनट लेटि के आराम कइनीं। इमरे बाहर ड्राइंग रूप में बइठि के पढ़त रहलें। दू बजे कि बस से इंस्टीच्यूट जाए खातिर नीचे उतरते अतिथि–भवन के लान के चेरवेली नदी से नहरनिकालि के ओही में मिला दीहल बा। हंस आ बत्तख ओमें किलोल करत रहलें। अदिमी के देखि के किनारे की ओर बढ़ि आवें। लोग डबलरोटी, चाहे कवनो अउर खाए वाली चीजु फेंके त लपकि लें। पेड़ पर से एगो एतना बड़हन रूखी उतरि के लान में से एगो फल उठाके फेर पेड़वे पर चढ़ि गइलि। भारत में लउके वाली रुक्खी से कम से कम तीन गुना बढ़हन आ मोट एगो नेउर अइसन। इमरे से पुछनीं त बतवलें कि एइजा के रुक्खी छोट होले, लाल रंग के। ई बड़की अमेरिका से आइल बाड़ी। देसी (बिलइती) ललकी रुक्खी लोग के भगा के ओह लोगन के फल दाना छोरि के खा डरली सँ। ओह लोगन के प्रजातिए खतम हो गइल। अमेरिका के अदिमियो त ईहे करेलें– कुवैत, इराक, विएतनाम के खतम कइले अब सींरिया आ ईरान पर भिड़ल बानें।

इस्टीच्यूट से लवटि के हमन के रात के भोजन इमरे बंघा के घरे करेके रहल। इमरे हमार रुचि जानेलें। कहलें– 'सड़क का रस्ता से नाहीं चलल जाई। खेतन की बीच से राहि बा। अतिथि–भवन के पाछे चेरवेल नदी पर पुल बनल बा। ओ पार खेत। खेत में खूब हरियर घास लहरात रहल। ओही के उप्पर से आगे बढ़ल गइल।' हम पूछनीं– 'एह खेतन में अनाज नाहीं बोवाला?' ऊ बतवलें– एह इलाका में गाइ पालल जाली। ई सब चरउरी हऽ। एहर दूध आ मांस के बिक्री से लोग के आमदनी होला। आगे बढ़ले पर एगो घोड़ा अइसन जगहि में आठ दस गो गाइ बइठि के पगुरावल रहली। धरती खूब नरम। उप्पर पेड़ के छाँह। पेड़न के बीच में लकड़ी के फाही ठोंकि के घेरा बना दीहल रहल। न एगो मच्छर, न माछी, न अउरी कवनो कीरा–फतिंगा। ओह खेत की चारू ओर मेड़ की जगहि पर पेड़ पालो, झाड़–झंखाड़ फूल फर से भरल बंबरि। इमरे एक लत्तर में से खूब करिया फल के झोंपा तूरि के हमके दिहलें। कहलें– 'खाईं। हम मुहें में डरनी। मीठ लागल। बीया कुंचाइल। पुछनीं त बतवले ब्लैकबेरी हऽ। सब कुछ खाइल जाला। ओही की बगल में लाल टहकार फल छोटकी बइरि एइसन।'

हम अपने देश में रहनीं तब्बे इमरे बंघा आक्सफोर्ड में होखे वाला हमार लगभग कुल कार्यक्रम हमसे बतिया के फाइनल कऽ लिहले रहलें। ओह हिसाब से उनके बँगला में पहुंचि के मोनिका से आ उनके लइकन से मिले के रहल। ओकरे बाद उनके मझिला बेटा निक्लोस की साथे एगो पार्क में जाए के रहल। मोनिका आ उनके तीनों बेटन से हम तीन साल पहिले रोमानिया के स्पैंशिया यूनीवर्सिटी में तीन हफ्ता रहले के दौरान बहुत बेर मिल चुकल रहनीं। सब लोग मिलि के बहुते खुश भइले। हाथ जोरि के 'नमस्ते' कहल लोग। ओही समे इमरे के मोबाइल बाजल। केहू से बतियवले आ हमसे कहलें कि अब चले के चाहीं। निक्लोस अपने साइकिल पर चललें। हम इमरे के साथ साइकिल के पाछे पाछे। कहीं कहीं चढ़ान परे त इमरे साइकिल के ढकेलि के आगे बढ़ावें। उनके घर से चारि घर आगे बाएं घूमल गइल। मोड़ पर एगो बोर्ड लागल रहल। ओह पर लिखल रहल–बेकहल लइकन के स्कूल। अँग्रेजी में अजगुत नाँव पढ़ि के हम पुछनीं– एकर का मतलब। इमरे बतवलें कि अठवां दर्जा पास करत करत जवन लइका मतारी बाप खातिर जीवन के जंजाल बनि जालें से, ओकनी के नउवाँ, दसवाँ दरजा में एही स्कूल में पढ़ावल जाला। मनोविज्ञान के पंडित लोग एइसन लइकन के जाँच करेले आ ओही हिसाब से पढ़ावेलें। ओह लइकन के एतना जतन से राखल जाला, खेलावल कुदावल जाला आ एइसन मोह छोह से पढ़ावल जाला कि आधा से अधिका पढ़ाई, खेल, कारीगरी में बहुत आगे बढ़ि जालें। कुछ अच्छा डाक्टर, वकील, अफसर मास्टर बनेलें। दुसरे देस आ समाज में जवन रेखिया उठान बछेड़ा घर परिवार से लेके समाज आ देस के अपराधी बनि जइतें, ऊ लोग एइसन साज सम्हार आ पढ़ाई लिखाई की बदौलत देस के जिम्मेदार नागरिक बनि के सराहल जालें।

लइकन के खेले वाला समान, झुलुवा, सरकउवा, मछरी, हाथी, घोड़ा के सवारी वाला समान से भरल पार्क में हमके बइठा के इमरे निक्लोस के साइकिल ठढ़िया दिहलें आ उनके ओह सब से खेले के कहले। ओकरे बाद पनरह मिनट में लवटे के कहि के पार्क से बाहर गइलें। जवन महिला हमसे मिले आवे वाली रहली। ऊ अपनी कार से सड़क पर आ गइल रहली। उनके कार पार्क करवा के उनके लेके पार्क में अइलें। उनके विषय में हमके बहुत कुछ बता दिहले रहलें। कच्छ के खोजा मुस्लिम समुदाय के रूही कर्मठ युवती हईं। तमिल युवक से बियाह कइले बाड़ी। दिल्ली में रहेली। पति कंप्यूटर विशेषज्ञ हवें। ओह लोगन के बेटी के नाव इलाही हवे। इलाही छव बरिस के बाड़ी। निक्लोस झूला के निच्चे से धूरि उठाके कपारे पर धरे लगलें। रूही ओह लोग के

फोटो उतारे लगली। कुछ फोटो हमरे आ इमरे के साथ खिंचाइल। रूही भारत बाँगला देश में गरीब जनता के दवाई के जवन व्यवस्था बा ओह पर रिसर्च करत बाड़ी। हम भारत के गाँवन में जनता सरकार के समय में नंगा पाँव डाक्टर वाली व्यवस्था के बारे में बतवनी कि कइसे मोरारजी देसाई के मंत्रिमंडल में स्वास्थ्य मंत्री राजनारायन, चीन में गरीबी से जूझल खेत मजूरन के रोपनी करत में दवाई खियवले के इंतजाम देखि के अइलें आ एइजा लागू कइल चहलें। ओकर का हालि भइल। रूही सुनि के तइमस खाए लगली। एह समय बेटी के साथे लेके आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी के लाइब्रेरी में रिसर्च के काम से आइल बाड़ी। कालिह दिल्ली लौटिहें।

इमरे के घरे बढ़िया बासमती चाउर के भात बनल रहे। मोनिका दही परोसली चेक्का के चेक्का जइसन बलिया देवरिया में जमावल जाला। पुछले पर बतवली कि बजार से ले आइल बाड़ी। आलू सोयाबीन अउर कुछ अजगुत फल के रसगर तरकारी बनवले रहली। खीर बहुत सवदगर। बुझइबे नाहीं कइल कि बिलाइत के भोजन हऽ। अतिथि–भवन के कमरा में लवटले पर साढ़े आठ बजल रहे, माने भारत के रात के एक। ••

■ राप्ती चौराहा, पो० आरोग्य निकेतन, गोरखपुर।

लघुकथा

साँच के आँच

✍ केशव मोहन पाण्डेय

नगीना दिल्ली में आ के मेहनत के महातम जानेले। गाँवे तऽ मेहरारू आ लइका दिन–रात दोकान देखिहें सों आ अपने गाँजा सुरकत रहिहें। पता ना दइब के कवना कृपा से बुद्धि फिरल कि दिल्ली अइले आ समोसा बेंचे लगले।

एगो स्टोव में टाँगे वाला हेंडिल बनवा लेहले बाड़े, ओहपर कराही धऽ लेले आ दोसरा हाथ में एगो बाल्टी में काँच समोसा ले के दुआरे–दुआरे घूमेले। बिहाने उठते दिशा–फराकित के बाद मंडी से आलू–पियाज आ मरिचा ले आवेले। उसिनल आ तइयारी कइला में बेरा उतरे लागेला। पूरा परिवार मिल के मसाला तैयार करेला, समोसा भरेला, चटनी बनावेला आ नगीना के दोकान चल पड़ेला। नौकरी से लौटे वाला लोग जब नगीना के समोसा बेचत देखेला तऽ मुरझाइल चेहरा पर चमक आ जाला। समोसा खातिर जेतना लोग आवेला, ओहसे ढेर उनका चटक चटनी खातिर। रोजो खाये वाला ना समझ पावेला लोग कि कइके चटनी हऽ।

आज नगीना में मन तनी नरम रहे। उनकर रोज के ग्राहक अनिरूध जी पूछले तऽ बतवले कि 'बेटा के तीन दिन से बुखार आवताऽ। दवा कामे नइखे करतऽ। लोग डेरवावता कि डेंगू ना भइल होखे। मन काँपता बाकिर कवना दम पर कवनो बड़का अस्पताल में ले जाईं। समोसा के कमाई तऽ हाथ से मुँहवे ले गइला में ओरा जाला। जवन तनी–मनी बचेला ओहके माई–बाबूजी खातिर गाँवे भेज देनी। देखीं, अब बिहने ले जाएब।'

अनिरूधो के मन दुखा गइल। समोसा लेहले आ चल दिहले। नगीना दोसरा ग्राहक के समोसा देके तनी साँस लेहले तऽ ओहिजा एगो पर्स देखले। उठवले तऽ भरल रहे। दू–दू हजार के पता ना केतना नोट रहे। एक बेर तऽ काँप गइले तले दोसरे छन लागल कि बिहने बेटा के दवाई हो जाई। देखले तऽ उनकर मेहरारू आवत रहली। मेहरारू से कहे के चहले तले हकासल–पिआसल अनिरूध अइले। उनका के देखले से बुझात रहे कि चीरल जाव तऽ देहिं से खूने ना निकली। ऊ पर्सवा उनकरे रहे। जब अपना मेहनत के पइसा पवला पर अनिरूध के खिलल चेहरा के देखले तऽ नगीनो के मन हरषे लागल। उनका मेहरारू के तनी देरे से सही, बाकिर सगरो मामला बुझा गइल। अनिरूध के चल गइला पर नगीना पर तरस खात नजर गड़वली आ आपन कपार पीटत कहली – 'झूठ ना बोल सकत रहल हवऽ? एतना पइसा रहल हऽ, छँवड़ा के दवाई तऽ हो जाइत?'

ओह बेरा नगीना के चमकत चेहरा देखे लायक रहे। ओपर साँच के आँच रहे। ••

एगो बैंकर के डायरी

अजय कुमार

जीवन ऊ ना हऽ जवना के फजीर आ साँझ जगला, नहइला, खइला आ काम पूरा कके फेनु सांझी खा अपना राम मड़ैया में लवट के, खा पी के सुतला ले सिमटल रहेला। जब कुछ नया कथ होखे तब दोसरे रंग आवेला, एके कहानी रोजरोज कहला प नीरस लागेला। नया काम होला तवन नू कहल सुनल जाला अइसहीं रोज जिनिगी के रेल एके पटरी पर चलत–चलत नकिया देले रहे तले खबर मिलल कि हमार पाँचवाँ साला साहेब के बियाह तय हो गइल। मनुआ के माई के मन में लागल लड्डू फूटे आ हमार लागल तरवा चटके कि फेरू हजार के बजार लागी। लगली टोडरमल नियन तखमीना लगावे कि कवन–कवन लत्ता कपड़ा किनाई आ नइहर का का जाई? के का पहिरी? इ छओ बहिन में कपड़ा के आ गहना–गुरिया के बड़ा देखा–हिंसकी चलेला आ ईहे एनिका लोग के बेटा–बेटी में चलेला। अइसे एगो बात अवरू बा कि इ छवो जानी के साइजो एके बा। सभे 'दुबरे–पातरे' बा। 75 किलो से कहू कम नइखे। दिन से रात आ रात से दिन इहे जिकिर में कटे लागल ऑफिस में फोनो करस त एही बारे में। जब तब मिजाज अनकसा जाव।

हमरा खातिर हमरा साला साली लोग के बियाह एगो अजगुत समस्या नियर हमरा सोझा आवेला। अइसन बात नइखे कि हमरा दान–दहेज आ नेग–जोग ना मिले, बलुक सास त चूपे गोड़ लगाई दे देली, केहू जानबो ना करे, बाकिर साला–साली लोग हमरो से पइसवा असूल क लेला लोग। आ अइसन–अइसन घटना घट जाला कि बरिस–बरिस ले ओकर राम कहानी कहात–गवात बीत जाला। जतने बियाह ओतने कहानी। एगो बात पसगैबती के बा कि जवना बियाह में ससुर जी आ उनुका समधी में कुछ खटपट हो जाला तवना के पूरा पूरी सहला के गारंटी रहेला। जइसे कि बड़का साला के बियाह में लइकी के चाचा आ ससुर जी में जवन रेह–तोंह भइल तवन भइबे कइल समधी जी से मारामारी होत होत बाँचल। फेर त साला साहेब के पहिंलौठे बेटा जामल। सभ रगरा खतम। अब त अतना मेल बा कि अपना सहोदरो भाई से ना होई। खैर, दिन धीरे–धीरे नियराइल। 5 दिसम्बर नियराते हमरा मुँह के रंग उड़त गइल आ मनुवा के माई के मुंह चमकत गइल। पूरा महीना के पइसा बाजार में गइल। तवनो प मन ना भरल त क्रेडिट कार्ड से बजार के माल झोराइल तब जा के बजार तनी ढंग के भइल। मन त ना भरल तबो। रात में सुते में रोज बारह बजे ओही रामचरचा में। हम दिन भर बैंक के काम से पस्त होके सूते के फेरा में रहीं आ ऊ सभ लहुरा–पटोकरके सेट सजावे में लागल रहस। हमरा का बुझाव सेट आ रंग–डिजाइन के बारे में? हम त एही से आजु ले इनिकर कवनो लता–कपड़ा ना किनलीं। कीन के ले आवऽ त फेरा–फारी के झंझट लाग जाला। कबो रंग ना मन परी त कबो डिजाइन, लगिहें दोसरा के साड़ी से मिलावे। एहसे निमन कि ल भाई सै के सवा सौ आ जा अपने दोकानदार के माथा चाटे, हमार जीव छोड़ऽ। दोकानदारो कइसन धीरज वाला बाड़े स कि अइसन–अइसन सनिचरा गरह के झेलत बाड़े स। अइसे एह सहर के सभ गहना–कपड़ा वाला दोकानदार इनिका के जानेलन स आ भउजी कहिंहें स। साइते कवनो कपड़ा बाजार से आई जवन एक बेर फेराए ना जाई, रंग खातिर फेराव भा साइज खातिर, दोकानदारन के धीरज आ गहँकी के सेवा के भाव अतना जादे बा कि कई गो मामला में हम बैंक वालन के ओहनी लोग से ट्रेनिंग लेवे के चाहीं।

3 दिसम्बर के दिने साढू साहेब के मय पलिवार दिल्ली से ससुरारी पधारे के रहे। हमरा मनुवा के माई त आठ दिन पहिलहीं से नइहर चल गइल रहली, बिना उनुका ओहिजा के मनेजरी के करी? हम त पहिलहीं से होटल में खात रहलीं, दोसरे करीब डेढ़ बजे फोन मिलल कि साढू साहेब बच्चा–लड़िकन के साथे दिल्ली से आरा आके दोसर गाड़ी से ससुरारी जाए वाला ट्रेन में सवार हो गइले आ दुलरुइ साली टीसने पर छूट

गइली। अब का होई ए दादा? जुग–जबाना खराब बा, अकेला जनाना के नव तरह के खतरा हो सकेला। एक बेरामें फोन कट गइल। तले बैंक में गहँकी कहे लगले कि हमनी के एह गरमी में सउना तानी जा आ इनिकर फोन से उबारे नइखे। बैंक के ग्राहक के एह से कवनो मतलब ना होला कि स्टाफ के निजी समस्यो होला। उहो एगो अदमिये हऽ। जवन होखे । फोन रखलीं। काम संभरलीं तले फिर रिंग पर रिंग होखे लागल। अबकी बड़का साला साहेब रहन, कहलन कि 'जाईं आ कुसुमी के टेसन से डेरा पर लिया जाईं। तब देखल जाई कि का कइल जा सकऽता। लऽ अब देखऽ साला साहेब के का मालूम कि एहिजा बैंक में भदरा बीतता। बैंक में ई ना हो सके कि स्टाफ दू घंटा टेबल भा काउंटर छोड़ के गायब रहस आ सभ चीज सहजे रही। कतिना ग्राहक एही फेर में रहलन कि एगो मोका मिले आ कंप्लेन ठोकीं। कवनो अइसनो मिल जइहें कि फोटो खींच के मेल क दिहें भा व्हाट्सएप क दिहें। हमनी के आला ऑफिसरो एही फेरा में रहेलन कि कवना जाने के सेंकीं। कसंहूँ लंच टाइम में खाए के बहाना मार के बिना खइले टेसन देने मोटरसाइकिल से दनदनाते ६ ावलीं त मन परल कि कुसुमी तक पहुंची कइसे?

पहुँचलीं त देखनी कि टेसन के बहरिया एगो टूल पर एगो लइकी बइठल बिया जुसवा वाला भिरी डेढ़टंगवा पाएंट आ टॉप पेन्हले। हमरा मन में रहे कि कुसुमी साड़ी वाला ड्रेस में होई। ई कवनो दोसर होई। नगिचा जाते देखतानी कि ई कुसुमिए हई दादा। दूगो लइका के मतारी के ई ड्रेस देख के मन अजगुत अचम्भा में पर गइल। का जबाना हो गइल बा? आधा देह उघारे बा आ आपना जाने एडवांस बनता लोग। जुसवा वाला बुझला साला साहेब के चीन्हकार रहे। ना जाने का दो हँस के कुसुमी से बतियावत रहे। हमरा के देखते कुसुमी ठाढ़ भइल आ हाय कहके हाथ हिलावत मुसुकी मरलस। हम पुछलीं कि कइसे छूट गइलू? त कहली कि इनिकर इहे काम बा। एक बेरी असँहीं मेट्रो में अपने चढ़ गइलें आ हमरा के निचहीं छोड़ देले रहन। पारिवारिक मनई के काम होला कि पहिले जनाना, माल–असबाब, लड़िका–फड़िका के ट्रेन में चढ़ावे तब अंत में जा के अपने चढ़े। ई त पहिले अपनहीं फान के चढ़ के भाग गइलन, आ हम एहिजा साढ़े पाँच बजे से ताकतानी। खैर कुसुमी के लिया के टेसन से बहरा निकसलीं। डेरा पर केहू रहे थोड़े? सभे त पहिलहीं से बियाह देखे जा चुकल रहे। बगल में एगो शर्मा जी का घरे लजाते–सकुचाते घुसलीं आ भउजी से कहली कि 'ई हमार साली बाड़ी, तनी नहाइल–धोआइल चाहतारी, हम बैंक से आवतानी।' पहिले भउजी उपरे से नीचे ले कुसुमी के तिकवली, उनुका नजर में शंका आ भरम दुनों भरल रहे कि इ साली कहाँ से उपराज लेहले, जवना के ना कहियो चरचा रहे ना कवनो बात आ हुलियो त अमेरिकने बा। कई बेरा त मुंह से बिना बात कहले पुछले अँखियो से पुछा जाला। हम बिना छव–पांच में परले हब–हब मोटर साइकिल प फान के चढ़लीं आ बैंक में आके बिना लंच लेले अपना सीट पर बिराजमान भ गइलीं। गाहकन के भीड़ जस के तस रहे। एह घड़ी नेटा–पोंछवा से लेके दादा–दादी के उमिर तक के ग्राहकन के भीड़ बैंक में खाता खोले खातिर टूट परल बा। उहो बिना पइसा के। 5 से 18 बरिस तक के लइकन के सरकारी पइसा खते में आई एह से कि दादा–दादी लोग के पेंशन 'जनप्रतिनिधि' लोग बीच में मार जाता, एहसे सरकार पेंशन खाते में आई एकर इंतजाम करे में लागल बिया। जन–प्रतिनिधि लोग के बीच में पेंशन मारे खाती कवनो दोसर उपाय लगावे के परी। बुझाता कि खाता समय प ना खुली त कतना लोग के पराने छूट जाई। एगो 9–10 साल के लइकी काउंटर के लगवे बेहोस होके गिर गइल रहे परसवें, का कइल जाव? बुझला कवनो कानूनची टाइप के ग्राहक फोटो खींच के उपरे भेंज देले रहे। अब का होई ए दादा? कवनो तरह से मिसिरवा से एगो पुर्जा के इंतजाम क के मेल के जबाब देलीं कि ई हमारे पास दरद की दवा के लिए आये थे। दू–चार गो गारियो सहलीं, ओकर पुरान आदते बा। जब जाईला तब गरियावेला। ओह ग्राहक के बोला के सन्तुष्टि पत्र लेवे के परल। रसमलाई चभावे के परल। मेल करेके परल तब माफी मिलल। तब जाके जीव में जीव परल।

अटल पेंशन योजना के आज 10 गो नया एंट्री मारे के रहे। कवनो तरह से उहो पूरा भइल, तबले फिर से फोन बाजे लागल। अबकी बेरा अपने जनक जी रहलन कि कुछ लोग ट्रेन से पटना से खोवा–छेना लेके जाता उनुके संगे कुसुमी के लगा दीहीं, अपने तिलक के बेरा प जरूर चल आईं। हमरा जनक जी में एगो खूबी बा कि जब चार आदमी में उहों के बइठल रहब आ हँसब त सभ जाना के हँसे के परी, जे ना हंसी त गुनाहे बा। बरोबर उनुका मंह पर तिकवत रहीं कि कवना रोखी के मुंह बनवले बाड़े, उहे रोखी के रउवों पालना करीं, ना त काले बा। लगिहें डांटे–बोले। 50–55 बरीस के भाई लोग के कुछ ना समझेलन, लागेलन गारियो देवे। खैर, छोड़ी एह बात के एगो लोनी से भेंट करे के बहने डेरा के रोख कइलीं। कुसुमी के हाली देना टेसन लिया जाए के फेरा में रहलीं। त भउजी भीरी ऊ दिल्ली के ढेर खानी बखान लरछा के लरछा बिगे में लागल रहे।

भोजपुरी त बोलते ना रहे। खलिसा हिंदी–अंग्रेजी झार के धाक जमवले रहे। एने भउजी त अंग्रेजी में अपने एम0ए0 फर्स्ट क्लास रहली। मुस्कियाते ओकर सभ बात सुनत रहली जइसे उनुका कुछ बुझाते नइखे। मजा लेत रहली। ओने झरले रहे कुसुमी– हमारी दिल्ली में तो ऐसे होता है, वैसे होता है। दिल्ली वाला लोग के एगो मानल बेमारी बा कि ऊ लोग ई मान के चलेला कि उनुका लोग के सिवा एह देश के बाकी लोग के ना कुछ बुझाला ना आवेला, ना ओह से नीमन कवनो जगह बा। जवन होखे हमहीं लजा गइलीं, का करीं? जल्दी–जल्दी ओके लेके टेसन भगलीं। टिकट के कवनों झंझट ना रहे। जे पटना से आवता से समझी आपन लोग। चट देना गाड़ी सिंगल स्टैंड प ठाढ़ कके दउरीये पर 2 नं. प्लेटफार्म प भगलीं जा, बुझाय कवनो आजाद पंछी घर से दिल्ली भागल जात होखस। हुलियो उहे रहे। चट दे ट्रेन आइल आ रोकते कुसुमी उतरेवाला लोग के बिना कवनो मोका देले फानके धकियाके चढ़ गइल आ आपन भाई–भतीजा लोग भीरी पहुँच गइल जइसे गिरोह से भटकल जीव फिर से अपना गिरोह में मिल जाव। एने गाड़ी चलल, हम राहत के साँस लेनीं।

प्लेटफार्म से बहरा निकसलीं त गाड़ी में सीकड़–ताला लाग गइल रहे। एहिजा टेसन से रोजीना गाड़ी चोरी होली सन। त जी.आर.पी. एगो नया फार्मूला निकललस कि जे गाड़ी टेसन के सामने ठाढ़ करी तवना में ताला मार द। चोरियो ना होई आ कुछ भेंटाइयो जाई। गाड़ी भीरी एगो होमगार्ड मँडरात रहे। पहुँचते कहलस कि जाईं सर, बड़ा साहेब से मिल आईं। अब करीं त का करीं? जी.आर.पी. में गइलीं त मुंशीजी पान कचरत पांच गो अंगुरी देखवले (पान–पत्ती के माँग कइले)। हम पुछलीं कि रसीद मिली नूँ? तब मुंशी जी कहले कि ज्यादा तेज बनिएगा तब फाइन दसो हजार हो सकता है। काहे नो पार्किंग में गाड़ी खड़ा किये थे? अब का करीं? जनक जी के फोन लगवलीं। तुरंते बड़ा साहेब के फोन प कॉल आइल कि "आरे छोड़ दीहीं, दामाद है।" तब बड़ा साहेब कहले कि, "पहिले नू कहेला। आज काल के लइकन के बात करे में लाज लागता। जा खोल द हो मुरारी।" हम सकपकाइल रहीं। हमार पहचान पुलिस–पदाधिकारी के दामाद के रूप में स्थापित हो चुकल रहे। एहिजा बैंकर के कवन गिनती बा। बनिया के नोकरी बा। मुँह चोरवले बहरी अइलीं त कथित मुरारी जी कहले कि साहेब कुछ चाह–पानियो के देहब? तब का करीं? लाजे–लेहाजे पचीस रोपेया देलीं। तब गाड़ी के ताला खुलल, चललीं बैंक। भर दिन चाह–बिस्कुट प कटल। एहनी जाना के का मालूम कि हमरा प का बीतऽता?

4 दिसम्बर, भोरहरिये डेरीफारम से 60 लीटर दूध जनक जी के जीप में लदवावे के रहे। साढ़े तीन बजे डेरी के गोदाम प पहुंचली। त जीप पहिलहीं से लागल रहे। ओतना सबेरे कवनो मजूरा रहले ना रहे। क्रेट के क्रैट दूध हमरा ड्राईवर के संगे मिल के जीप में लादे के परल। अपना घरे हम खरो के काम नइखी कइले। एहिजा सभ करेके परल। हांफ कबर गइल। जल्दी से डेरा प पहुंचलीं। सोंचलीं कि एक घंटा त सूत लिहल जाव। सभ देह बथत बा। सर्किल हेड फोन पर टारगेट पूरा ना कइला प उल्टा पोस्टिंग के धमकी देत रहले ताले एके बेरा हम बेड सहित कांप गइली। उठतानी त सवा नौ बजत रहे। बगली में ब्रश–पेस्ट लेले बैंक भगलीं कि चल हे मन सभ ओहिजे होई। तबले जामे में फोन प फोन आवे लागल, का करीं? राम–राम क के नौ चालीस प बैंक पहुंचलीं। हाली–हाली ब्रश कके जल–स्पर्श स्नान कके (माथा में पानी लगा के) बाल झाड़ के स्प्रे मार के सीट पर हाजिर। एह घरी एह दिसम्बर के महीना में नहाये के कवनो फायदा नइखे। पानी आ देह दूनों के डबल बर्बादी। स्प्रे मार के चकाचक। के पूछता कि नहइले बा आ के बे–नहइले बा? फेनु फोन प फोन आवे लागल, 'फोन काहे नइखीं उठावत?' नया करेंसी बीस–पचीस हजार के लेले आइब। आ समय प पहुँच जाइब, ई ना कि सुसुमी के बियाह लेखा एगारह बजे पहुँचब। एही आदेश के साथ फोन कटल। बड़का साला साहेब रहले। दिन भर कपार कपार भुंकवावत–भुंकवावत बीतल।

आजो चाहे बिस्कुट प बीतित बाकी आशु के जनम दिन के बहने कुछ मिठाई–नास्ता मिलल बैंक समय में पांच बजे जीजा के फोन कइलीं कि चलबऽ नु? त कहले कि हम त तइयार बानी। त कहलीं कि हमरा डेरा प जुटीं। जुटले, कहला के देरी रहे। ससुरारी केकरा काटेला? नीमन चाह नास्ता मिठाई एह दसवां गरह लोग के परिका देला। जब देखीं तब जुटले रहेलन। खैर प्लान भइल कि ट्रेन से चलल जाई। मोटरसाइकिल से टेसन खातिर रवाना होतहीं बरखा परे लागल। अवरू ना त अउरू बनल। एनियो आजे बरखे के बा, टेसन जाते आठ बजल। पता लागल कि नव बजे के पहिले कवनो ट्रेने नइखे। बनल बीध अब माधो के! तय भइल कि मोटर साइकिले से नाप दिहल जाव, तीस–पैंतीस कि.मी. त बड़ले बा। अबहीं 2 कि.मी. ले गइल होखब जा कि तेल ओरा गइल। बाडी हिलवलीं–डोलवलीं, टंकी के ढकना खोलके फूंक मरलीं। तेल रहो तब नू चालू होखे। कवनो आदमी ह कि बिना खइले–पियले रपेटाई आ लाजे कुछ बोलबो ना करी। खैर, गाड़ी

ठेलत–ठेलत दिसम्बर में पसेना चुए लागल। जीजो फेर में परले, कहले कि द हम कुछ दूर ले ठेलीं त लाजे ना देलीं कि का कहिहें? साला प हमार मन तीली–तीली जरत रहे। गाड़ी ले जाई। दहेजिए हऽ त का भइल? हमरा से बेसी हमार गाड़ी त उहे चलावला, हवे खेला, बाकी तेल ओराई भा बिगड़ी त कहीं ना कुछऊ, मनँगवें ठाढ़ क दी। राम–सीत कुछ बोलबे ना करी। जानस जौ आ जानस जाँता। तेल भराइल त कसहूँ आगा के जतरा भइल। जाड़ो लागत रहे। हवा–पानी एके साथे रहे। कसहूँ बूनी–पानी में भींजत जब जनकपुर पहुँचलीं जा त साढ़े नौ बजत रहे। तिलक के अब तइयारिये रहे। राम ईज्जत बँचवले। लड़िका आपन आसन प आ चुकल रहे– 'राम जी के आसन रिखी के दुआर।' हमार पहुँचते सभे हरियरा गइल। लगलीं एक ओरा बइठे त जनक जी मुसुकी मार के कहले, ''ओने कहाँ, हेने मंडप में आई! नया करैंसी के पुलिंदा हमरा हाथ में देखते सभे गदगदा गइल। आ हमार मनुआ के माई त हद से जादे गदगदा गइली। अपना सभ बहिन लोग पर गर्व के एगो बरियार झटहा मरली आ तिलक के सभ रसम चालू हो गइल। ••

आनन्द नगर, मोतीझली,
पिपरहिया रोड, तिवारी जी के हाता, आरा, भोजपुर

लघुकथा

आस्था

कन्हैया पाण्डेय

साँच पूछीं त असो रामदासो के मन आग–पाछ में परल रहें, ऊ अभी तइ ना करि पवले रहली, कि छठि के व्रत करीं कि छोड़ीं। पूरा घर बिमारी से पटरा परल रहे, आखिर केकरा सहयोग से ब्रत के तेयारी होइत? साफ–सफाई, लीपल–पोतल, फल–फूल–परसादी से लेके पकवला आ घाटे अइला–गइला तक, के करित?

गिनती के दिन निअरात देर ना लागे। जब तीन–चार दिन बाकी रहे, रामदासी के मन बदले लागल। छने में हाँ, छने में ना। अइसना स्थिति में जब उनकर मरद पांडे जी देखले तब टोकि दिहलें– "का बेमतलब चिन्ता–फिकिर में परल बाडू। कइलू नूँ एतना दिन ब्रत–तेवहार। आपन देहिये ना देखऽ, कइसन सूखि के काँट नीयर भइल बाडू?"

रमदासी अनकुसइली– "एतना उमिर भइल, मास्टर कहात बानी बाकिर ज्ञान छुइयो के ना भइल, बेमतलब, देवता–पितर के बारे में बकर–बकर बोलत रहीलें। तनी देवता पितर के डरो होला। छठि के ब्रत कहीं छोड़ के कइल जाला? एही देवता–पितर के किरिपा से नूं सब लोग सलामत बा।"

"अरे, हम त तहार, खराब तबियत देखि के कहनी हँ। बे खइले–पिअले चौबीस घण्टा रहे के परी," पांड़े जी आपन सफाई दिहले।

हमरा नूँ बे खइले–पियले रहे के बा। रउवाँ का घबड़ात बानी।

छोडऽ भाई, हम आपन बाति वापस लेत बानी। एतना कहत पांड़े जी दुअरा जाइ के चउकी पर बइठि के सुर्ती मले लगलें। रामदासो बुदबुदात कहति रहली– "बिनु बुद्धि जरो विद्या।"

ब्रतो के दिन निअरा गइल। रामदासी ब्रत के दिने का जाने कब रतिगरे उठि के घर–आंगन गोबर से तीपि–पोति के फरछिन कइ दे रहली। बेमारी ना जाने कहवां भागि गइल रहे। बिहान भइला जब तिवराइन चाची घर–आगन लिपल–पोतल देखली त अनासो उनुका मुंह से निकलि गइल– "अब ब्रत होई का मस्टराइन?"

– होई काहें ना चाची! ब्रतो–तेवहार छोड़ल जाला?

– पांड़े जी न मना करत रहुअन। – तिवराइन कहली।

– उहाँ के बाति के का लेले बानीं। बुझाए–ओझाए के कुछ ना। अकर–बकर बोलत रहीलें।

– उनहूं के गल्ती थोरे बा। आखिर केकरा लागी ब्रत–तेवहार करबि? लोग ना लरिका चलऽ दुअरिका" – तिवराइन व्यंग कइली।

– अरे, ई का कहत बानी बहिन! अभी खूंथ लेखा हमार सवाँगे खाड़ बा। आ हमरा देवर लोग के लरिका हमार ना हवें स? पूते–भतार खातिर नूं ब्रत गइल जाला। मानऽ त देवता ना त पत्थर।

तिवराइन चाची के काटऽ त खून ना। पछतात मन अपना घरे चलि दिहली। ••

2ए/298 आवास विकास कालोनी, हरपुर, बलिया।

व्यंग्य

"ले पायल, ले झुमका"

✍ गंगा प्रसाद 'अरुण'

आज सेम्हू सेठ तनी रंग में रहले। आ रंग में होखस काहे ना, एह 'ड्राई' परिवेश में पाव भर के पाउच जे मिल गइल रहे मुफुते में। अइसे त अवसर गमी के रहे, बाकिर एह तरंग में चढ़ गइल रहे। उनका कपारे आपन फेरी–भँवरी के अझुरा। पीतर–गिल्लट के गहना–गुरिया से लेके सिंगार–पटार आ घर–गिरहथी के छोट–मोट जिनिस अपना छोट बकसा में सरिआ के, जवन कि उनकर 'शो–केस' रहे। सीके–सीक हो जास बेचारे फेरी लगावत– एह गली से ओह गली भरमत–चिचिआत– "ले पायल, ले झुमुका, ले छूँछी–नकबुली, बिछिया–अंगूठी, नोहकटनी!" फेफरी पर जात रहे मुँह में अपना चीझ–बतुस के विज्ञापन करत, उनका बोलत–बोलत गरमी–घाम आ ओह अनचिन्ह–अनजान इलाका में। गरम हो जात रहे उनकर माथा राह–बाट, खेते–खरिहानी जात लोगन के बेमसरफ के पूछ–ताछ से– "का बेचत बाड़े बुढ़वा?" – ओकरा लेबे के होखे भा ना, देखावऽ ओह लोगन के। घंटन हील–हुज्जत आ लेबे–देबे के 'पाई' के सामान ना। अब बताईं, कइसे गुजारा होई? – आरे भाई, गली सरेह में चिचिआत – फेंकरत अइसन मेहररूई साज–सिंगार के सामान बेचे में त ई सब सहहीं के होई, उहो अनजान–अनचिन्हार इलाका में! नीके नू बा ओह इलाका में गइला से, जहवाँ बच्चा चोर भा चोटीकटवा बूझ के जानो पर आफत।

ई त सेम्हू सेठ के आपन बेचारगी रहे, बाकिर आज–काल्ह साहित्तो (साहित्यो) के गली–कूचा में कतने–कतने 'फेरहा' लोग आपन पीतर–गिल्लट के अंगराहित रचना के बड़ग्गी करत–करवावत एने–ओने के गिरोहबंदी में बँवड़ेरा अस उड़ियात–चकरिआत दहिन–बाँव के जांत–चकरी में नीमन–नीमन लोगन के दरत–पीसत। के पूछेला जी ओह लोगन के, जे कवनो गिरोह के शातिर–सहयोगी नइखन। अब अपने जमपुर के देखीं ना, उहे दर्जन–दू दर्जन महान कवि–कवियाल के सुलभ आलय में दरसन! कुछ खास पुरनका लोगन में त शीलो–संस्कार, नएका सब त फतिंगी–तिलंगी अस अनका बाँस–बल्ली, रसरी–डोरी के सहारे। – तू हमरा के गुरू मान के चलऽ, हम तोरा के अरजुन अस महान बना देब, भलहीं कवनो एकलव्य के अंगूठे काटे के परे। अइसना में कतने 'गुनगर' लोग बन जाता शूरमा भोपाली। कतने कतने लोग अपना करनी–करतूत से ऊँच पीढ़ा पर! कवनो बिखिआइल कवि नीमने जोड़ले बाड़न–

" रे चेलवा, ई पइसा धर, हमरा के सम्मानित कर!
कुछ त चेलो के लागेला, तब्बे नू किस्मत जागेला
गुरु के सेवा मेवा देला, हमहूँ चरीं, तेहूँ चर!
बतिया जाने ना ई केहू, पकड़े के बा बड़का रेहू,
हम त जाल बिछवले बानीं, तें बस आजो मोका पर!
तोरो के हम मोका देहब, जहाँ चलब, संगवा ले लेहब,
हमर बड़ाई करते रहिहे, तें सहबोलवा, हमहूँ बर!
जिन हमरा से निकले पइहें, पत्ता काटब जब अगरइहें,
दू नंबर के खेल–तमाशा, तनिको मत केहू से डर!
रे चेलवा, ई पइसा धर, हमरा के सम्मानित कर!"

अब भाइएजी के लीं ना, कतने बेर उनकर अभिनन्दन के बवंडर उठल कालू राम आ भोपालू राम के मनसा से। बाकिर कुल्हि अभिनन्दन के उडंत मछरी केहू–केहू फँसा–हथिया लिहल अपना जाल–पैरवी आ गुरु–किरपा से, ना–ना, गुरु घंटालन के किरपा से। कुछुओ नइखे त फलाना सभा–सोसाइटी–सम्मेलन के वर्तमान, पूर्व–अभूतपूर्व परधान के तामझाम–टिटिम्हा काफी बा कवनो अभिनंदन–सम्मान–पुरस्कार हड़पे–हबेखे खातिर। सोसाइटी के कुछ मत करीं काम आ दबले–चँपले रहीं 5–10 साल तक पद–प्रतिष्ठा अपना काँखी तर जइसे रावन के कबो बाली रखले रहे। फिर पटिया लीं कवनो अन्तर्राष्ट्रीय फेम के कवनो बादी–बिवादी फजिहती 'फादर' के जेकर हाथ बहुते लम्मा होखे। फिर जोड़त ना रहीं अपना पुरबज के बड़का–बड़का साहित्यिक–सांस्कृतिक–राजनीतिक उपलब्धि से। रउरा के देख के लोग बूझिए जाई कि कवना सइला के होई ऊ लोग।

अइसन नइखे कि भाइयो जी सम्मानित–अभिनंदित नइखीं भइल। दू–दू गो अभिनन्दन–सम्मान–पत्र त उहाँ के सार्वजनिक भइले बा– नीक–जबून, गारी–गुप्ता, चेतवनी–धिरवनी आ नान्ह–निमकहराम के संबोधन–उद्बोधन से। कुछ लोग त भाई जी के सम्मानिक करवावे में अहम भूमिका निभवले रहे, जेकरा खातिर ओह लोगन के प्रति दिलउर आभार। ऊ सब लोकल–स्तर पर लोकाइल बूझ रहल बा जुटिया–गोटिया के कि हमहीं सब कुछ। बाकिर कहे वाला त कहबे करी–

"सोना–चानी रूप के, चलनी हँसली सूप के,
बेंग अभागा का जाने, दुनिया माने कूप के।"

आ आजु–काल्हु त एगो फैशन, ना–ना पैशन, हो गइल बा अपने सेवा–खरचे आपन अभिनन्दन–स्मृति–ग्रंथ छपवावल–निकलवावल अपना जीयते! अइसने काम कबो मुगल बादशाह लोग करत रहे। अपना जियते जिनिगी में आपन कबुरगाह–मकबरा बनवा के। फिर अपना लोगन में पूछ, लगे पइसा, त परहेज कइसा! एह चँवर में अनेकानेक चतुर–चल्हाँक–चर्चित–चिक्कन–चुलबुल चेहरा चमकत–चहकत चलेला। आउर ना त पंचपेजिया–अठपेजिया पंपलेट–पंचांग के प्रकाशन– "हम त हतना महाग्रंथ के रचयिता– हमरा सोझा सूर–तुसली के का अवकात!

फिर बुढ़ारी के बिआह आ बुढ़ारी में कवि बने के सवख के का कहाव? हँ, पहिलका दुर्घटना में पड़ोसिया रहँचटन के सुतार आ दोसरका में साँझि के चाह–पानी के झंझट से फुरसताह परिवार। घरहूँ रह के बुढ़ऊ का करिहें? साँझ के कच–कच से राहत। ना त, घरहीं के लोगन के नू उनकर अनगराहित कविता घोंटे के परित– "जयहिन्द हिन्द, जयहिन्द हिन्द, सबके आँख में मोतियाबिंद!" फिर कुंजनजी त लिखिये गइल बाड़न–

"नोचा–नोची, टाँग बझउअल, कुर्सी अस कुकुहार
ई कुल्ह से खाली नइखे सुरसतियो के दरबार!"

सुनत–गुनत बानी नूं सुरसती मइया! देखीं अपना दिहल गुन–गिहिथान के दुरदसा!! ••

21-बी, रोड नं०-1, जेन-4, बिरसानगर, जमशेदपुर-19

लघु–कथा

काँदो में कमल...

राजगुप्त

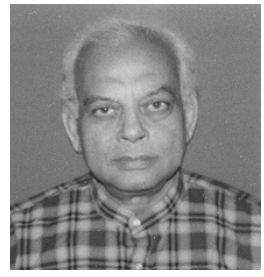

बीतल बरिस आठ नवम्बर दू हजार सोरह के बाति ह। बितला राति खां नोटबंदी के एलान भइल रहे। अबले चलत आइल नोट एगो जमाना बाद अचकले में अलबत्त हो गइल। का अमीर का गरीब सभे भकुआ गइल? अइसन आह निकलल कि सभका मुँह के नक्शे बदलि गइल। नोटबंदी का पहाड़ का तरे सभे जताइल अफनाइल रहे। सभकर बोलती बन्न। केहू का मुँह से बकार ना उपटल। निकलल त खाली इहे निकलल कि– हाय! इ का हो गइल?

पानी बिजुली खातिर छन–छन हड़ताल चक्का जाम करे वाला लोग के हाथ में मेहदी आ मुँह पर सुलेसन सटा गइल। इन्दिरा गान्धी का ऊपर गोली चलल त देश में केतना उपद्रव भइल रहे। लोगन के नाकन चना चबाये के परल रहे। माने के पड़ी कि एह आदमी के बानी में केतना तेज बा कि अचरज अनहोनी के बादो सभे दम साधि लीहल। एगो खरिको ना डोलल। देश हित में सज्जी दुःख आदमी हँसी–खुशी सहि लीहल।

मार्च दू हजार सतरह के बाति ह। फगुआ के तिहुआर रहे। अउरी साल के अपेक्षा एह साल बिक्री बहुते कम रहे। आन्ही उठे आ धूरि ना उड़े, इहो भला कबो हो सकेला? समय के मारि से मन मारि के दोकान पर बइठल रहलीं। अतने में एगो चिन्हार बूढ़ि गहँकीं अइली। आवते कहली, 'रंग अबीर के दिन बा, हमेसा धोवे फींचे वाली एगो साड़ी चाहीं।' हम सवचलीं, 'केतना दाम लायक देखा दीं?' बूढ़ी बोलली, 'पांच सइ का ऊपर एकदम एकदम्म ना चाहीं।' हम मरुआइल कहली– 'कबहीं रउरा तन पर हजार का नीचे साड़ी ना चढ़ल, ना किनलीं। आजु कवना जरले अइसन बाति करऽतानी, उहो बरिस–बरिस के तिहुआर होली में।'

बूढ़ी हमरी बाति के जबाब देत कहली, "पहिले के बाति कुछ अवरी रहल हऽ आजु के बाति कुछ अउर बा। आजु–काल्हु हाथ बहुते सकेत बा।" हम चहकत कहली– 'तिहुआर के खुशी में हाथ सकेत के बाति, पचत नइखे।'

तोहके जना दीं बबुआ! रोज रोज नियमे बदलला के कारन नवम्बर से लेके दिसम्बर तकले, रकत के लोर रोवली। मरदन के आंखि में धूरि झोंकि के जवन चोरिका अकाज–सुकाज खातिर बिटोरले रहलीं। अन्हारा के पइसा बैंक में जाके अंजोर हो गइल। बैंक में खरची के पइसा बदले खातिर एड़ी के पसेना चोटी तकले चहुँपि गइल। मन में धुकधुकी लेसले रहे कि काल्हु का होई? बाकिर पता ना देहि में कवन जोर समाइल रहे कि सज्जी सांसति में सुख लउके। सज्जी मेहनत पर पानी फिरला के बादो कुछ बुझाइल ना। तबसे हाथ सकेत बा।

हम लमहर सांसि लेत कहलीं, 'एतना दिकदारी परेशानी के बादो केकरा के वोट दिहलीं?'

हमार बाति सुनि बूढ़ी बिहँसत दूनू हथेली जोड़ि के नरियल बनावत अंगुरी फइला दिहली याने कमल। ''बेचारा के दम में खम बा। देशहित में बहुते बढ़िया बाति बतिआवता। बहुते सांसति सहि के ओके वोट देले बानी। दू दिन बाद सुनिहऽ, कानों में.....।'' (चौदह तारीख के विधायक के वोट के गिनती आ सोरह के होली रहे) ••

राज साड़ी घर, चौक कटरा, बलिया

कवियन के 'अंदाजे–बयाँ : जुदा–जुदा'

शशि प्रेमदेव

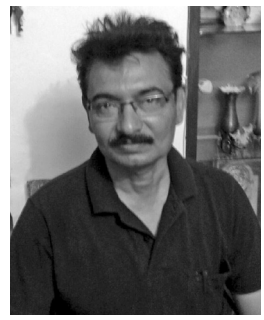

उहाँ के एगो मझोला कद कऽ कस्बाई गीतकार हउवीं। एक्के जिला–जिवार के बासिन्दा भइला के चलते यदा–कदा उहाँ से पाला पड़ते रहेला। ओइसे तऽ उहाँ क' असली नाँव कुछु अउर हऽ बाकिर कनफुसकी करे वाली जमात उनुका के 'कवियन क केजरीवाल' कहि–कहि के खूबे मजा लेले! कार्यक्रम चाहे छोटहन होखे भा बड़हन, महाशय जइसहीं आपन काव्य–पाठ शुरू करेलन्, उनुकरा कंठ में मौजूद कवनो सुकुरचाली चीज अपना औकात पर उतर आवेले। नतीजतन हर चार छः लाइन का बाद श्रोतागण के उहाँ के गीत–कविता का साथे–साथ उहाँ चार–छः गो खाँसिओ बोनस का रूप में बरदास करे के पड़ेला! उहाँ के कुछ ईर्ष्यालु समकालीन मुस्की काटि–काटि के एकरा के ध्यान खींचे कऽ उहाँ के टैक्टिक्स कहेलन्। बहरहाल, ओह गीतकार महोदय के एतना तऽ बुझाहीं के चाहीं कि माइक पर खोंखला–खँखरला से हर आदमी कवनो स्टेट के मुख्यमंत्री ना हो सकेला... ढेर लोग का किस्मत में तऽ कवनो डिस्पेंसरी भा अस्पताल में भर्तिए भइल बदा होला।

अइसने कवि–गोष्ठी में एगो अउर सज्जन 'अपना के कवि मनवा के मानब....' का संकल्प का साथे अवतरित होत रहेलन। ऊपर से देखला में ऊ भलहीं 'वामन अवतार' लागत होखस् बाकिर सुर के बुलंदी का लिहाज से सुरसा के खर–खनदान क बुझालन्! जनाब जइसहीं आपन जोरुवा–बटोरुवा गीत अपनी कर्ण–विदारक शैली में पढ़ल चालू करेलन, सभागार क' जर्रा–जर्रा कान में ठूँसे खातिर रूई खोजे लागेला। उनुकर एगो अउर खासियत हऽ; ऊ जब अपना रौ में चिघरत–चिचियात खा आपन दूनो हाथ तलवार–नियर भाँजे लागेलन् तऽ उनुकरा अगल–बगल में विराजमान लोगन् क सिट्टी–पिट्टी गुम हो जाले आ ऊ लोग आपन–आपन थोबड़ा बचावे कऽ जतन करे लागेला! कई जने तऽ ओहिजे संकल्प ले लेलन् कि आइन्दा बिना हेलमेट पहिरले वाणी के ओह् वाणासुर के आजू–बाजू भुलाइयो के नइखे बइठे के!

जब प्रसंग छिड़िए गइल बा तऽ काहें ना दू–चार गो आउर मित्र कवियन–शायरन के 'अंदाजे–बयां' के चर्चा कऽ लिहल जाव। ओ' मशहूरो–मारुफ शायर साहब के तऽ आप लोग जानते बानीं जिनकर अकेले क' फीस एतना हउवे कि ओतना में एगो पूरा कस्बाई कवि–सम्मेलन करावल जा सकेला। जबले उहाँ के बारी नइखे आइल तबले तऽ मंच पर उहाँ कऽ नार्मल इंसान जइसन विराजमान रहेलीं बाकिर जइसहीं उनुकर नाँव (तमाम उपाधि आ अलंकरण का साथे) पुकारल जाला यानी दावते–सुखन दिहल जाला, उहाँ कऽ मसालेदार हरकत चालू हो जाली सऽ! ग़ज़ल क' 'मतला' तऽ उहाँ कऽ श्रोतागण से मुखातिब होके पढ़ेलीं बाकिर बकिआ अशआर ऊपर अस्मान में बइठल अपना अदृश्य, अलौकिक सामेइन के सुनावे पर आमादा हो जालीं। आजु ले ई भेद ना खुल पावल कि उनुकर निगाह धरती से उछड़ि के अचानके अन्तरिक्ष में काहें अझुरा जाले! हो सकेला 'अंगूर के बेटी क' असर होखे भा उनुके अइसन जनात होखे कि नीचे बइठल श्रोतागण उनका उच्चस्तरीय शायरी के अरथ लगावे भा मूल्याकन में सक्षम नइखे। शायद एही कारन अपना हर दूसरा मिसरा पऽ दायाँ बाजू ऊपर उठा के ऊहाँ के अपना बाँयीं आँखि के एह् अंदाज में कस के दबावेलीं जइसे कि अन्तरिक्ष में तिकवत् कवनो हूर के आँखि मारत होखीं! उहाँ के शायरी सुनि के जतना मजा आवेला, उनुकर सतरंगी मुख–मुद्रा क' अवलोकनो कइला में ओतने मजा आवेला। एहीं 'कनखीमार' उस्ताद शायद महोदय का पीछे–पीछे, दुमछल्ला–नियर लटकल उनुकर एगो चाचानुमा चेलो आवेल्न। ओह् चेला राम के कलाम पढ़त देखि के कवनो कलन्दर क' उछड़त–कूदत बानर क' खेयाल आ जाला। पुरान सुनवइया लोग बतावेला कि एह किसिम के पइसा वसूल नजारा मुशायरन में बहुत पहिले से देखे के मिल रहल बाटे। अब तऽ टी0आर0पी0 क' जमाना बा, लिहाजा ए' घरी कवि–सम्मेलनों में एह् टाइप के ड्रामाबाज कवियन आ कवियित्रियन के खूबे पूछ आ डिमाण्ड बा! अइसना लोगन के रचना भलहीं दमदार ना होखे, प्रस्तुति हर एंगल से दर्शनीय होले! आखिर सर्कस आ नौटंकी से लगभग महरूम एह् दौर के लोगन का पाले अइसन मसखरन का अलावे कवनो दोसर विकल्पो त' नइखे! झोला–छाप बुद्धिजीवी लाख अइसना रचनाकारन के मंच क' 'आइटम ब्वाय' भा 'आयटम गर्ल' कहि–कहि के मुँह बिराओ बाकिर एह लोगन् के प्रचंड पापुलैरिटी पर केहू सवालिया निशान ना खड़ा कर सके!

एही बतकही में हमरा के ओह् मृगनयनी मोहतरमो क खेयाल आवऽ ता जिनकर डेढ़–इश्किया शायरी दसन बरिस से– मेंहदी, बिस्तर, दिल, जुदाई, आँसू, चूड़ी, महावर जइसन दर्जन भर शब्दन के दायरा में चक्कर काटि रहल बाटे! अइसहूँ ढेर लोग उनुका के सुने ना, आँखि चिआर–चिआर के निहारहीं जाला। एह् प्रजाति के शायरा आ कवियत्री लोग क' सबसे उल्लेखनीय खासियत ईहे होला कि ऊ लोग का पाले अपना लटका–झटका से कवनो

सीनियरो सिटीजन के सीटीबाज किशोर में तब्दील कर देबे के सामरथ होला! ओह् लोग के एही लखटकविया, गारंटीशुदा हुनर का चलते आयोजकगण ओह् लोग के मुँहमाँगा रेट प' बोलावे में गर्व क' अनुभव करेला।

.... आरे देखीं ना! हऊ गँवई कविवर के तऽ हम भुलाते रहलं हँ। ऊँहें कऽ जे अपना के 'भोजपुरी शिरोमणि' कहत फिरेलीं। पहिला बेर जब हम उहाँ के कविता–पाठ करत देखलीं तऽ अइसन बुझाइल जइंसे कवनो 'कंट्री मेड गब्बर' सीधा–सादा रामगढ़ वालन् के दाँत पीस–पीस के गरिया रहल होखे.... उहाँ क हूरपेटे क अभिनय एतना जिअतार होला कि सुकुआर लरिका देख लेव तऽ डरे पाँयटे में झाड़ा फिर देव!

हम वीर रस के दू–चार गो अइसनो कवि लोग के जानत बानीं जेकरा पाले अपना दहाड़त–चिघ्घाड़त कविता से शीत लहरिओ का मौसम में सभागार क' टेम्परेचर बढ़ावे क; हुनर सलाहियत बाटे। हमरा के इहो अन्दरूनी जानकारी बाटे कि शब्दन का बोफोर्स तोप से चीन आ पाकिस्तान के छाती छलनी कर देबे क दम भरे वाला अइसना परम पराक्रमी कविगण के अगर हाथ में लाठी आ लालटेन थमा के रात खा कवनो खेत अंगोरे क जिम्मेदारी दे दिहल जाव तऽ एह् लोगन का छाती में अचानके ओइसने तेज दरद उठे लागी जइसन दरद गिरफ्तारी क' नौबत आवते कवनो शातिर नेता, भ्रष्ट नौकरशाह भा रसूखदार अपराधी कासीना में उभरि आवेला!

बहरहाल, मंच चाहे कवि–सम्मेलन के होखे भा मुशायरा कऽ, श्रोतागण के हलक में हाथ घुसेड़ के बरिआरी दाद आ वाह–वाही बाहर खींच लेबे पर खतरनाक ढंग से आमादा रचनाकारन् के संख्या एह घरी तेजी से बढ़ि रहल बा। एह् टाइप के दबंग कवि आ शायर अइसना डरावना अंदाज में थपरी बजावे क' फर्मान जारी करेलन् जइसे कवनो टॉप टेन गुण्डा तमंचा सटा के रँगदारी माँगत होखे! एकरा से उलट, मंच पर एगो–दूगो अइसनो भिखारी–टाइप दँतचिआर रचनाकार भेंटा जइहें जे गिड़गिड़ा–गिड़गिड़ा के दाद क याचना करे में एतना माहिर होखेलन कि पथरोदिल श्रोता मोहा के उनुका कटोरा में दू–चार गो थपरी डालिए देला!

.... एहू टाइप के रचनाकारन के फेहरिस्त बड़ा लमहर बाटे बाकिर लेखकी अनुशासन क लिहाज करत अब एह् प्रसंग के एहिजे खतम करे के इजाजत चाहऽतानीं।

राम–राम फेर कबो...!!! ••

अंग्रेजी प्रवक्ता (अँग्रेजी) कुँ.सि.इ.का., बलिया

गजल

हरेश्वर राय

आँख में रात बहुते सयान हो गइल।
हमार असरे में जिनिगी जियान हो गइल।

दिल के दरिया में दर्दे के पानी रहल
देह जइसे कि भुतहा मकान हो गइल।

आस के डोर टूटल-कटल भाईजी
आइल सपनो त अचके बिहान हो गइल।

हमरा ओठ के बगानी में फूल का खिलल
मन का चउरा क तुलसी झवान हो गइल।

सउँसे जिनिगी कटल उनकर रहिये-तकत
मौत के राह बहुते असान हो गइल।

••

बी-37, सिटी होम्स कालोनी,
जवाहरनगर, सतना, म०प्र०-485001

अंचित के पाँच गो कविता

(अंग्रेजी से स्नातकोत्तर. अंग्रेजी अउरी हिंदियो में लेखन. अनुवाद के कई कार्य प्रकाशित, एगो अंग्रेजी वेब पत्रिका के सम्पादन)

बोलऽ पांड़े जी !

कविता पढ़ेलऽ कि कविता जिएलऽ
बोलऽ पांड़े जी का का करेलऽ !

ठेहुना छिलाला त बिम्ब गहेलऽ
दुआरे दुआरे एतना काहे फिरेलऽ !

अषाढ़ के पानी जेठ ले ना चले
काहे तब्बो अइसन बाट जोहेलऽ !

घाट चले के बेरा आई, चल देबऽ
फिर काहे सब झूठ के साँच करेलऽ !

बोलऽ पांड़े जी, का कहबऽ
कविता करेलऽ, कि अपराध करेलऽ ?

हिंसा के नाम एगो चिट्ठी

राउर टाइम आ गइल बा.
ए विचार से पूर्ण सहमत बानी.
बाकी अब वइसन डरो नइखे

एतना प्रसार भइल
रउरा अनसुना ना रह गइनी
आम धारा गमकेला राउर नाम से.

रोज मिलेनी
हर चौराहा, राउर एतना रूप–
एतना प्रसिद्धि सब जनमानस में.

एगो अइसनो समय बीतल बा
कि नामो सुन के काँप जात रहे आदमी –
अब त बउआ के झुनझुना हो गइनी

का का करतब करब एकर कवनो अंदाजा नइखे
रउआ विराजमान रहब
सरकार ई तय करके चलतिया.

योजना परियोजना

अउरी का धइल बा जीवन में
एकरा अलावे कि एगो मंच धरल जाव
बढ़िया कपड़ा पहिनल जाव अउरी
भीड़ के झुमावे खातिर खूब घोषणा कइल जाव.

एगो योजना उतरल जनता के बीच
जनता खुस, कइलस जयजयकार
पहिला के दाल नहियो गलल
दोसर तैयार, सब लोग मगन.

सड़क पर रख के भात सनाता
पर देश में आलोचना ना, सन्नाटा.
अपने पइसा बा, अपने जीवन
वेंटिलेटर पर वोट, व्हील चेयर पर लोकतंत्र

गाईं रउआ, योजना के गीत, लाईं सब परिवर्तन
ऑक्सीजन के बिना साँस लेवल सीखऽ तिया जनता.

कहीं बाबा जी

बाबा जी बाबा जी,
काहे पड़ल हव धावा जी?
काहे अइलस अइसन दुर्दिन
केकर पड़ल हव छाया जी?

रउआ ठगत रहनी खूब खूब
किरपा बरसउनी नाच नाच आ झूम झूम
का भइल फिर घोटाला जी
काहे पड़ल हव छापा जी?

आस्था के बेच घोंख गइनी
लोगन के जिनगी सोख गइनी
भगवानो कैदी होके रह गइले
आस्था के मोल के लगावेला जी?

राउर पुण्य के पता लगावे
पाप के हिसाब के सिमटावे
एतना फुर्सत कहाँ से आई
परस्त्री माता, परपुरुष होखेला भाई
एतना नशा? काहे कूच्छो ना जनाला जी?

बाबा जी बाबा जी,
बा कुछउ गड़बड़झाला जी.

रात - तीन गो दृश्य

एक

नदी के किनारा बा, अकेले टहलत बानी,
नदी जे हमरा के ना जानेले,
हमरो खातिर ओतने पराया बिया.
चार गो जिदियाइल सपना,
खलल डालऽ ता.

दू

खिसिआइल रात से बेहतर प्रेमिका के होई?
जेतना खीजी, ओतने ढ़ँकत जाई आदमी
ओकरा अन्हार में.

तीन

दिन के काम आदमी डाल देला रात पर,
सोचेला कि इत्मिनान से बइठी, कुछ खाई-पी
फिर करी जे करे के बा - किताब पढ़स, प्रेम करस
चाहे गुलामी से मुक्ति के रस्ता तलास करस

ई रात के इंतजार कब्बो खत्म ना होला !

••

द्वारा-तुषारकान्त उपाध्याय, मेन रोड, बुद्धा कालोनी, पटना-1

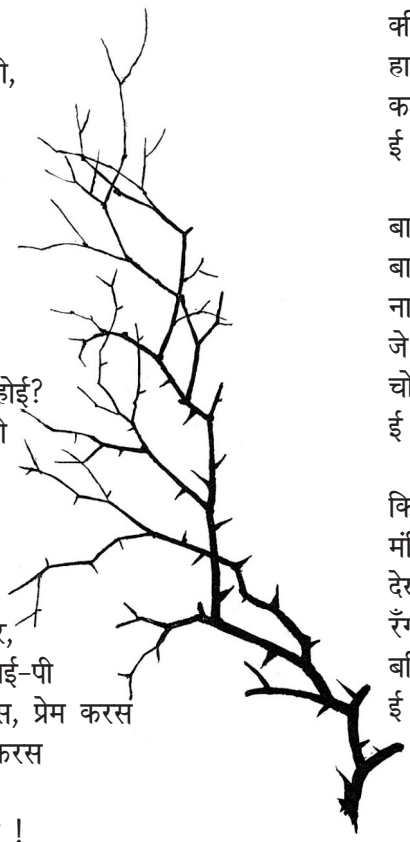

दुनियाँ के मेला

दयाशंकर कुशवाहा 'दयालु'

ई हऽ दुनियाँ के मेला ए भाई
जनि पूछऽ कि का का बिकाई।
तहरा मनवाँ के बहुते लुभाई
ई हऽ दुनियाँ के मेला ए भाई।

इहवाँ गहँकी बहुत बाड़ें ईमान के
रूप से ना समइबऽ तुँ शैतान के
कहिहें देबे के सगरो खजाना
हाथ नाहीं लगी एको आना
कहल मुश्किल बा के, के ठगाई।
ई हऽ दुनियाँ के मेला ए भाई!

बाटे लुटहीं बदे रेलम रेला
बाकि, लालच से बिरले बचेला
ना बा केहू प' कवनो भरोसा
जे बा आपन उहे दीही धोखा
चोट भारी भितरिये दुखाई।
ई हऽ दुनियाँ के मेला ए भाई

किडनी, लिवर का, देहियों बिकाला
मंदिर-मस्जिद बिकाला शिवाला
देखबऽ रहवाँ अनेकन घोटाला
रँग ना दूसर चढ़ी सब बा काला
बतिया मिठरस रही ना बुझाई।
ई हऽ दुनियाँ के मेला ए भाई!

••

देवरिया (उ०प्र०)

दू गो कविता

डॉ0 मधुबाला सिन्हा

(एक) जनमजात गुनहगार

हम हईं स्त्री
सिरजन बा
हमार संस्कार

उपकार हम
परोपकार हम, आ
तिरस्कार हमर भाग्य

केकरा खातिर हम
सौभाग्य हईं,
हमनी के सौभाग्य
बन्हकी बा
मर्यादा के बही-खाता में

हमनी के सब काम गुनाह
मतलब कि
हमनी हईं,जनमजात गुनहगार
बाकिर
अपना अस्तित्व के रक्षा खातिर
गुनाह कइल कइसे छूटी,
कबो ना !

(दू) जिनगी

हरियर गाछी
देत रहेला भर जिनगी
फल फूल पात

पतझड़ में
ओकर पात झड़ जाला
समा जाला माई के गोदी में
बुझाला कि गाछी
हो गइल होखे नंगा

बाकिर
सबुर से इन्तेजार करेला,गाछी
हहरेला ना
ना निहोरा,आ
गोड़धरिया करेला

समय पर सज जाला
ओकरा देहिं पर
नया हरियर जामा

गाछी
फेरु लाग जाला सिरजन में
भुला जाला कि
कुछो टूटल बा
कुछो छूटल बा ! ••

नेक्टर पॉइंट आवासीय विद्यालय
चांदमारी, वार्ड सँ.- 26मोतिहारी, पूर्वी चंपारण

गुलरेज शहजाद के
चार गो गजल

(एक)

हम हईं रात आ तरेंगन तू ।
तू हमर आस बाड़ऽ जीवन तू ।

जेकरा गवला से चैन आवेला
ऊहे पावन हमार किरतन तू ।

जेके सोचिये के हम गमक जानीं
उहे गमकत हमार चन्दन तू ।

जेकरा संघे बन्हा के मुक्ति बा
काँच तागा के उहे बन्धन तू ।

देखि गुलरेज जे सँवर जालें
मन के उ झलझलात दरपन तू ।

(दू)

बाटे कुच-कुच अन्हरिया में दियरी नियन ।
रूप दुल्हिन के देहिया प' पियरी नियन ।

बाटे कायम भरम हमरो देखीं तनी
एगो सँवरल सजल कउनो कोठरी नियन ।

सबके हम सबका माथा पे तरख भइल
करिया दुलहा के मुंडी पे मउरी नियन ।

आँखि में तहरे सपना चलीं लेके हम
हाथे धइले कलेवा के दउरी नियन ।

संग-काटल समय आके लेके तुँ जा
मन का कान्ही प' धइल बा मोटरी नियन ।

(तीन)

हमहूँ देखऽ तोहरे खानी हो गइनीं ।
पहिले रहनीं पत्थर पानी हो गइनीं ।

कान्ह बनल सहतीर त नाता टीकल बा
छोट उमिर में बूढ़ कहानी हो गइनीं ।

सबके बखरा के बिस-पान करे के बा
हमहूँ जइसे अवघड़दानी हो गइनीं ।

पड़ल रहीं हम बेमतलब के आखर बन
तोहरा चलते मतलब-मानी हो गइनीं ।

पुस्तक बँचला से ना भेंटल हमरा कुछ
समय ठेठवलस अतना, ज्ञानी हो गइनीं ।

(चार)

खुसी में छउकत बाड़ऽ मन महुआ गइल बा का !
प्रीत मिलन के बेरा अब नियरा गइल बा का !

रात अन्हरिया जगमग भइल चकचक कोना-कानी
अन्हुआइल रतिया में केहू आ गइल बा का !

सांस-सांस कचनार भइल बा गमगम गमके सगरो
छंइटी फुलवन के अचके छितरा गइल बा का !

बेचैनी में रात कटाइल दिन भकुआइल लागे
नेह के डोरी में मनवा लपटा गइल बा का !

साँझ भइल सिंदूरी जस गोरी के मुँहवा दमके
साँवर साँझ में सेनुर नेग भरा गइल बा का !

ओठे मुस्की, चान बा चमकत लागे जस मतवाला
मन के भितरी में कुछऊ अँखुआ गइल बा का ! ••

❑ नकछेद टोला, मोतिहारी-845401
पूर्वी चम्पारण (बिहार)

खुद में खुद के तलाश करत कवि जगन्नाथ

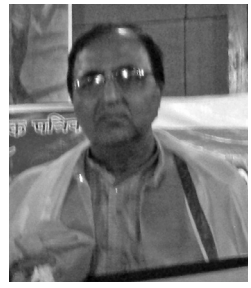

भगवती प्रसाद द्विवेदी

कविवर जगन्नाथ भोजपुरी ग़ज़ल के हलका में इतिहास रचे वाला एगो अइसन गौरव–स्तम्भ के नाँव ह, जेकरा बेगर ना त भोजपुरी ग़ज़ल के चरचा कइल जा सकेला, ना ओकर इतिहासे लिखल जा सकेला। खाली अतने ले ना, भोजपुरी के कई नामी–गिरामी ग़ज़लगो के एकल संग्रहन के व्याकरणि ाक दोष दूर करे आ उन्हनीं के संशोधित–परिमार्जित कऽ के खास बनावे के श्रेय उहें के सलाहियत के जात बा। एकरा सँगहीं, ग़ज़ल के शास्त्रीयता, छंद–विन्यास आ विधागत विकास–यात्रा पर प्रकाशित उहाँ के प्रामाणिक समालोचनात्मक पुस्तक ग़ज़ल लिखेवालन आउर भोजपुरी ग़ज़ल पर शोध करेवालन– दूनों खातिर निहायत जरूरी बाड़ी स।

जगन्नाथ जी के सिरिजनशील व्यक्तित्व बहुआयामी रहल बा आ गीत, ग़ज़ल, समालोचना–शोध का सँगहीं कहानी आउर नाटक विधो में उहाँ के विशेष सृजनात्मक अवदान रेघरियावे–जोग रहल बा। 1966 से लेके 1978 का बीचे उहाँ के कहानी 'भोजपुरी कहानियाँ' आ 'भोजपुरी कथा–कहानी' में छपत रहली स, जिन्हनीं में गाँव के ऊबड़–खाबड़ जमीन पर आदर्शोन्मुख जथारथ के बिनावट आ सकारात्मक सोच मरम के बेधे बेगर नइखे रहत। ओह कहानियन के संग्रह 2009 में 'बाँचल–खुचल' शीर्षक से प्रकाशित भइल रहे। अइसहीं, सात रंग के छोट–छोट एकांकी नाटकन के संग्रह 'सात रंग' 2010 में छपिके चर्चित भइल रहे। हँसिए–हँसी में गम्हीर घाव करे वाला सातो एकांकी चोट–कचोट से लैस बाड़न स। भोजपुरी कविता के एकलउती मानक पत्रिका 'कविता' (तिमाही) के यादगार सम्पादन–प्रकाशन कऽ के उहाँ के एगो आउर मील के पाथर गाड़े में कामयाबी हासिल कइले रहलीं। सन् 1999 से 2012 ले लगातार प्रकाशित ओह पत्रिका के हरेक अंक संग्रहणीय होत रहे। साहित्यिक पत्रकारिता खातिर उहाँ के ई समरपन कबो ना भुलाइल जा सके।

बाकिर, एह सबके बावजूद जगन्नाथ जी मूलतः कवि हईं आ उहाँ के साफ–साफ मानींले जे कविता मानवीय संवेदना के लयात्मक अभिव्यक्ति ह। अपना आत्मकथ में उहाँ के कहलहूँ रहलीं– 'लिखला से हमरा सुकून मिलेला। हमरा रचनन में जीवन के विभिन्न पक्षन से जुड़े के प्रयास होला, बाकिर कवनो खास पक्ष के लेके आग्रह ना होला।'

जगन्नाथ जी के गीतन के पहिलका संग्रह 'पाँख सतरंगी' 1966 में प्रकाशित भइल रहे, जवना में कुदरत के जियतार छटा देखते बनेला। एक तरफ बिछुड़न के टीस, उहँवें दोसरा ओर संघर्षशीलता के अविराम सफर। लोकधुनन में आधुनिक संदर्भन के अभिव्यक्त करत गीतकार कबो 'भरि जाला अँखिया सपनवाँ हो रामा, चइत महिनवाँ' जइसन चइता गीत के सिरिजना करत बा, त कबो 'जनम–जनम के आस कबे मन के बुति गइल रहित निरमोही/छनभर एको बेर कबो जे साँसन के दुलरवले रहितऽ' नियर भावप्रवण गीतन के। कवि मन के दियना बारे के आवाहन करत कहत बा–

'थाके राह भले, ना थाके मन के भरल हियाव
कबो रे
आवे माया में किनार के ना जिनिगी के नाव कबो रे
लहर–लहर के ताल–ताल पर नाचत चले बहार रे
मंजिल दूर बटोही, मन के दियना बार रे!'

हालाँकि 'पाँख सतरंगी' में दूगो ग़ज़लो संग्रहीत रहली स, बाकिर 1977 में जब जगन्नाथ जी के पैंतीस गो ग़ज़लन के मोतिन के लर 'लर मोतिन के' शीर्षक से प्रकाशित भइल। ओइसे त, भारतेन्दु युग के तेगअली 'तेग' के इश्किया शायरी से भोजपुरी ग़ज़ल के शुरुआत

उनइसवीं सदी के आखिरी चरन में हो गइल रहे, जब सन् 1895 में उन्हुका तेइस ग़ज़लन के संग्रह 'बदमाश दर्पण' के भोजपुरी ग़ज़ल के पहिल एकल संग्रह होखे के गौरव मिलल रहे, बाकिर साँच कहल जाउ त आधुनिक हिन्दी–भोजपुरी ग़ज़ल के उत्कर्ष काल 1976 से शुरू होत बा, जब दुष्यन्त कुमार के समय–संदर्भ आ आज काल्ह के जरत–बरत जमीनी हकीकत से जुड़ल ग़ज़ल तहलका मचवली स आ उहँवें से ग़ज़ल–लेखन में एगो अइसन मोड़ आइल, जवन ग़ज़ल के दिसा बदलि दिहलस आ तेवर आउर तल्खी का संगे ग़ज़ल कहे के नया परिपाटी शुरू भइल। तब आधुनिक ग़ज़ल अपना के लौकिक प्रणये ले सीमित ना रखलस। एकरा दायरा के फइलाव इश्केमजाजी आ इश्के हकीकी से लेके तमाम सामाजिक विसंगति–विद्रूपता ले होत चलि गइल, जवन जनजीवन से एकर गहिर जुड़ाव आ दृष्टि–सम्पन्नता के सूचक बा। ओकरे नतीजा रहे– 1978 में जगन्नाथ जी के सम्पादन में 'भोजपुरी के प्रतिनिधि ग़ज़ल' के प्रकाशन। तबहूँ ई कमी शिद्दत से महसूसल जात रहे कि भोजपुरी ग़ज़ल के एगो अइसन संकलन आवे, जवना में हर पीढ़ी के प्रतिनिधि ग़ज़लगो अपना चुनिंदा रचनन का साथे शामिल होखसु आ ओह ग़ज़लन के जरिए सुधी समालोचक आ शोधकर्त्ता हरेक रचनिहार के मूल्यांकन का संगही बा....।

भाव–भाषा के स्तर पर जगन्नाथ जी के शीर्षस्थ ग़ज़लगो मानत मानत प्रो. हरिकिशोर पाण्डेय जी 'झकोर' के ग़ज़ल विशेषांक (जून–सितंबर, 1981) में लिखले रहलीं– 'हमरा समझ से भोजपुरी ग़ज़ल में सबसे बड़ नाम बा– जगन्नाथ। भोजपुरी गज़ल के अपना जगन्नाथ पर गर्व होखे के चाहीं। जगन्नाथ भाव–भाषा दूनों में ग़ज़ल के मिजाज जइसे समझले बाड़न, ओइसहीं कवनो भोजपुरी ग़ज़ल–लिखनिहार के समझे के चाहीं। ग़ज़ल में कथ्य के गहराई ओकर दबगर भइल ना ह, महीन भइल ह, कोमल–सूक्ष्म भइल ह। औरत के मन जब एह दशा के भोगेला त ऊ फेर में पड़ जाले; ओठ कुछ बुदबुदाला, शब्द आके थथमे लागेला, आँख मछरी बन जाले, गाल लाल हो जाला, गर्दन झुक जाला, धड़कन बढ़ जाला, ओकरा कथ्य तक जाए के ईहे व्याकरण ह, ईहे भाषा ह–

'तनिकी हवा में नेह के अतना जे हिल गइल
मन ना भइल, ई हो गइल पीपर के बुला पात।

चाहे छोट बहर के ग़ज़ल होखे भा बड़ बहर के, दोहा छंद में रचाइल होखे भा दोसर कवनो रूप में, जगन्नाथ जी अपना ग़ज़लन के बेरि–बेरि माँजींले, तरासींले आ नया–नया चमक, आभा आउर असर पैदा करत रहींले। एही से 'लर मोतिन के' के किछु शे'र कथ–शिल्प–संवेदना का स्तर पर अउर बेहतर छाप छोड़त एह संग्रह में मौजूद बाड़न स। उहाँ के कहलहूँ बानीं–

तलासत रहीला अपना के
लोगन का नजर में
तरासत रहीला अपना के
अपना नजर से।

इहे तलाश आ तराश सिरिफ रचने के ना, बलुक इंसानो के उम्दा आ मुकम्मल बनावेला। ग़ज़लगो के एह शे'र का ओर तनी अखियान करीं–

'बहुत देखलीं रउवा अनका के अब तक
तनी खुद में खुद के तलाशत त देखीं!'

मानवीय मूल्यन से कबो ना डिगेवाला एह शीर्ष ग़ज़लगो, सेसर सृजनशील साहित्यिक कर्मयोगी के शतकीय जिनिगी के कामना करत हमार सादर नमन! ••

❑ शकुंतला भवन, सीताशरण लेन, मीठापुर,
पो०बा०–115, पटना–800001

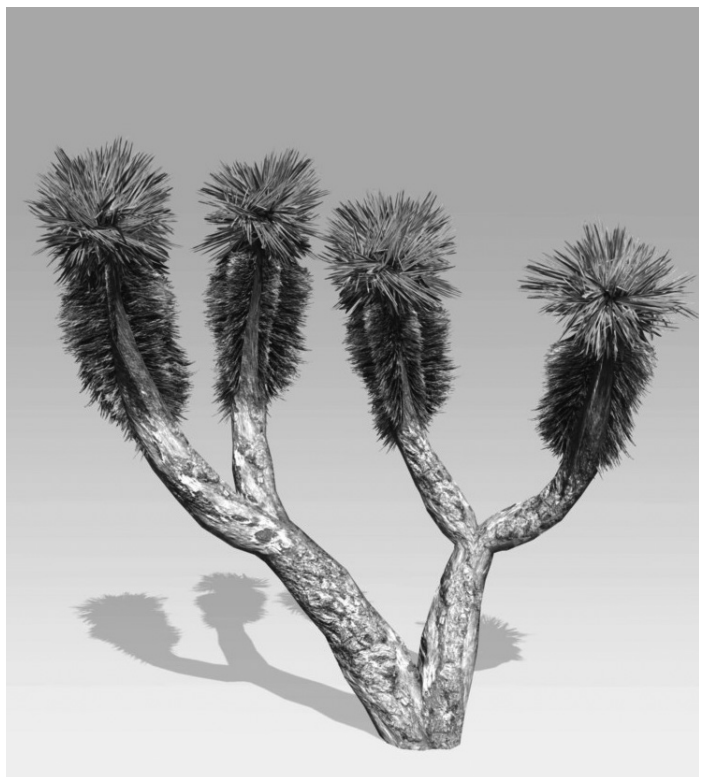

गाँव–जवार से माटी के महक

(भोजपुरी भूइं रतनगर्भा हवे। सन्त, महात्मा, विचारक, भाषाविज्ञानी, गणितज्ञ, संगीतज्ञ, साहित्यकार, पत्रकार, वीर सैनिकन आ राजनेतन के जनम-करम के भूमि भोजपुरी क्षेत्र का गौरव आ गरिमा के देस-विदेस जनले-पहिचनले बा। छपरा, आरा, सीवान, बक्सर, गाजीपुर, मऊ, देवरिया, गोरखपुर के दिल का रुप में धुकधुकाए वाला जिला बलिया त, महर्षि भृगु बाबा, गर्ग, गौतम आ दर्दर जइसन मुनियन के तपोपूत धरती हवे। मंगल पांड़े का जरिये आजादी के बिगुल बजावे आ चित्तू पांडेय आदि का जरिये, आजादी के - घोषणा आ पहिल झंडा फहरावे के सौभाग वाला ई जनपद कला, संस्कृति, साहित्य, विज्ञान, कृषि आ राजनीतिक अगुवाई का दिसाईं अपना सतत् कर्म आ निष्ठा से कीर्त्ति-अरजन कइले बा। ओइसे भोजपुरी भूगोल क फइलाव चंपारन, मोतिहारी होत नैपाल का सीमा ले बा।

राष्ट्र का निर्माण में अपना प्रतिभा, ज्ञान, कौशल आ निष्ठा से योगदान देबे वाला भोजपुरी जनपदन के, प्रतिभाशाली, विद्वान, संस्कृतिकर्मी, वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, प्रशासनिक अधिकारी आ अकादमिक लोगन का बारे में, भोजपुरियन के जाने के चाहीं- खास कर ओह लोगन का बारे में, जेकरा अपना भूमि, भाषा आ समाज से जुड़ाव आ आत्मीयता बनल बा। हम अपना एह विचार के ध्यान में राखत, एह नया स्तम्भ में एही माटी के महक का रूप में भोजपुरिया गाँव-जवार से अपना प्रतिभा आ मेहनत से आगा बढ़ल कुछ खास लोगन के परिचय वाली पाँचवीं कड़ी दे रहल बानी - संपादक)

व्यक्ति विशेष : जगन्नाथ

•• **जन्म** : 19 जनवरी 1934, बक्सर जिला के कुकुढ़ा गाँव में। पिता स्व० रामयोगी लाल जी के घर में।

•• **शिक्षा** : प्राथमिक शिक्षा गाँव में, छठवीं से दसवीं तक के पढ़ाई सिकरौल हाई स्कूल, बक्सर में । बी०ए०, विश्वामित्र डिग्री कॉलेज, बक्सर से।

•• **सेवा** : 1955 में डाक तार विभाग में टेलीफोन ऑपरेटर के रूप में भागलपुर जिला में नियुक्ति। दूरसंचार विभाग पटना परिमंडल में सहायक महाप्रबंधक (प्रशासन) पद से सन् 19 जन० 1992 में सेवानिवृति ।

•• **प्रकाशित पुस्तक** : पाँख सतरंगी (गीत-संग्रह), 1967, लर मोतिन के (गजल-संग्रह), 1977, गजल के शिल्प-विधान, 1997, भोजपुरी गजल के विकास-यात्रा, 1997, हिन्दी-उर्दू-भोजपुरी के समरूप छंद, 1999, बाँचल-खुचल (कहानी-संग्रह), 2009, सात रंग (एकांकी-संग्रह), 2010, खुद के तलाशत (गजल-संग्रह), 2015

•• संपादित पुस्तकः भोजपुरी के प्रतिनिधि गजल, 1978, समय के राग (गजल संकलन)2003

•• ''कविता'' (भोजपुरी कविता के त्रैमासिक पत्रिका) के 1999 से 2012 तक संपादन

सम्पर्क : ए/21, साधनापुरी, गर्दनीबाग, पटना-800 001

सरल, अनुशासित आ सृजनशील जीवन जिये वाला जगन्नाथ जी के पूरा नाँव जगन्नाथ प्रसाद हवे। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी जगन्नाथ जी भोजपुरी कविता के अगिला पाँति के कवि हईं। अपना मृदु आकर्षक व्यवहार से आत्मीय संबंध बना लेबे में माहिर जगन्नाथ जी आ उनका रचना-संसार से हमार परिचय ओह समय भइल रहे, जब उहाँ के गजल-संग्रह ''लर मोतिन के'' (1977) निकलल रहे। पटना में उहाँ का आपन संग्रह हमके अपना हाथे देले रहनी। एह किताब के समीक्षा ''पाती'' में छपल । ''पाती'' पत्रिका से उहाँ के सन् 1979 में जुडनी त आजले जुडले बानी। भोजपुरी गजल का विकासे-बढ़े में जगन्नाथ जी के एगो मुकम्मल भूमिका रहल बा।

धर्मपत्नी श्रीमती सुदामा देवी का साथे जगन्नाथ जी

साँस खातिर बा सरगम बेगाना भइल
जिन्दगी बस जिए के बहाना भइल ।

गिरके उनका नजर से उठल बानी हम
बानी सभका नजर के निशाना भइल ।

लोर पीए के जनमे से लागल लकम
अब का छूटी, निसा ई पुराना भइल ।

उनका रोवला भइल एगो मुद्दत, बुला
हमरा हँसला, ए यारे, जमाना भइल ।

रउवा दीहीं दरद आ गजल देब हम
ई गजल रउरा नाँवें बयाना भइल ।

शब्द के कुछ अर्थ दीं, औकात दीं
शायरी में वक्त के जज्बात दीं ।

प्यार नफरत जे भी रउवा दे सकीं
दीं अगर, अफरात के अगरात दीं ।

खेल के अंदाज ई हमरा कहाँ
बुद्धि के दीं शह, हृदय के मात दीं ।

नीक-बाउर जे भी खुद के राह बा
एह उमिर में छोड़ के का जात दीं ।

पास हमरा बस गजल आ गीत बा
का अउर हम लोग के सौगात दीं।

फोटो श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी के सौजन्य से)

नीक होखे भा बाउर, गजल हम कहब।
रउवा से खास राउर गजल हम कहब ।

आग से पेट के हम भले खुद जरीं
लोग खातिर दनाउर गजल हम कहब ।

हऽ गजल, चोट दिल पर त करबे करी
चोट दे जे सहाउर, गजल हम कहब ।

दाद दीहीं भा दूसीं, रहब बेअसर
एह सब के घठाउर गजल हम कहब ।

हमरा गजलन के हऽ भूमिका ई गजल
नीक लागी, त आउर गजल हम कहब।

साँस का गुनगुनाए के मन हो गइल।
रउरा अइला से घर ई चमन हो गइल ।

साध हमरो हिया में कम ना रहल
पेट के आग में सब दफन हो गइल ।

जबले जीअल गरीबी, रहल ओढ़ना
मर गइल त गगन ई कफन हो गइल ।

एह तरह से बेलाला भइल जिन्दगी
खुद के छाँहो में बा बेसरन हो गइल ।

गूँग शब्दन के कविता भइल संकलन
व्यंजना के बुला अपहरन हो गइल ।

उनका आँखिन से झर गइल पानी
हमरा आँखिन में भर गइल पानी ।

खुद के ऐनक में देखके लागल
जइसे, घइलन बा पर गइल पानी ।

जिन्दगी का निसा चढ़ल बाटे
उम्र के बा उतर गइल पानी ।

हमरा रोवला के अर्थ लागल हऽ
हमरा आँखिन के ढर गइल पानी ।

कइसे ऊ शख्स, यार, जिन्दा बा
जेकरा आँखिन के मर गइल पानी ।

आग बन-बन के जे भी आइल हऽ
जिन्दगी सबके कर गइल पानी ।

हम त आँखिन में बान्हि के रखलीं
कइसे सगरो पसर गइल पानी।

आदमी ना कतो नजर आइल ।
फेरू बा गाँव के लहर आइल ।

गाँव खातिर चलल रहीं हम तऽ
कइसे बा सामने शहर आइल ।

बात चउखट से घर के निकलल हऽ
बाटे अब तऽ दुआर पर आइल ।

एह पौधन के जनि हलाल करीं
अब त एहनी में फूल-फर आइल ।

सोचलीं हाँ गजल लिखीं हमहूँ
ना त अरकान, ना बहर आइल।

11, प्रिटोरिया स्ट्रीट कोलकाता में, विचार-मंच द्वारा, भोजपुरी के प्रतिष्ठित कवि-कथाकार अनिल ओझा 'नीरद' के प्रो० कल्याणमल लोढ़ा सारस्वत सम्मान से सम्मानित कइल गइल

भोजपुरी समाज सतना द्वारा प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित भइल

प्रभा खेतान फाउन्डेशन आ मसि इंक के आयोजन में ''आखर'' का बैनर पर ''एक साहित्यकार'' का रूप में श्री सौरभ पाण्डेय। एह कार्यक्रम में 'भोजपुरी साहित्य' पर जितेन्द्र वर्मा द्वारा साहित्यकार श्री सौरभ पाण्डेय के साक्षात्कार लिहल गइल।

गुरूविन्द्र सिंह के दू गो रचना

(एक) गीत

नून-तेल, लवना में
सुख सउनाइल
जिनिगी के खर-सेवर
कुछु ना बुझाइल!

कइसों-कइसों आइल
सगुनी-समइया
अबकी लगनियाँ में
पार लगी नइया
बिदा करत बिटिया के
आँखि छलछलाइल!

सतुवे-पिसान रहे
जीये क असरा
आधा-तिहा लाग जाव
ओहू में बखरा
लीहल बियाहे के रिन
ना दियाइल!

रामजी क खेती बा
रामजी क बारी
रामजी के किरपा से
उमगलि बधारी
पियरी पहिरि
सरसोइया धधाइल!

कर्छी से गहुँआँ
गजब सँड़सल बा
जउआ-मटर सँग
चनवों सबल बा
सबका कुशलता में
मन अगराइल!

(दू) गजल

आपुस में ऊ प्यार कहाँ बा
हुलसत गाँव जवार कहाँ बा!

बाँटे-बखरा में सब लागल
खुसदिल आजु दुआर कहाँ बा।

सुख-दुख में जे हाथ बढ़ावे
हीत-मीत - पलिवार कहाँ बा।

देवकुर में सँझवत बारल बा
घर-अँगना उजियार कहाँ बा।

लोकतंत्र बिघटन के खेला
दुश्मन आज, डिठार कहाँ बा। ••

❑ आर० के० पुरम, नई दिल्ली

गीत

हीरालाल 'हीरा'

कहिया ले फिरी दिन, खोलीं तनी पतरा
पंडी जी बताईं कब दूर होई भदरा?

दिन-राति खेतवा में करीले खटनिया
जनलीं ना गइल कब, आइ के जवनिया
कहिया ले सुखले ठेठाईं हम जँगरा ।

खर-पतवार खातिर तरसे मड़इया
अचके बकेन भइल कीनल धेनु गइया
कइसे कटी मघवा के ठार पाला कुहरा ।

कहिया ले असरा के आस धइ जीहीं
कब ले बिपतिया हमार खून पीही
चान के चननियो ना आवे मोरा बखरा ।

कतना कठिन बाटे कइल अब किसानी
कबो सूखा बाढ़ि कबो पथर संगे पानी
एहू पर बजरिया के बूझल ताल-मतरा ।

असो बा उमेदि, ना उदासी खरिहनिया
दूर होई लइकन के सभ परेसनिया
दान-पुन्न तिरिथ करे हम्हूँ जाइब बहरा । ••

❑ नई बस्ती, रामपुर, बलिया (उ०प्र०)

दरकत मन

अशोक द्विवेदी

अनंत मिसिर के ओह दिन बड़ा दुख भइल रहे, जहिया मझिला का जिद पर सोकना बिका गइल। उनका बिरोध क कवनो माने ना रहे। बाबूजी कहले "नया बैल किना जाई, जाये दऽ! ऊ बुढ़ात रहल हा!" उनका इहो बुझाइ गइल कि अब घर चलवला खातिर बैल राखल आ खेती ओतना जरूरी नइखे। अइसहूँ तीनू भाई घर से बहरा नोकरिये करिहें त इहवाँ के सम्हारी?

मझिला दू दिन बादे अपना नोकरी पर चलि गइल छोटका भाई के सुतले—खइले से फुर्सत ना। ओहू के फोर्स में भर्ती होइये गइल बा, जहिये बोलावा आ जाव। ओकर मेहरारू क बाग तबसे अड़ाते नइखे, जहिया से ऊ भर्ती में चुनाइल।

एक हर क छोट खेती आ चढ़ते अषाढ़ सोकना के धवरा बैल से साथ का छूटल, खेतिये डगमगाये लागल। बाबूजी आध कोस सइकिल से जाके एगो टेक्टर ठीक कइलन आ लेहना—पताई छिटा गइल। ओही से धान वाला खेतवो जोतवा दिहले। बेहन पहिलहीं से डलाइले रहे। बरखा होई त ठीक ना त सरकारी टीबुल से लेव लगाइ के एकाध बिगहा धान रोपाइ जाई। बुझला इहे मनसा रहे उनकर। हो सकी त कुआरे में बैल किनाव। ईहो हो सकेला कि गँहकी मिलला पर धवरो बिका जाव। अब टेक्टर के जुग आवे वाला बा।

कुछु साफ ना रहे ना बड़ बेटा गुने, ऊ अनत मिसिर से एकरा बाबत कवनो राइये—सलाह कइलन। अनन्तो मिसिर सकेता में रहले, ज्यादा पढ़ियो लिहल जीउ क आफत रहे। चार—पाँच बरिस का बेरोजगारी का बाद शहर का एगो प्राइवेट मिडिल स्कूल में नोकरियो धराइल त नौ किसिम के अनुसासन! तनखाह एतना कम कि नून जुटे त तेल ना आ तेल जुटे त लकड़ी ना। जवना किराया का कोठरी में रहल रहले ओहू क सुबिधान किराया बाँव परि जाव। एगो लइका, एगो लइकी उहो आल्हर नान्ह। दूध—दवाई क खरच अलगा। दूगो छोट ट्यूशन ना रहित त निबुकावलो साइत ना सपरित।

छुट्टी में जबले गाँवे रहले अनत मिसिर अपने घर का लोगन के अँड़सा में दबाइल रहले। बाकिर अपना जाने घर—बार का छोट—बड़ काम में देहिं जाँगर से उठा ना रखले बाकि तब्बो माई—बहिन लोग अनकसाइले रहे। अनंत से त ना बाकिर अनंत बो के, ओ लोगिन क मेहना—ठनहच सुनहीं के परे...'का जाने कवन नोकरी करेला कि एकरा मेहरे—लइका से ना आँटेला! लरिको अइसन कि एहनी के बेमरिये घेरले रहेला।' मेहरारू दुखाइ जासु। अनन्त मिसिर का सोझा, पलखत पाइ के आँख डबडबवले बहुत कुछ अनकहलो कहि जासु....'कुछु ना, हमहन क किस्मतिये फूटल रहे।' बहुत कुरेदला पर असल बात मुँह से बहरा निकले। का करते अनंत, बतिया सोरह आना साँचे रहे। ऊहो एम0 ए0 कइले रहली, पछिले बरिस बाकि दूगो दुधकटुअन के केकरा बले छोड़ के नोकरी बदे अपलाई करसु। एने, एह घर में शिक्षा के कवनो मोले ना, जे रहे कामचलाउवे पढ़ाई वाला विसुद्ध गँवई सोच संकीर्णता से ऊभचूभ रहे।

अनन्त मिसिर अतना बड़हन डिग्री आ शिक्षा लेइयो के का पवले? अरजन माने रूपया के अरजन! इहाँ त एही क महातम बा। ग्यान आ जानकारी उफ्फर परो, अतना महातम रहित एह ऊँच शिक्षा के, त आजु ले छिछियइते।

—'का हो कहिया जाये के बा तोहन लोग के?' अँगना में चउकी प बइठि के खरमेटाव करत, बाबूजी पूछ बइठले

—'तीन दिन बाद।' अनंत अनकुसाइले कहले

— 'अरे कहीं दोसरो जगहा जोगाड़ लगावऽ कि एह टटपुँजिहा नोकरी से काम चली।

—'लागल त रहबे कइल उहाँ डिग्री कालेज में एक बेर। सलेक्सनो हो गइल रहे, खाली दसे हजार न माँगत रहले स, मैनेजिंग कमेटी वाला। अनंत बोलि परले।

—'त का, तहरा नोकरी खातिर खेत बेचितीं? घर में अउरू लोग नइखे का? हमके सबके न देखे के बा।' बाबूजी तरनाइ गइले। इहो ना सोचले कि ऊ ओघरी नोकरिये मे रहले। चहिते त पी. एफ. से लोन लेके इन्तजाम कर सकत रहले। खेत बेचे के सवाले कहाँ रहे?

अनंत कवनो जबाब ना दिहले, चुपचाप घर से बहरिया गइले। चहिते त जबाब दे सकत रहले, चहिते त भरपूर उघटा—पुरान कर सकत रहले बाकि उनकर शिक्षा—संस्कार आ विनम्रता उनके रोक देले रहे। इन्टर का बाद के पढ़ाई ऊ अपना जिद प कइले रहले आ इनवरसिटी ले ऊ कबो ना त फीस मँगले ना किताब—कॉपी। दइब—किरपा कि अपना जिद आ जनून में, कवन—कवन अधातम से ऊ उँचकी डिग्री हासिल कर लिहले। अनंत चहिते त अउर बहुत कुछ पूछ सकत रहले। बाकि ऊ ना पुछले ना कुछु कहले। खाली एहसे कि बाबूजी के अकुसलता आ सोच संकीर्णता उजागार करब त उनके चोट लागी। ऊ बहरा जाके फरुही से चरन पर पसरल गोबर टारे लगले।

बे नहवावल—धोवल भइँसि लेवाड़ लेले रहे बँसवारी का लगे। ऊ खाव कम, पगुरावे ज्यादा, बुझाय जइसे सेवा—सुसुरसा बिन अनमन होखे। हरियर घास—पताई चरि खाइ के पहिले जवन दूघ बढवले रहे, ऊहो घटि गइल रहे।

पहिले जइसे मकनाइल दउरे, ऊ सुभाव बिलाइ गइल रहे ओकर। घर में दूध खातिर हदरा—हुदुरी आ चढ़ा—उपरी पहिलहीं से रहे, अब भितरघँउसे दयादी झलके लागल। अनंत के मेहरारू अपना नान्ह लड़िकन खातिर जवन एक लीटर उठवना दूध लेत रहली, कबो—कबो ओहू क चाय बन जाय। बुझइबे ना करे या कि लोग बुझले ना चाहे कि अनत का लड़िकन के दूध एह बड़कन ले ढेर जरूरी बा। दुधवा वाला टोकबो करे, 'अरे महराज रउरा घरे त भइँसि लागऽ तिया, रउआ काहे दूनो बेरा छरियाइल रहीले। अनन्त मुस्कियाइ के कहि देसु, 'उन्हन के भइँसि क दूध ना पचे।' अब कहबो करसु, त का कहसु। ई त कहि ना सकत रहले कि हमरा घरे नान्ह लड़िकन ले ढेर बड़कन के दूध क जरूरत बा। कि हमरा घरे दूध—घीउ खातिर आपुस के चढ़ा—उपरी अतना बा कि भइँसि दुहाते, तीनो लीटर ओराइ जाला। जब घर में ससुरइतिन बहिनियो अलगा मलिकाना चलावें सऽ त अउरी लोगन क बाते दूसर बा। उनकर पढ़ल लिखल मेहरारू जब ए कुल्हि से ज्यादा दुखी होके कुछ कहलो चाहसु त अनन्त आँखि मूनि के तुलसी बाबा क चउपाई दोहरावे लागसु...'जहाँ कुमति तहँ बिपत निधाना।' कवनो आस—भरोस बाँचलो ना रहे, काहे कि घर बिगरला के ई राह बापे—मतारी क धरावल रहे। आ लोगन के एकर रपटा परल रहे।

अनन्त के नोकरी प जाये का एक दिन पहिले फजिरहीं बाबूजी उसुकवले, ''बाँड़े का खेत में बजड़ा—रहर छिटवावे के बा। हम काल्हु के टेक्टर ठीक क देले बानी। फेरू साइकिल निकालत घर से बहरियात बोलले, बीया जोखवाइ के, तूँ जल्दी अइहऽ!' अनन्त माई से कहि के, बजड़ा आ रहर, जोखववले आ घर में घुसुर के सूतल छोट भाई के बोललें। भितरी से सुनगुन ना मिलल। बलुक ओकर मेहरारू कोठरी से निकल के रसोई का ओरी जात बोलल, 'उनकर तबियत नीक नइखे बोखार के दवाई खाके सूतल बाड़े।' अनन्त सुनले, बीया क बोरिया उठवले आ दलान में ओठँघावल सइकिल का कैरियर में बान्हे लगले। मेहरारू धावल अइली, "रोटी—तरकारी बन गइल बा, कुछु खा लीं, ना त टिफिने ले लीं, बाबुओ जी तेजियाइल चल गइले हा, खाली चाह से काम ना नु चली। हम दू मिनट में टिफिन लेके आवत बानी। जाइब त उहाँ दुपहर हो जाई।"

अनन्त साइकिल बहरा निकाल के टिफिन के इन्तजार करे लगले। थोरिके देर बाद एगो छोट झोरा में ऊ टिफिन लेले धावल अइली। अनन्त झोरा हैंडिल में टँगले आ चल दिहले।

बाँण मे पहुँचले त खेत टेक्टर से जोतात रहे। बुझला हालहीं जोताई सुरू भइल रहे काहे कि जोतल हराई से बुझात रहे कि ऊ अभी दुइये तीन भाँवर घूमल रहे। ऊ बीया के बोरी साइकिल से खोलि के डाँड़ पर धइले आ डँड़ार पर खड़ा बाबूजी से बोलले —"एम्मे टिफिन बा। मन करे त खाइ लऽ, हम टोला पर से लोटा मे पानी लेके आवत बानी।"

—"ना अब जोता जाई त बीया छिटला बा बिदहइला का बादे खाइल जाई।" ऊ सुरियाइल रहले —हम तले गंगाजी का किनरवा से लवट के आवत बानी। ना होई न एक लोटा गंगाजले लेले आइब।

अनन्त ढेर दिन पर, एने गंगाजी का बाण वाला खेत में आइल रहले, एहसे मन क भाव प्रगट कइले।

–'ठीक बा जा, बाकि सइकिलिया अररवे पर ले जाई ओकरा से उतरि के थोरिकी दूर बालू में चले के परी। एघरी गंगाजी अउरू दक्खिन घसक गइल बाड़ी। बरसात में हो सकेला कि फेर अरार, ध'लेस। कवनो ठेकान बा? एह उँचासो ले आ सकेली। बाबूजी जानकारी देत–देत भीतर के ऊ डरवो जाहिर कइले। जवना का संभावना में जोतल–बोअल–उपजल फसल डूब सकत रहे।

–'जाये द ऽ बालू में ढेर दूर तक चले के परी। बादे में चल जाइब!' अनन्त दुबिधा में पर गइले।

आस पास कुछ अउरियो लोग के खेत जोतात–बोआत रहे। अधिकांश लोग का खेत में हरे नधाइल रहे। लम्मा गंगाजी का ओर जाये वाली छवर का लगे एगो अउर टेक्टर खेत जोतत जरूर लउकल। उनका खेत का तीनू ओर के खेत जोतल–बोअल लागत रहे। बस एके ओर क बाकी रहे, जेने ऊ आपन सइकिल खड़ा कइले रहले। ओह खेत का बाद गंगाजी का ओरी जाए के रस्ता रहे। बरखा से नरम भइल ढेला–धूरि वाला राह, लोगन का अइला गइला आ टेक्टर का लीखि से कचटाइ के बरोबर लउकत रहे।

बोअला–हेंगवला का बाद जब टैक्टर वाला चल गइल त बाबूजी सलतन्त भइले–"चलऽ, ओह डेरा पर चलल जाव। ऊहाँ चौधरी से बाल्टी लोटा लेके नीक से हाथ – मुँह धोइ के खाइल–पियल जाई। ओकरा बाद मन करी त गंगाजी चल चलल जाई।"

–'ठीके बा, चलऽ!' अनन्त खाली बोरिया साइकिल का कैरियर मे दबात कहले।

चउधरी का बाल्टी से उनका डेरा का इनार पर पानी भराइल आ हाथ–गोड़ धोइ के, उहवें बइठ के खाइल–पियल भइल। खात खा बाबूजी छोटका भाई का बारे में पुछलें त अनन्त ओकरा मेहरारू के बतावल बतिया कहि दिहले, सँग–सँग ईहो कि ऊ आपन कवनो जिमवारी ना बूझेला। बाबूजी सजग होके ओकर बचाव कइले,'' जाये द ऽ परिवार में सब एके लेखा ना होखे। जे जिमवारी बूझेला, ऊहे करेला।''

अनन्त का मन में आइल कि कहि देस कि बाबूजी रउवा इहे कहि–कहि के ओके अउर लापरवाह आ खुदगरज बनवले जा तानी। अइसना से, घर ना चले। परिवार सबका जथाजोग सहजोग आ आपुसी लगाव से चलेला। ई गलत बात परिवार खातिर ठीक नइखे कि केहू खटत–मरत–खियात रहे आ केहू बइठल–बइठल मोटात रहे। सब, सबकर खेयाल करी, तब्बे परिवार बनल रही। अनन्त चुपचाप उठले आ बस अतने कहले, ''तूँ घरे जा, हम तनी गंगाजी ले घूमि के आवत बानी।''

फेर अनन्त अपना साइकिल के दक्खिन ओर घुमवले आ उनकर बाबूजी उत्तर ओर। अरार पर पहुँच के अनन्त उतरे के ढलान खोजे तजबीजे लगले। पच्छिम ओर अरार तनी भहराइल–पसरल–गहिराइल लउकल। लोग ओही पड़े नहाइ–धोवाइ के लवटत रहे। ऊ ओने ना जाके पुरूब ओर अरार धइले चल दिहले। लगभग फर्लांग भर लम्मा एगो पुरइँठ पाकड़ के फेड़ रहे अरारे पर। अनन्त अपना घरे–परिवार का बदलत रंग–ढंग का फिकिर में डूबत उतरात कब दो ऊहाँ पहुँच गइले, पते ना चलल। सात–आठ बरिस पहिले एही पाकड़ का फेंड़ का लगे एगो चउतरा रहे। अरार ढहला से बुला ऊ ढह–ढिमिला गइल। अब स्थिति ई रहे कि पाकड़ के फेंड़ के सोरियो उघार लउकत रहली सन। उहाँ एगो चरवाह से पता चलल कि पछिली बेर का बाढ़ में आगा के दू कट्ठा ले माटी गंगाजी खधोर के बहा ले गइली। अनन्त छल–छल छलकत बहत गंगाजी का ओर तकले। उनकर पाट अउर चौड़ा हो गइल रहे।

दिन ढले शुरू हो गइल रहे। बाकि अनन्त मिसिर के अनमनाह मन उठल ना चाहत रहे। जिनिगी में कतना अझुरहट बा, उनका लमहर संघर्ष क कवनो अन्ते ना लउकत रहे। ऊ खाली बढ़िया आमद आ तनखाह वाली नोकरी खातिर त पढ़ले ना रहले। ऊ त ग्रेजुएशन का बादे भेंटाइ गइल रहित आ ईहे बाबूजी के इच्छा रहे, बाकि ऊ अपना रूचि का मुताबिक अउर ऊँच अध्ययन खातिर आगा ले पढ़ले। युनिवरसिटी में शोध कइले, बड़ डिग्री पवले, लेकिन ओकर उपयोग ना त ज्ञान का प्रसारे खातिर क पवले आ ना आर्थिक उपराजने खातिर कर पवले। उनका घर आ परिवार बाप–मतारी, भाई बहिनिन का प्रति जतन अनुराग आ खेयाल रहे, ऊ पइसा–कउड़ी बिना, सब बिरथा रहे। बाकिर उनका कामचलाऊ छोट कमाई क कवनो मोल ना रहे, आ प्रेम सद्भाव त्याग क कवनो कदर ना रहे। आपुस के लगाव अतना छीजत जात रहे कि संवेदनशीलता ले बिलाइल जात रहे। खाये–पिये आ छोट–छोट बात में दोसरा –

खास कर उनका आ उनका मेहरारू – लड़िकन से भेदभाव साफे लउकत रहे। सब अइसे व्यवहार करे, जइसे ऊ बाइली आ बाहरी होखे लोग। ई बरकाव उनका के भितरे–भितरे बहुत अखरे आ बेचैन करे।

थोरिके दूर पर एगो टेक्टर–हड़हड़ात आके रुकल त अनन्त मिसिर के ध्यान टूटल। परवाही करे आइल लोगन के देखि ऊ समझ गइले कि लोग शमशाने आइल बा। टेक्टर अरारे पर रूकल रहे आ लोग उतरत रहे। अनंन्त का अंतर में द्वन्द चलत रहे। आ अजीव अवसाद भरल जात रहे। ऊ उठले आ आपन साइकिल उठा के घरे के चल दिहले।

तीन बजत रहे। भितरी दलानी मे एक ओर चउकी पर माई का लगे बहिनियन क मीटिंग चलत रहे आ थोरिकी दूर पर एगो पातर बँसखट पर अनन्त के मेहरारू लइकी के दूध पियावत रहली। अँगना में उनके देखते उनकर नन्हका लड़िका हँसत–हुलसल, तुलबुल–तुलबुल धवरल। अनन्त झपटले बढ़ि के ओके कोरा उठा लिहले। मेहरारू लड़िकी का मुँहे दुधपिल्ली धरावत उठि के खड़ा हो गइली, ''अतना देरी काहे हो गइल? बाबूजी त कब्बे अउवन। सब खाना खा लिहल। रूकीं हम दाल गरम क के, खाना परोस देत बानी। एही जा बइठीं ना तऽ लइकिया खटियवा से पलट के गिरि जाई!"

अनन्त देखले उनकर दूनो बहिन मुस्कियात माई से कुछ कहली सऽ त माई हँस दिहलस। फेर ओही भइल बोलल, ''बाबूजी बतावत रहले हा कि तूँ गंगाजी चल गइल रहलऽ हा। टिफिनवा में चारिये गो रोटी देले रहुवी बड़की जानी, तहरा भूखि ना लागल रहल हा?''

अनन्त बबुअवा के कान्ही से उतारत कहले, ''दू गो रोटी हमहूँ खइले रहुवीं बाबूजी का सँगे। तनी गंगाजी के हाल–चाल लेबे चल गउँवी। ढेर दिन भइल रहल हा।'' लइकी मुँह से दुघपिल्ली छुटला का बाद हुनुके शुरू के देले रहे। अनन्त दुधपिल्ली ओकरा मुँहे लगाके ओकर गोड़ थपथपावे लगले नन्हका उनका पीठि पर चढ़त रहे। गिरि मत जाव एसे बायाँ हाथे ओकरा के धइले उठहीं के रहले तले बाबूजी के बोली सुनाइल –

"का हो, ई लइके खेलइबऽ कि खइबो–पियबो करबऽ ?'' उनका पाछा डलिया में भूजा खात उनकर छोटका भाई मुस्कियाइल। ओकर बोखार अब ठीक हो गइल रहे। अनन्त के बहुत जबून लागल। मन खिन्न हो गइल। खीसि में कहले, ''हमरा खातिर खाइल अतना जरूरी रहित त तहरे सँगे आ गइल रहितीं। रहल बात लड़िका खेलवला के त उन्हनो के सम्हारल जरूरिये बा, तबे न खनवो परोसाई!"

उनकर मेहरारू खाना परोसि के रसोइये भइल चिचियइली, ''खाना निकल गइल बा, आईं, खाईं, हम आके उन्हनी के देखऽतानी।''

अनन्त नन्हका के पिठइयाँ लेले रसोई का दुआरी ठहर पर धइल पीढ़ा का ओर चलत दिहले, बाकिर उनकर भूखि मरि गइल रहे। भुखिया का सँगे–सँगे उनकर मनवों दरकि गइल रहे, जवना में घर–परिवार के मोह–छोह के महीन सूतन वाला बान्हन रहे। ••

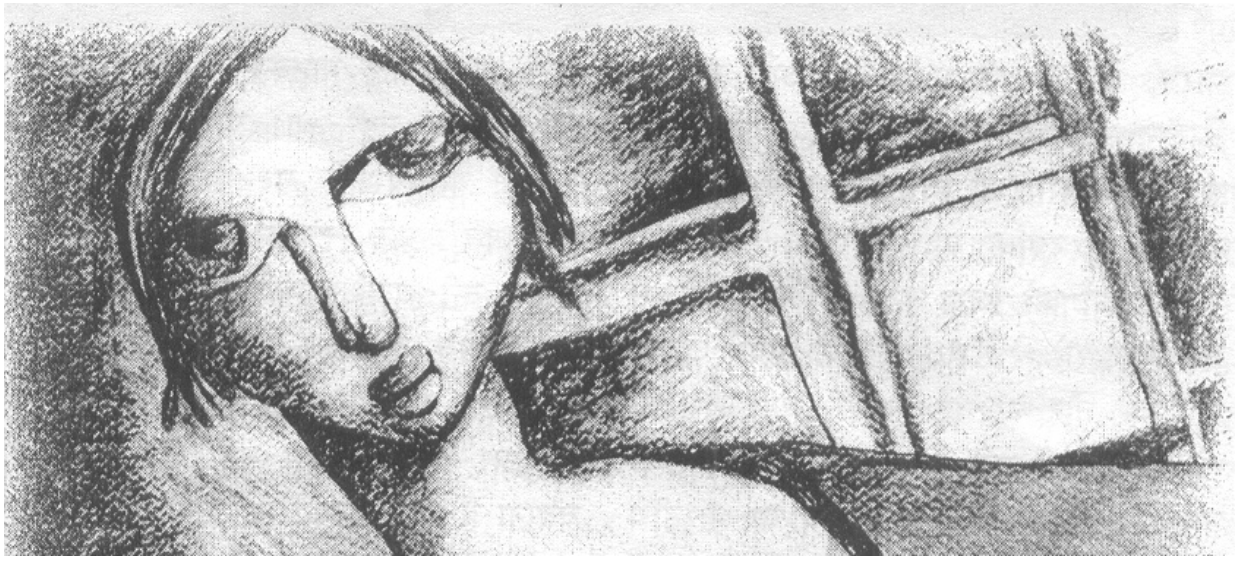

कहानी

चिरई के जान जाय...

डा0 भगवती प्रसाद द्विवेदी

बँगला खचाखच भरल रहे। सभ लोग आ–आके बइठत जात रहे। पुरनिया लोग बतावेला कि बहुत पहिले इहाँ एगो दोसर बँगला रहे। तब फिरंगी हुकूमत रहे। गाँव के मुखिया रहलन रामटहल बाबा। उन्हुके देखरेख आ सदारत में बँगला के मए कार्रवाई होत रहे। कलक्टर, दरोगा, सिपाही, जे केहू गाँव में आवत रहे, सभसे पहिले ओही बँगला में बइठावल जात रहे। खूब जमिके आव–भगत होत रहे। रामटहल बाबा घुलि–मिलिके बतियावसु आ तब गाँव के जवना अदिमी से भेंट करेके होत रहे, तत्काल उहँवें बोलावल जात रहे। गाँव के नामी लठइतो लोग रात–दित बाबा के सेवा–टहल में लवसान रहत रहे। गाँव में कवनो झगड़ा–झंझट, चोरी–चमारी, लूट–खसोट के ममिला के फैसला बाबा पलक झपकते सुना देत रहलन। साज–सज्जा आ साफ–सफाइयों के नजरिया से बँगला नायाब रहे। पता ना कब, बाबा के सरगवासी होते ऊ बँगला मटियामेट हो गइल आ ठीक ओही जमीन पर ई बरंडा बनि गइल। बाकिर ई बरंडा आजुओ ओह बँगला के इयाद ताजा करेला। गाँव के लोग अब एह बरंडे के बँगला कबूल कऽ बइठल रहे।

सब पंच बँगला में बइठि चुकल रहलन। मुखिया जी आके अपना आसन पर विराजमान भइलन। हाथ जोरि के सभ लोग उन्हुकर पवलग्गी कइल। रामटहल बाबा के नाती लागेलन बलेसर बाबा। आजु काल्ह गाँव के मुखिया। इंसाफ खातिर मशहूर। भला होखबो करसु त काहें ना? न्याय करेके बेसकीमती सूझबूझ उन्हुका विरासत में मिलल रहे!

दु कतना दिन से गाँव में जवन चरचा के बिसे बनल रहे, ओही के आजु फैसला होखे वाला रहे। लरिका–सेयान, बढ़–जवान– सभ केहू रस लेत रहे। जहँवें दू–चार लोग जमा होत रहे, बात के बतंगड़ बनत देरी ना लागत रहे। सउँसे गाँव खातिर ई एगो अजगुत मसला रहे। सभ लोग अपना–अपना तरीका से तरक–दलील देत रहे। आपन डफली आपन राग अलापल जइसे सभका खातिर निहायत जरूरी हो गइल रहे। खेत–खरिहान में, बजार–दोकान में– हर जगहा खाली एकही चरचा रहे आ ऊ चरचा रहे छितेसर काका के।

छितेसर काका एगो कोना में सिमटल–किकुरल बइठल रहलन। उन्हुकर बेचैन निगाह एकाएक देवकली पर जाके टिकि गइल। उहो उबडबाइल आँखि से उन्हुकेके टुकुर–टुकुर ताकत रहली। उन्हुकर दूनों बेटा कबो अपना माई के आ कबो भीड़ में बइठल–ठाढ़ लोगन के कौतुक से निरेखात रहलन स। छितेसर काका के आँखि छलछला अइली स। दोसरा ओरि मुँह फेरिके ऊ आँखि में भरल पानी के साफ कइलन। एकाएक थोरकी देरी का बाद होखे वाला फैसला के उन्हुका पूर्वाभास अस भइल आ ऊ सिर से पाँव ले काँपि उठलन। लिलार प पसेना के बून चुहचुहा अइली स। मन में आइल, जे अबहिएँ जाके ऊ देवकली के बाँहि थाम्हि लेसु आ अपना दूनों बेटन का सँगे परिवार आ गाँव–समाज के दरकिनार करत निकलि भागसु– सभका निगाह से दूर – बहुते दूर।

लोग के ठकचल भीड़ देखिके उन्हुका आँखि में ऊ दिन अचके घूमि गइल। उहँवों ओह दिने अइसहीं खचाखच लोग–बाग जुटल रहे। उहँवाँ के मुखिया गरजत रहे। पंच गलफर फारि–फारि के चिचिआत रहलन स। सभकर खिसि सातवाँ आसमान प जा चढ़ल रहे। ओह इलाका में ओइसन अनर्थ! तमाम लोग एक–दोसरा के मुँह देखिके मजा लेत रहे। देवकली के घिसिया के सभा में हाजिर कइल गइल रहे। ऊ पाप कइले रहे, जवना के सजाइ ओकरा भुगुते के रहे। अमरेश ओकरा सँगे छल कइले रहे। ओह दूनों के खुलेआम चलत पियार–मनुहार, रात–बिरात बेहिचक मिलल–जुलल आ साँझ–सवेरे एके सँगें घूमल–टहरल। दूनों अड़ोस–पड़ोस के आँखिन के किरकिरी रहलन स। बाकिर जब बियाह के चरचा छिड़ल, त एगो निसबद रात खा अमरेश एगो चिट्ठी छोड़िके हरदम–हरदम खातिर नव–दू–एगारह हो गइल, ओकरा के दगा दे गइल। अपना पाती में ऊ आपन अलचारी जाहिर कइले रहे कि ओकरा बियाह–शादी में इचिकियो बिसवास नइखे, कि ऊ ताजिनिगी छुट्टा साँढ़ बनल रहल चाहत रहे।

देवकली खत बाँचिके आपन कपार पीटि लेले रहे। अमरेश ओकरा से बिसवासघात जे कइले रहे! ऊ चिकरि–चिकरि के, चिचिआ–चिचिआ के पूछल चाहति रहे कि आखिर ओकरा होखे वाली संतान के का होई, कि ओकरा पाप के का कवनो दीगर मरद कबूल करी? बाकिर ऊ कहबो करे, त केकरा? कवन मुँह लेके?

देवकली से अधिका महल्ला के लोगे फिकिरमंद हो उठल रहे। ओकरा के ढाढ़स बन्हावे आ कवनो विकल्प ढूँढ़े के के कहे, अब त नवही से लेके बूढ़ ले– सभ केहुए ओकरा के कोसे लागल रहे। सभकर नफरत–भरल शरारती नजर ओकरा देह के टोह लेबे खातिर रेंगनी

के काँट–अस गड़ि जात रहे आदेवकली भीतरे–भीतर तिलमिला उठति रहे। एक–एक कऽके सभकर चलावल सवालन के तीन ओकरा जिगर के छलनी कऽ देत रहलन स। तब कवन माई के लाल ओह पापिन के हाथ थाम्हित? राधा बनिके किसुन–कन्हैया का जबरे रास रचावत त खूब रुचत होई, अब के ओकरा पाप के हकदार होई? बोलु!.... आ तब महल्ला के बदनाम करे वाली देवकली के सजाइ भुगुते बदे सभा में घिसिया के ले आइल गइल रहे। सभकर एके गो सवाल रहे कि ओकरा होखेवाला बुतरू के बाप के रहे?

छितेसर काका अतीत से वर्तमान का ओरि पलटलन। गरमागरम बहस जारी रहे। गाँव के तमाम तमाशबीन लोग 'चिरई के जान जाय, लइका के खेलवना' कहाउत के चरितार्थ करत रहे।

छितेसर काका के ऊ दिन फेरू बरबस इयादि के झरोखा पर नाचे लागल। उहँवों के सभा में लोग अइसहीं दहाड़त रहे। दोसरा के अलचारी में खूब दहाड़े आवेला पंचन के। ओह दहाड़ के गूँज थाना में चहुँपल रहे। तब छितेसर काका ओही था में सिपाही रहलन। उन्हुकर रोआँ–रोआँ गनगना उठल रहे, नस तना गइल रहे। एगो अबला के आबरू के चीर खींचे वाला दुरजोधन! एगो मरद ओकरा से दगाबाजी कइलस त का इहाँ के बाकी नवही हिजड़ा बाड़न स? उन्हुका लाल–लाल आँखिन में जइसे खून के थक्का जमि गइल रहे। दूगो सिपाहियन का सँगे जब ऊ मोंछि अइँठत सभा में हाजिर भइलन, त ओह घरी देवकली खातिर लोहा के छड़ लाल कइल जात रहे।

ऊ मोंछि पर ताव देत दहड़ले रहलन, "एह लइकी के पाप के भागी ई खुद ना, बलुक ऊ छिछोरा अमरेशवा बा, जवन एकरा के दगा देके चम्पत हो गइल। एगो हिजड़ा त एह अबला के इज्जत का साथे खेलवाड़ कऽके गइबे कइल, बाकिर हम त समुझत बानीं कि इहवाँ बइठल–ठाढ़ तमाम जौजवान हिजड़े बाड़न स।" फेरु ऊ आपन आखिरी निरनय सुनवले रहलन, "देवकली के हाथ थाम्हे खातिर हम तय्यार बानीं। अगर ऊहो राजी होखे त बोले! आजुए साँझ खा बियाह के मुहूरत बा।"

छितेसर काका के बात सुनिके सभ केहू हैरत से उन्हुका तरफ टुकुर–टुकुर एकटक देखे लागल रहे। कतहीं ई सिपहिया पगलाइल त नइखे? मुखिया जी खूब समुझवलन–बुझवलन कि देवकली पापिन ह, कि अमरेशवा का साथे खुलिके ई मुलछर्रा उड़वले बिया, कि ऊ एह कुलटा के हाथ कतई मत थाम्हसु। बाकिर ओह लोग के मए तीन निष्फल साबित भइल रहे। छितेसर काका अपना बात पर अटल रहलन आ बिलखत देवकली उन्हुका गोड से लपिटा गइलि रहे।

साँझ खा जब छितेसर काका के बियाह के बरियात सजि–धजि के निकलल, त सउँसे कसबा में उन्हुके बहादुरी के चरचा छिड़ल रहे। सड़क के एँड़ा–गोएँड़ा ठाढ़ मरद–मेहरारू उन्हुका के देखे खातिर आतुर रहलन।

छितेसर काका ओह घरी ई भुलाइए गइल रहलन कि उन्हुकर बियाह हो चुकल रहे, कि उन्हुकर तीन–तीन गो बेटी रहली स। लरिकाइएँ में उन्हुकर शादी रचावल गइल रहे। ललिता से कब उन्हुकर गँठजोड़ भइल, कब गवना भइल, उन्हुका इचिकियो इयाद ना रहे। भला दस–बारस बरिस के उमिरियो कवनो बियाह के उमिर ठहरल! नोकरी लागल, त ऊ केहू के अपना बियाह के बाबत तनिकियो भनक ना लागे दिहलन। पुलिस इंक्वेरियो में ऊ सभकरा के समुझा–बुझा देले रहलन। सभका निगाह में ऊ कुआँरे रहलन। एह से जब शादी रचावल जात रहे, त दुलहिन देवकली के नाथ एहसान से नवल जात रहे। छितेसरे काका नू उन्हुकर आबरू बचवले रहलन, नाहीं त पता ना ऊ कवना घाटे लगिती, भगवाने मालिक रहलन।

जब ऊ हवलदार होके रिटायर हो गइल रहलन, त देवकली आ दूनों बेटा उन्हुकर गाँव देखे खातिर ललचत रहलन स। ऊ बतवले रहलन, उन्हुकर शानदार मकान बा, नोकर–चाकर बाड़न स, चार–चार गो बैल बाड़न स, दुधारू गाई बिया, खेती–बारी बा। कइसन होई ऊ गाँव? कइसन होइहन उहाँ के लोग? जब ऊ सपरिवार गाँव खातिर पयान कइलन आ खेत–बधार नियराइल, त लरिका अचरज से एने–ओने ताके लगलन स। सभ किछु बड़ अजगुत लागत रहे। गाँव के छटा, साँचो कतना मनभावन रहे! बाकिर गाँव में ढुकते लोगन के किसिम किसिम के बेतुका सवाल, व्यंग–बान से घाही करे वाली बात दिल–दिमाग में बेरि–बेरि हंट करे लागल रहली स।

ललिता के झुर्रीदार सूरत देखिके छितेसर काका के पहिला हाली एहसास भइल रहे कि ऊहो त उन्हुका साथे बिसवासघाते कइले रहलन। ठीक अमरेशवे लेखा। तीन–तीन गो बेटी जनमाके फेरू कवनो खोज–खबर ना लिहल.... उन्हुका लागल, जइसे ऊ एगो अइसन नाइंसाफी कइले होखसु, जवना खातिर भगवानो माफ ना करि सकसु। साँचो, अदिमी जोश में आके होश–हवास ले गँवा बइठेला। बाकिर अब पछताए होत का....!

छितेसर काका का सँगे देवकली के देखते ललिता के तन–बदन में आगि लागि गइल रहे। अपना सोझा सवति के साक्षात् खाड़ देखिके ऊ बिखिधर नागिन नियर फुँफकार छोड़े लागल रहली। देवकली जइसहीं

गोड़ छूए खातिर आगा बढ़ली, ऊ आपन गोड़ झटहेर देले रहली। मुकेश आ सुरेश कबो एक–दोसरा के, त कबो अपना माई–बाप के हक्का–बक्का होके देखत रहलन स। उन्हनीं के अचरज होत रहे कि पापा उन्हनीं के कहवाँ ले आके पटकि दिहलन, जहवाँ डेग धरते अइसन दुरगति!

छितेसर काका अपना औकात आ समझदारी–भर ललिता के खूब समुझवलन कि अब त तीनों बेटियन के बियहा गइला से घर में उन्हुका सेवा–टहल खातिर केहू नइखे बाँचल, कि ललिता के बाद खानदान के दीया बुताए वाला रहल हा....

"त का एह सवति के बेटा हमरा घर–दुआर के हकदार होइहन स? एह नीच के औलाद, जेकरा जात–इज्जत के कवनो ठेकाने नइखे!" ललिता के लाल–लाल आँखि छितेसर काका के आँखि में धँसे लगली स।

"ई मत भुलइहऽ ललिता कि देवकलियो का साथे हमार शादी वैदिक रीति–रिवाज, मंत्रोच्चार आ नगरवासियन के मौजूदगी में धूमधाम से भइल रहे। ई दूनों लइका हमार आपन बेटा हउवन स– ठीक तहरा तीनों बेटियन लेखा...." एकाएक छितेसर काका खुद के सम्हारि ना पवलन आ कड़कि के जवाब दिहलन।

"त का मुकेशो तहरे बेटा हऽ? दोसरा के पाप के आपन कहत शरम आवे के चाहीं, छितेसर!" एकाएक उन्हुकर बड़का भइया धड़धड़ात भीतर आइल रहलन आ बात काटि के दहाड़े लागल रहलन।

छितेसर काका के मन परल– परमेसर भइया एक हाली उन्हुका से भेंट करे खातिर शहर गइल रहलन आ उहवाँ उन्हुका बिसे में सभ किछु खुलासा मालूम हो गइल रहे।

"बाकिर हम एगो अबला के आबरू के रच्छा कइलीं, त कवन अनर्थ कऽ दिहलीं! देवकली ठगाइल रहली, ई बात साँच ह। बाकिर हम इन्हिका के कोठा पर जाए से रोकि लिहलीं, त कवन पाप कऽ दिहलीं!" छितेसर काका अपना भइया के आड़े हाथ लेत कहलन, "हम समुझत बानीं कि तूँ अइसन काहें कहत बाड़? एही से नू कि हमार ई बेटा इहाँ के जगह–जमीन में हिस्सेदार मत बने पावऽ स!"

"छितेसर! जबान पर लगाम कसऽ! गाँव में पंचाइत बा, पंच बाड़न, मुखिया जी बाड़न। उहे लोग एकर फैसला करी। हम तहरा कल्याण के बात कहत बानीं आ तूँ बाड़ऽ कि.....?" परमेसर व्यंग भरत मुसुकी काटत कहलन।

"कइसन पंचाइत आ कइसन पंच?" छितेसर काका त पंचाइत के इंसाफ से पहिलहीं से वाकिफ रहलन।

"ना छितेसर! गाँव में रहे के बा, त पंचाइत के मानहं के परी। पंच परमेसर होलन।" पाछा खाड़ सुरेन्दर चाचा के आवाज कँपकँपाइल रहे।

..... आ छितेसर काका के लाख आनाकानी के बावजूद आजु पंचाइत बइठिए गइल रहे। सभ लोग कौतूहल भरल नजर से एक–दोसरा के देखत रहे। सभ केहू के फैसला के इंतजार रहे।

खैर, छितेसर काका के आखिर जवना बात के अनेसा रहे, उहे भइल। पंच देवकली के रखेलिन साबित कऽ दिहलन आ ओकरा के लरिकन समेत गाँव से निकाल–बाहर करे के फैसला सुना दिहलन।

"ठीक बा, हम अपना लरिकन का सँगे अबहिएँ चलि जात बानीं। बहिन! राउर सोहाग अमर रहो। इन्हिकर खेयाल राखबि। खेत–बारी, घर दुआर–सभ रउरा के मुबारक होखे। कतहीं भिखियो माँगि के त.. ....." देवकली के आँखिन में एकाएक बाढ़ आ गइल।

"ना–ना देवकली! अइसन कबो ना हो सकेला। हमार अब इहवाँ के बड़ले बा! हम ललिता के नजर में गिरि चुकल बानीं। इहाँ हमार जिनिगी एको छन ना टिकि सके। हमहूँ तहरा सँगे चलब। अबहिएँ चलऽ!" छितेसर काका आपन आँखि पोंछत देवकली के बात काटि के आपन आखिनी निरनय सुनवलन।

"ना, रउआँ हमरा के एह हाल में छोड़िके मत जाईं। रउआँ के हमार किरिया!" ललिता रोवत–बिलिखत अचके छितेसर काका के गोड़ से लपिटा गइली।

छितेसर काका गोड़ छोड़वलन, दूनों बेटन के हाथ थम्हलन आ गमछी से आँखि पोंछत देवकली का साथे चलि दिहलन।

मुखिया जी आ पंच खाड़ होके अचरज से उन्हुका पर निगाह टिका दिहलन। किछु लोग पाछा से व्यंग–बोल फेंकल, बाकिर ऊ ओह बातन के इचिकियो परवाह ना कइलन।

थोरकी दूर आगा बढ़िके ऊ एक हाली पाछा मुड़िके देखलन। ललिता उन्हुका के एकटक ताकत ठाढ़ रहली। उन्हुकर झुर्रियन से भरल चेहरा लोर से सराबोर हो गइल रहे। छितेसर काका समुझि ना पावत रहलन कि ललिता के आँखि के लोर सवति के गाँव छोड़िके जाए के खुशी में बहत लोर रहे आ कि मरद के वापस लवटि जाए के वियोग में विपदा आ बिछोह के लोर? चिरई के जान जाय.... ●●

❑ शकुंतला भवन, सीताशरण लेन, मीठापुर,
पो०बा०नं०–115, पटना

कहानी

उल्लंघन

रामयश अविकल

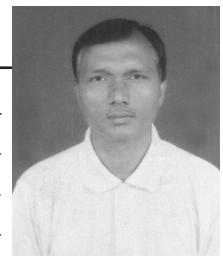

बात तीस बरिस पहिले के हऽ। ओह समय आ अभी के समय में अतना बदलाव भइल बा कि पुरान–नया के कवनो मेल नइखे। बस एगो तिलके–दहेज के बेमारी आजो ओइसने बा, जइसन पहिले रहे। तनी सा रूप–रंग बदल गइल बा। ई बेमारी खतम होखे के कवनो उम्मेदो नइखे। बस केहू के बेटी के बिआह के बेरा बुझाला–तिलक दहेज के प्रथा ठीक नइखे। ई खतम होखे के चाहीं। बेटा के बिआह के बेरा ई प्रथा खूब नीक लागेला अउरी बढ़ चढ़ के माँग होखे लागेला। बलुक प्रदर्शन क फजूलखरची आ चमक–दमक अउर–बढ़त जाता।

लइका खातिर बियाह में तीन गो चीज के मांग होत रहे। साइकिल, घड़ी आ रेडियो। साइकिलो में रेले, हरकुलिस, आ एटलस। घड़ी में एच.एम.टी. सोना रीको आ सीको। रेडियो में फिलिप्स, मरफी आ बुश। बेटिहा पहिलहीं से ई तीनों चीज खातिर मन बना के राखत रहे कि ई देबहीं के परी ना त लड़िका रूस जाई।

जीउत के पहिलवँठे बेटा रहे। ओकर नाँव सूरज धइले रहन। जइसन नाम ओइसने काम। फुटबाल के अतना बढ़िया खेलाड़ी कि जिला में ओकरा नाम के तूती बोलत रहे। मैदान में गेना धऽ लेबे त हाहाकार मचि जाय। लइका सेआन सभे ओकरा के चीन्हत रहे। पढ़लो में अपना क्लास में अउवले रहत रहे।

सुरज पऽ से एक पीठिये दू गो बेटी रही सऽ जीउत के। बड़की बेटी के बिआह तीन बरिस पहिलही हो चुकल रहे। ओह बेटी के बिआह के बेरा ढेर–तूलतलामत ना करे के परल। एगो दूर–दराज के हितई में सुनर–सुभेख गुने बात बनि गइल। बाकिर छोटकी बेटी के बेरी बर खोजत–खोजत उनुकर पनही टूट गइल। कतहीं बर मिले त घर ना, आ घर मिले त बर ना...। जब दूनो मिल जाय त तिलक के भारी डिमान्ड सुन हिआव बइठ जात रहे। जीउत एक दर्जन से अधिका लइका देखलें, बाकिर सटाव कतहीं ना भइल। बात बनत–बनत बिगड़ जाय। करवट बदलत बिहान होत रहे। रात के नींद, दिन के चैन उनुकर दूनों हेरा गइल रहे। कहाव हऽ कि नामो के असर परेला। जीउत एह बेटी के नाम आसतुरनी धइले रहन, काहे कि दूनो बेकत के आसरा रहे कि अबकी बेटा होई आ हो गइल बेटी। आस टूट गइल। एही चलते एकर नाम आसतुरनी पर गइल। ईहो कहल जाला कि दुनियाँ में मोटा–मोटी सभे आपन जोड़ा लेके आइल बा। देर होला अन्हेर ना होखे। जेकर प्रारब्ध जहवाँ ले जाई, ऊ ओहिजे जाई।

जीउत के साढ़ू बटेसर एगो लइका बतवलें, आ कहलें– "जाके देख लीं। पसन पर जाई त सबकुछ हमरा पर छोड़ देबि। जीउत के एह बात से कवनो जादा खुशी ना भइल। ढेर लोग एहि तरी बात कहल बाकिर भइल कुछुओ ना। खोदा पहाड़ निकली चुहिया....। बेटी के बात रहे.... मन ना माने। आजु–काल्हु ना करस। तड़के बेटहा के दुआर पर हाजिर हो जासु।

बटेसर जवन लइका बतवले रहन ऊ जीउत के गाँव हरनाथपुर से तीन कोस दूर परत रहे जगनपुरा। जाए–आवे के कवनो साधन ना। जेठ के महीना रहे। भोरहरिये उठि के तइयार होत होत अकास में लाली धऽ लेले रहे। घर से निकल के डेगरगर चललें। तीन कोस दूर उहो घाम में पैदल। डेगरगर चलला के बादो पहुँचत–पहुँचत नव बजि गइल। गाँव में नाम पूछत–पूछत बेटहा रामधेआन के दुआर पर पहुंचलें– "रामधेआन जी भेंट करे के बा।"

– "का बात हऽ? कहां से आइल बानी....?" हमहीं रामधेआन हईं।

– "हमार साढ़ू बटेसर भाई रावा लगे भेजले बानीं। आ बतवलें बानी कि राउर लड़िका बियाह जोग बाड़े। हमरो एगो बेटी बिया ओकरे खातिर रउरा दुआरे आइल बानी।"

बटेसरो रामधेआन के खबर ना कर पवलें रहले एगो आदमी लइका देखे खातिर जा तारें। खुद जीउते सब बात बतवलें।

रामधेआन कहले– "लइका के बिआह करे के बिचार त जरूर बा बाकिर एह साल ना अगला साल।"

– "कवनो बात नइखे। हमरो अकुताई नइखे। राउर जब इच्छा होई तबे करबि। तनी बबुआ के देखाइ दीं।" जीउत कहले।

– "आइले बानी तऽ अइसे कइसे जाइबि, लइका देखिए के जाइब, बाकिर पहिले मुँह हाथ धोइ के पनपियाव त करीं।" रामधेयान संस्कारवश कहले– "एकरा बिना कुछ ना बिगड़ी पहिले देखा दीं। बादे में ई सब होई।"

रामधेआन कहलें – "गरमी के दिन बा पहिले पानी पीहीं।"

बाकिर जीउत आपन बात पर अड़ल रहेले। रामधेयान घरे खबर पेठवलें लइका के आवे खातिर। बतकही होत रहे तबले लइका आ गइल। जीउत लइका

देखलें। छव फीट के लाम–लहकार गेहुआ रंग बड़ा सुभेखगर लइका रहे। ना पसन होखे के बाते ना रहे।

पनपियाव का बाद जीउत लइका से नाव–गाँव पढ़ाई–लिखाई के बारे में पुछले। लइका आपन नाम किसन बतवलस। जीउत लइका के हाथ में एक सौ एक रोपया सगुन धरवलें।

थोरे देर रामधेआन से अउरी बतकही भइल। लइकी देखे खातिर जीउत हाथजोरी कइले। रामधेआन अभी लइकी देखे के फेर में ना रहन, बाकिर जीउत के अधिका निहोरा से ऊ तइयार भइले। एकरा बाद जीउत घरे लवटले।

अबले दुपहरिया हो चलल रहे। कड़कड़हटि घाम खरवरिया नाचत रहे। लूक अतना जोर चलत रहे कि चले के हिआव ना करत रहे। देहि झोकरा जाए। चढ़ल दुपहरिया में परल रहन जीउत। दोसर कवनो हितई रहित तऽ दुपहरिया बिताइये के चलतें। माह पैंतर में ऊ परल रहन। निअरा ना कवनो गाँव–गिरान ना पेड़ रुख रहे।

घरे आवत–आवत मिजाज लुकहर गइल। जीउत के घरनी एक लोटा पानी दिहली आ कठवत में गोड़ धोवली। जीउत एक सुरकिये एक लोटा पानी पी गइलें। ओहिजे खरहरे बंसखट पऽ पसरि गइलें। थोरे देरी में मिजाज अहथिर भइल तऽ रामरती पूछली– "का भइल? लइका कइसन बा? पसन पड़ल...?"

"ठीके बा.... आसतुरनी लायक जोग लइका बा।" जीउत कहलें। बिहान होते जीउत सुरज के बटेसर लगे भेजके लइका पसन परला के खबर पेठवलें। इहो मालुम भइल कि अगिला एतवार के लइकी देखे आई लोग, ओह दिन ऊहो आ जइहें।

बटेसर एतवार के दिन सबेरहीं जीउत लगे जुमि गइलें। सब इंतजाम करि के दूनो साढू दलानी पर बइठ के बतिआवते रहे लोग, तबले चार आदमी के संगे रामधेआन पहुँचलें। राम–सलाम भइल। बटेसर, रामधेआन से हाथ मिलवलें। बटेसर आ रामधेआन एके इसकूल में पढ़त रहन जा। दूनों जन संघतिया हऽ लोग। बटेसर डाकिया के काम करेलन। रामधेआन के गांवे चिट्ठी बाँटे खातिर आवत–जात रहन बटेसर। गरमी के दिन रहे हाथ–गोड़ धो के मुँह में मीठा डाल के पानी पीअल लोग। तुरंते सौंफ के शरबत आइल सभे पीउल। रामधेआन लइकी देखे के निहोरा कइलें। आसतुरनी के रंग–रूप बड़ा सुभेख रहे। दोहरा बदन लाम–लहकार ऊपर से गोराई रंग सुनरई में अउरी चार–चाँद लगावत रहे। आसतुरनी के देखते रामधेआन कहले– "जवन सोचले रहीं तवन मिल गइल।"

लइकी के नाव–गाँव आ पढ़ाई के बारे में पूछलें। ओह समय लइकी के पढ़ावे के ढेर चलावा ना रहे। गरीब आ साधारण खाता–पीता घर के लइकी विरले पढ़त रहीं सऽ। गाँव के कुछुए जलोग लइकी के इसकूल भेजत रहे। आसतुरनी गाँव के मीडिल इसकूल में सातवां तक पढ़ के पढ़ाई छोड़ देले रहे। रामधेआन लइकी के एक सौ एकावन रोपया सगुन देले। आ जाय के कहलें। जीउत लेन–देन के अटकर लगावे खातिर पूछलें– "हमरा का–का तइयारी करे के परी? रउरो कुछ डिमान्ड बा?"

जीउत कहले– "ठीक बा दू दिन के बाद हमनी के आईब जा।"

रामधेआन कहलें – "बड़ा बढ़िया बा आईं.... स्वागत बा। ओहिजे बतकही होई।"

एह बीच में जीउत आपन खास हीत–नाता जे रहे संगे चले खातिर खबर पेठवलें।

जीउत आपन आदमी लेके रामधेआन के दुआर पर पहुँचलें। बटेसर बहरे–बहरे उहां पहुंच गइल रहन। पानी–पतर पीअला के बाद जीउत बटेसर से बात आगे बढ़ावे के कहलें। एने–ओने के बतकही होत रहे तबले बटेसर कहलें– "जवन काम खातिर आइल बानी जा तवने होखे। जवन राउर मांग बा बोलीं का लेबि, कतना लेबि?"

"का मांगे के बा? जवन एघरी चलत बा तवने देबि!" रामधेआन कहले–

"खोल के कहीं हमरा सकान होई तबे न देइब!" जीउत पुछले–

"आरे ओही हिसाब से तिलक चढ़ाइब कि हमरा शिकायत ना होखे। लइका खातिर रेले साइकिल रीको घड़ी आ फिलिप्स के रेडियो जरूर चाहीं। एह में कवनो कटौती ना होखे के चाहीं।" रामधेयान आखिर खुलले।

जीउत तीनों चीज देबे के सकरले तब्बो पुछले, "नगदो बता दीं कतना लेइब?"

"राउर लइकी हमरा जंच गइल बिया। जाई एकावन हजार दे देबि।" रामधेआन कहले।

कहावत हऽ कि– थूक चाटला से पिआस ना बुताई। जीउत अधीर होत मिमियइले– "हमरा के उठाईं, राउर शरण में आइल बानी। बेटिहा के दिहला से धन ना होखे।"

– "तऽ रउरे कहीं का देबि?" रामधेआन मुस्कियइले।

"हमहूं कुछ कहीं?" बीच में बटेसर टोकले।

"काहें ना जरूर कहऽ।" रामधेयान कहलें

"एकइस हजार पर फाइनल करऽ" रामधेआन भाई

'रोपये–पइसा सबकुछ ना होला। अउरी कुछ देखे के चाहीं। बेटिहा के उबारल पुन्य के काम हवे।' बटेसर आपन राय दिहले।

"जा जवन कहि देलऽ तवन मानही के परी।" रामधेआन कहलें। फेर जीउत आ बटेसर के निहोरा पर रामधेआन एही साल बिआह करे के तइयार हो गइले। पंडित बोलाइ के असाढ़ में दिन धराइल आदूनो जना बिआह के तइयारी में लागि गइल लोग।

दिन नियराइल त जीउत समान कीने खातिर सूरज के साथे आरा गइलें। बरतन–बासन पहिलहीं से रामरती गते–गते कीन के रखि देले रही। कपड़ा–लाता के साथे– तेल, डालडा, घड़ी, साइकिल, रेडियो किनाइल। सब समान लेके बस पड़ाव पहुँचल लोग। अचके में सूरज के इयाद आइल कि साइकिल के रसीद दोकाने पर छूट गइल। "तूँ सब समान लेके एहिजे बइठऽ आ साइकिल पर बान्हल समान के धेआन रखिहऽ।" कहि के सूरज रसीद लेवे खातिर चल गइले।

थोरिके देर में एगो लइका आके जीउत के गोड़ छू के कहलस– "गोड़ लागत बानी चाचा... का हाल बा? एहिजा काहे बइठल बाड़ऽ?"

"आरे आसतुरनी के तिलक के समान कीनके आइल रहीं जा। साइकिल के रसीद दोकाने पर छूट गइल बा, ऊहे लेवे खातिर सुरजा गइल बा। तिलक के बात बा रसीद के मांग होई तऽ कहां से दिआई?" जीउत सोझिआ नियर सब बता दिहलें। फिर पुछले– "तूँ के हवऽ बबुआ?"

"चाचा चीन्हत नइखऽ...? तोहरा घरे केतना बेर गइल बानी।" लइकवा कहलस।

जीउत पूछलें– "तुहूँ सुरजा सँगे गेना खेलेलऽ....?"

"हँ! चाचा ओकरे सँगे खेलीला। सुरजा हमरा से कहले रहे कि अइहे समान कीने के बा। बाकिर हमरा आवे में लेट हो गइल हा। साइकिल किनाइल त चढ़ि के चाल देखलस हा सुरजा...?"

"ना हो कहां बेंवत लागल हा....? सामान अतना लदाइल बा कि पैदल आवे के परल हा...।" जीउत कहले।

"हे तेरी के! चला के देख लेवें के चाहीं नूं...?" लइका कहलस। घरे चल जाई आ कवनो दिक्कत होई तऽ दुकानदार बदली...? ना बदली। चाचा हम चला के देख लेत बानी कि कइसन चलत बिया?

"समनवा खोल के रख दे बबुआ तब चलइहें.... ना तऽ तेल, डालडा बा गिर जाई।" जीउत कहलें।

लइकवा एक दू फेरा निअरे चलवलस, आ कहलस– "बड़ा कड़ा चलत बिया चाचा... आ खट–खट के आवाजो करत बिया।"

अतने कहि के झटके से रोड पर निकल गइल। कुछ देरी भइल आ साइकिल लेके ऊ ना लवटल त जीउत के मन घबराये लागल। कहाँ चल गइल? समान छोड़ के कइसे ओके देखीं...? अपने मन में बुदबुदाय लगलें। ओही घरी सुरज आ गइल, पुछलस– "साइकिल कहां बा?"

जीउत सब बात बतवलें। कहलन– "तोर संघतिया बतावत रहे आ ईहो कहलस कि सुरजा सँगे गेना खेलीला।"

सूरज बस पड़ाव आ रोड़ पर सगरे देख लेलें, कतहीं ना लउकल ऊ लइका। ऊ वाकिया समुझ गइल आ कहलस– "साइकिल चल गइल। कवनो ठग रहे लेके भाग गइल।"

सुन के जीउत के कटले देहि खून ना। ओहिजे थसकि गइलें। "अब का होई? का तिलक चढ़ी...? कहाँ से अतना पइसा आई कि फेर साइकिल किनाई? कवन मुँह लेके जाइब तिलक चढ़ावे?" जीउत बड़बड़ाए लगलें। कुछ लोग जुट गइल। समझावल लोग। सांझ के बेरा हो गइल आ आखिरी गाड़ी लागल रहे। सुरज हाली–हाली समान बस पऽ लादि के जीउत के बांह धऽ के गाड़ी पर चढ़लवस। गरीबी आ लाचारी आदमी के बेबस बना देला। जवना से आदमी ना रो पावे, ना हँस पावे। घरे पहुँचते सुन के रामरती रोवे लगली। टोला भर के मरद–मेहरारू जुट गइल। सब लोग अपना हिसाब से समझावे लागल– "जवन भइल तवन भइल। अब रोवे से समान लवटि के ना आई। रसीद बा नू...! देखावल जाई बेटहां के। मानी ना....? ना मानी त देखल जाई। अब हीत होखे जात बा। समझी ना...? अब आगे के तइयारी कर लोग।"

जीउत के हूक हो गइल। रात के खाना ना खइले। आधा रात के बाद तबियत खराब हो गइल। अपने में बुदबुदाये लगले– "साइकिल कहाँ से आई? का चढ़ाइब? कवन मुँह लेके जाइबि तिलक चढ़ावे।" होत बिहान सुरज डॉक्टर से देखवलस उनुका के। सुई–दवाई दिआइल। "इनिका के आराम करें दीं जा।" कह के डाक्टर चल गइलें।

एके दिन बाद तिलक के दिन रहे। सब तइयारी हो गइल रहे। बाकिर जीउत के तबियत जस के तस बनल रहे। साइकिल गायब होखे से आ गरीबी के मार से खटिया धऽ लेले रहले जीउत। रीन–महाजन लेके बिआह के तइयारी कइले रहन, बाकिर तिलक

जाए के हालत में ना रहल। सूरज आग–पाछ में परल रहे। आखिरस दिल–दिमाग अहथिर करके तिलक चढ़ावे गइलें।

पानी पिअला के बाद तिलक चढ़ावे के बुलाहट भइल। नगद पहिलहीं दिया गइल रहे। सब समान चढ़ल। बाकिर साइकिल त रहे ना।

रामधेआन पुछलें– "साइकिल का भइल? हम कहले रहीं कि लइका के समान में कटौती ना होखे के चाहीं। बिना साइकिल के बिआह ना होई।"

सुरज सब घटना बता देले आ कहलें – "बाबूजी एही चलते बेमार बाड़ें। आज तिलको के दिन ना आ पवलें। रसीद देखीं साइकिल के।"

'साइकिल चढ़ावे के ना रहे तऽ कांछ के घरे रहि गइलें।' रामधेयान गुरमुसाइल बोलले।

"हम झूठ एकदमे नइखीं बोलत। हमार बात के विश्वास करीं।" सुरुज अनुनय कइले।

सुरज के बात रामधेआन माने के तइयार ना भइलें। बहुत लोग समझावल बाकिर रामधेआन टस–मस ना भइलें। बेटहा के शान उनुका के आन्हर आ बहिर दूनो बना देले रहे। "सब समान उठा के ले जा।" ऊ खीस में बोल परले।

दहेज के शान आ बड़प्पन के नशा आदमी के निम्नन जबून के परख खतम कर देला। गरीबी अइसन चींज हऽ कि आदमी के हाथ–गोड़ रहते, कबो–कबो लाचार बना देला।

रामधेआन किसन के चौका प से उठे के कहलन। सुन के सुरज डबड्बा गइले। लोर ढरक गइल आँखि से। किसन सब घटना के मूकदर्शन बनल रहन। बाबूजी के जिद से उनुका अनस लागत रहे। सूरज के ढरकल लोर सच्चाई बेआन करत रहे। किसन उनुकर लाचारी समझत रहन। एगो समान खातिर बेबस इंसान के बेइज्जत कइल उनुका बड़ा जबून लागत रहे। बाकिर अलचार रहन।

रामधेआन फेरु कहले– "चल उठ किसना चौका पर से, तोरा के कतना बेर कहीं। अब ई बिआह ना होई।"

किसन बाबूजी के ब्यवहार देख के खीसिन मात गइलें। आज तक बाबू–माई के जबाब ना देले रहन ना कवनो बात के उल्लंघन कइले रहन। मन में सोचलन कि बाबूजी के बात के उल्लंघन करे से एगो लाचार इंसान के मान–सम्मान बाँचि जाई तऽ कवनो पाप ना कहाई। ऊ बइठले बइठल कहले– "बाबूजी अब बस करीं। चुप हो जाईं। ढेर हो गइल।" फेर पंडित जी से आगे के बिधि करे के कहलें।

रामधेआन के भक् मार देलस। आज तक जबाब ना देले रहे किसन। आजु का हो गइल एकरा? उनुका अपने बेइजती बुझाये लागल। अपना के सम्हारत उहाँ से चल गइलन। तिलक चढ़ गइल। बाबू–माई खीस में मातल रहन। गोड़ लगलस तऽ गोड़ हटा लिहल लोग।

समाज में किसिम–किसिम के लोग होलें। केहू कहे कि घोर कलजुग आ गइल। केहू कहे भठजुग आ गइल। ई लइका त समाज में अपना बाप के मूड़ी झुका देलस। बिआह करे खातिर बाप के कहल ना मनलस। केहू–केहू कहे कि बड़ा नीक कइलस बाकिर ढेर लोग किसन के एह खातिर सराहल।

हमरा ई पुरान घटना आजु फेर मन पर गइल। ओघरी दहेजुई साइकिल खातिर किसन के बियाह ना रुकल बाकि आजु बेटिहा के ना जाने कवना–कवना चीजु खातिर बेइजती आ दुर्दशा झेले के परत बा। केतना के मोटरसाइकिल, कार खातिर सजल बरात लवट जातिया। किसुन नियर केतना लड़िका एघरी लउकत बाड़न? ••

❑ पकड़ी गैस एजेन्सी के दक्षिण, पो.-
पकड़ी, आरा, भोजपुर (बिहार)

कहानी

फो..रन - सी.. रन

सुमन सिंह

''ए लइका लोग का खेलत हउवा जा ? किरकिट ..?''

''जब देख ही रहीं हैं तो पूछ काहें रहीं हैं दादी'' क्रिकेट टीम क सबका ले छोट सदस्य खुनुसा के बोललस।

''ए बचवा काहें पिनकत हउवा, पुछते न हईं खाली कि खेल्ले– खेलावे के कहत हईं आँय..।'' दादी अइसे तुनक के तरहत्थी नचावत कहलीं कि लइकन के हँसी आ गयल।

''अरे दादी, इस उम्र में क्रिकेट खेलेंगी तो राम–नाम सत्य (सत्य के धीमे से बोलके) जपेंगी। चलो बे बॉलिंग करो। फालतुए में तुम लोग दादी के साथ टाइम पास कर रहे हो.. इनका तो रोज का काम है। पता नहीं का दुसमनी है हम लोग से...चलो बे शानू, बॉलिंग करो नहीं तो गेम से आउट कर देंगे तुमको।'' बड़का भइया जवन डीलो–डौल से बड़ रहलन उनके फटकार पर गोल चौकस हो गइल बाकिर दादी आपन डहर ना धरत रहलीं एकदम बल्लेबाज के पीछे सट के खड़ा रहलीं।

''दादी हट जाइये नहीं तो चोट लग जायेगी।'' गेंदबाज परेसान होके कहलस।

''हम न जाइब अबहीं, बचवा क स्कूले क बस आयी तब जाइब। तबले हमके खेला देखे दा लोग। तोहन लोग का जानत हउवा कि हमके ई खेला ना बुझाला। अरे ऊ का नाम ह उनकर ..उहे हऊ मोटका लइकवा गेनवा के टन्न से मरिहन त एहरियाँ वाला हई सुटकहवा (लइकवा ओरी धियान से ताक के) का बचवा ! तोहार माई तोहके खाये के ना देतीं। कइसन डिंगराह होत जात हउवा हो ? दन्न से लोक लिही। ना लोकी त गेनवा एहर –ओहर छटक जायी। जबले गेनवा खोजाई तबले हईं दुनू जनी जेकरे हथवा में डंडवा ह..का कहल जाला ओके बैटवा ह, धौरिहन। हिकभर धऊर लिहन त हऊ बचवा चिचियायी, दू रन.. फो रन(फोर)..सी रन.(सिक्स).. । ठीक कहत हईं नऽ इहे न करे ला जा तोहन लोग।'' दादी के आँख में ग्यान क जोत जरत रहल अउर ओही जोत से आगी धइ के लइका लोगन क क्रोध जरत–बरत रहल।

''ये फो ..रन, सी.. रन का होता है डिंगर भइया?'' हर्ष जेके दादी डिंगर कहले रहलीं घोर विषाद में बदल गइल रहलन अउर पूछे वाला के लगल की फेफा चाँप के मुआ घलिहन। क्रोधन मुक्का तनले फुफकरलन–

''चुप्प कर रहे हो कि नहीं बे, कि अभी तुम्हारी सिट्टी–पिट्टी गुम करें ?''

''ए बचवा! सिट्टी–पिट्टी गुम त हमहनों के जमाना में बोलल जाय। अउर अक्किल गुम भी बोलल जाय। एगो अइसन खेल रहल कि ओम्मे जेकर अक्किल गुम हो जाय ऊ हार जाय अउर..अउर।'' अबहीं दादी बोलहीं के रहलीं कि उनके बचवा (पोता) क बस आ गइल। लइकन के जान में जान आइल।

''आप घर जाइये दादी, हम खेल के आएंगे...।'' दादी क हाथ छोड़ावत बचवा खेल में शामिल होवे बदे ललचे लगलन।

''अरे नाही ...नाही । भुक्खल –पियासल आयल हउवा ए बचवा, चला हाथ–मुंह धो के कुछ खा–पी आवा तब खेलिहा। के रोकत ह ..आंय।'' दादी बचवा क कलाई जोर से पकड़ले घिसिरावे लगलीं।

''बस पाँच मिनट के लिए दादी.. बस पाँच मिनट। आप घर जाओ हम आते हैं।'' पंजा क मिनट बनावत बचवा दादी से निहोरा करे लगलन त दादी तनी नरम पडलीं।

''खेल ला बाकिर पाँच मिनट से ढेर ना खेल्ले देब। हम घरे काहें जाईं, एहिजे बइठ के देखब तोहार खेल ...।'' दादी उँहा से हिल्ले क नाम ना लेत रहलीं। कुल्ह लइका परेशान। ऊ कुल बचवा के टारे खातिर कहलन स–

''अरे जाओ यार नीशू , हाथ –मुंह धो के आओ। कुछ खा –पी आओ। दादी की बात मान लो.. पाँच मिनट में का खेल लोगे यार ...दुइयो रन नाही बना पाओगे। वापस आके खेलना न आराम से ...जाओ–जाओ।'' नीशू के बात में दम बुझाइल अउर ऊ दादी के संगे जाए के तइयार हो गइलन।

''दादी सीधे घर चलियेगा। रास्ते में किसी से बात मत करियेगा.. ठीक है न ?'' नीशू दादी के समझावे –बुझावे में लगल रहलन काहें कि ऊ दादी क आदत जानत रहलन। कॉलोनी भर में केहू अइसन ना रहल जेसे दादी दू गाल बात करे के कोसिस ना कइले होखें। जे बतकही में दादिये क जोड़ीदार होखे ऊ त खूब रस लेवे बाकिर अउरी सब जान छोड़ा के भागे। केहू–केहू त उनके दूरे से देख के अनदेखा क के सरपट निकल जाय बाकिर दादी के इकुल क तनिको फरक

न पड़े। ऊ घेर–छेंक के जबले सबकर हाल–समाचार ना जान लें, तबले उनके चैन न मिले।

नीशू डहरी भर भगवान के मनावत जात रहलन कि दादी के केहू भेंटा न जाय कि एगो कॉलेज में पढ़े वाली लइकी पकड़ा गइल। दादी ओके देखते घेर लिहलीं–

''ए बाची! आपके घर कहंवाँ पड़ेला..?'' अपने में मगन लइकिया हड़बड़–तड़बड़ भागल चलल जात रहल कि अचानक से दादी के छैंकायी से घबरा के रुक गइल।

''जी ?''

''अरे पुछलीं ह कि कहंवाँ रहेलू ?'' दादी जेतने फुरसत में रहलीं नीशू अउर ऊ लइकिया ओतने हड़बड़ी में। नीशू परेशान होके कहलन–

''अरे जाने दीजिये न दीदी को दादी।उनको आपकी बात समझ में नहीं आ रही होगी ...।''

''काहें ? (कुछ सोच के) भोजपुरी ना समझेलू बाची.. आंय। त चला हम खड़ी में पूछ लेत हईं कि कहंवाँ घर परता है तुम्हारा ?'' दादी नाकी पर लटक आइल चश्मा के ठीक करत लइकिया के घुइरत पुछलीं।

''हम यहाँ अपनी दोस्त से मिलने आये थे, यहाँ के रहने वाले नहीं हैं.. हमें देर हो रही है... चलते हैं ..नमस्ते दादी जी।'' लइकिया हाथ जोड़ के भागे के फेर में रहल कि दादी फिरो घेर लिहलीं–

''ए बाची कोई टरेन छूट रही है.. तनी गाँव–नाव बतावत जा आपन..।''

''जी.. मुस्कान नाम है हमारा।'' लइकिया गर छोड़ावत बोललस।

''बड़ा नीक है। कवने दर्जा में पढ़ती हो ?''

''बी.कॉम कर रहे हैं ...अब चलते हैं दादी। लेट हो रहा है।''

''अच्छा –अच्छा। ए बाची ठाकुर हऊ कि बाम्हन?'' दादी के हर सवाल पर नीशू दू कदम आगे छटक के फिरो पीछे लवट आवें अउर उनकर बाँह खींच–खींच के चले क चिरौरी करे लगें बाकिर दादी टस से मस ना होखें।

''रुक बचवा, चलत हईं न। त बतइलू नाही बाची ठाकुर हऊ कि बाम्हन ?'' लइकिया परेसान हो गइल बाकिर बोललस–

''ठाकुर हैं ?''

''कवन गोत्र ह बाची ?'' दादी चुपाय क नाम ना लेत रहलीं। लइकिया पिंड छोड़ावत बोललस–

''हमें नहीं पता दादी जी, प्लीज जाने दीजिये अब।''

''अरे ई कवन बात कि अदिमी के आपन गोत्रो–ओत्र ना पता होखे। ठाकुरे न हऊ कि भुईंहार हऊ? बात ई ह कि आजकाल केहुवे सिंघ लिखे लगत ह। हऊ जवन मस्टरायिन हईं, ऊ त जादव हईं बाकिर लिखिहन सिंघ। बतावा भला...ठाकुरन क त बस नाम रह गइल ह। हमार अदिमी जबले जियलन तबले एहिकुल खातिर खूब जुझलन। माने जे ठाकुर ना रहे बाकिर लिखे, ओके खूब गारी–फक्कड़ दें। का मजाल कि उनके समने केहुवे अपने नाम में सिंघ लगा लेवे। बाकिर कुछ अदिमी त मनसोख न होलन....एहितरे हो सकेला तोहार बाप –दादा भुईंहार होखें आ सिंघ लिखत होखें अउर तोहके पतो ना होखे। एहि से पुछलीं ह...।'' दादी मुंह तरे अँचरा रख के हँसे लगलीं। अब लइकी क सब्र क बाँध टूट गइल। ऊ गोड़ पटकत तेज–तेज चाल चलत चल दिहलस।

''देखत हउवे निसुआ कइसे गोड़ पटकत जात हियऽ मुंहफुंकनी। हम का पुछलीं ह, इहे न कि ठाकुर हई कि बाम्हन...हमके लगत ह ऊ जदवे होई आ कि कवनो दोसर बिरादर। ठाकुर त नहिये होई, एहि से साँच बात ना सह गइल ह अउरी बनबनात भाग गइल हियऽ बनरी। अरे बनरिन नियनत चाल–ढाल बा ओकर...हमासुमा के घरे क लइकी रहतीं त दू मिनट में उनके ठीक क देतीं।'' एक त क्रिकेट खेल्ले क समय निकल गइले से अउर दूसरे दादी क ऊलजलूल बकवास सुन के नीशू के गुस्सा आ गयल रहल अउर ऊ दादी क हाथ छुड़ा के उनसे चार फाल क दूरी बनावत गाल फुलवले घरे चल दिहलन। घरे पहुँच के नीशू अपने मम्मी से हिकभर दादी क शिकायत कइलन अउर अगले दिन से बस–स्टॉप पर दादी के संग नहीं, अकेले जायेंगे क जिद पकड़ लिहलन। मम्मी समझवलीं–बुझवलीं तब्बो ना मनलन। अगिले दिन नीशू के संगे मम्मी के जात देख के दादी धवरल अइलीं–

''हम त अवते रहलीं ह बचवा के छोड़े ..काहें अकुता गइली ह दुलहिया..चला ए बचवा हाली–हाली चला नाहीं त बसिया छूट जायी।

''हम नहीं जायेंगे आपके साथ ?''

''काहें ?''

''आपके कारण मेरे सारे दोस्त मेरा मजाक उड़ाते हैं, कहते हैं देखो –देखो बकबकिया बुढ़िया आ गयी।'' नीशू मुँह बिजुका के खुनुस से उफनत रहलन।

''कवन, हऊ डिंगरहवा हमके बूढ़ कहलस ह ,चल त दू चटकन दिहीं। ओकर होस ठिकाने आवे।'' दादी नीशू क हाथ पकड़े लगलीं त ऊ झटका से छोड़ा लिहलन अउर अपने माई से सट के खड़ा होके अउरी

जोर –जोर से बोले लगलन।

''क्यों मारेंगी, क्यों मारेंगी ? आप ही न सबको पकड़–पकड़ के बात करती हैं, जाति पूछती हैं। कल उन दीदी को कितना तंग कीं। उचक–उचक के सबके घर के फूल तोड़ती हैं ..आपको पता है सब लोग आपका कितना मजाक उड़ाते हैं ? क्या –क्या नाम रखें हैं ....।'' नीशू कुछ अउरी कहे वाला रहलन कि उनकर मम्मी उनकर कान पकड़ के डँटलीं–

''दादी से ऐसे बात करते हैं ..सॉरी बोलो । चलो सॉरी बोलो।'' दरद के मारे नीशू क आँख भर आइल बाकिर ऊ सॉरी ना बोललन। दादी के नीशू के बात क बहुत बुरा लगल रहल बाकिर उनके नीशू के आँख में आँस ना देख गइल। उनके माई के डाँटत–फटकारत कहलीं–

''छोड़ा लइका क कान। माई हऊ कि कसाई हऊ.. कइसे हीरा जस लइका क कान अंइठे के तोहार हिम्मत पड़ल ह ए भाई...चला हो बचवा इस्कूले खातिर देरी होत ह।'' नीशू के छोड़ावत ऊ लेके चल दिहलीं। नीशू के अपने करनी प लाज आवे लगल। रस्ताभर दादी के चुप देख के उनके ना रह गयिल। धीमे से लजात कहलन–

''गुस्सा हो दादी.. सॉरी।'' दादी क आँख छलछला आइल। नीशू के अंकवार में भर के दुलरलीं–

''अरे ना हमार लाल। अपने सोना –मोना के बात प गोसियायिब ।'' नीशू दुलार पा के गदगद् हो गइलन–

''अच्छा एक बताओ दादी, आप लोगों से इतना बात क्यों करती हैं ?

''ए बचवा, नान्हे पर क हम अइसने हईं। जबले दू गाल केहू से बतिया ना लिहीं तबले जीव हल्लुक ना होला।''

''तो आप मम्मी से बतिया लिया करो न ?''

''तोहार मम्मी त कामकाजी अदिमी हई। कुल बतिये प हं मम्मी जी ..हं मम्मी जी कहल करे ले। ओइसहूँ ओसे त दिनवा भर बतिअइबे करीला। गऊ अदिमी हवे बेचारी...। हँ त पतोह खोजत–खोजत हमहूँ ना थकलीं, सै ठे लइकिन के काटत–छाँटत त तोहरे मम्मी के फैनल (फाइनल) कइलीं। हँ त कुल गाँव–जवार सोर हो गईल कि पतोह त भाई सरूप बो उतरलीं ह। अइसन पतोह त दिया लेके खोजलहुँ ना भेटाई।'' अपने मम्मी क बड़ाई सुन के नीशू खुस हो गइल रहलन–

''एक बात कहूँ दादी, मानोगी ?''

''बोला लाल, तोहार बात ना मानब त केकर बात मानब ?''

''आप मेरे दोस्तों अउर भइया – दीदी लोगों से मत बोला कीजिये। वे लोग आपका मजाक उड़ाते हैं तो मुझे अच्छा नहीं लगता।'' नीशू दादी क कलाई प नेह क पकड़ मजबूत बनावत कहलन।

''चला ठीक ह, ना बोलब।'' दादी नीशू के दुलारत कहलीं।

''पक्का ?''

''हं हो बचवा ...पक्का।''

''किसी और से बेमतलब बात नहीं करेंगी न?'' नीशू डहरी चलत जायँ अउर दादी के एक–एक वचन गिनवत जायँ।

''ठीक बा ना करब..।''

''किसी से जात नहीं पूछेंगी.. न ?''

''अब ई कवन बात ह बचवा कि अदिमी कुछ बोलबे ना करी। मुंह सी लिही.. एगो बात बतावा कि हम तोहार दादी हईं कि तू हमार आजा हउवा? अबहीं दस–एगारह बरीस क ना भइला आ हेतना गियान–धरम बतिआवे लगला ..आंय ?''

''सच कहूँ दादी तो मुझे भी लगता है कि आप अभी मुझसे ज्यादा बड़ी नहीं हैं।'' नीशू दादी के चिड़कावत ठठा के हँस दिहलन।'' दादी नीशू क बड़–समझदारी क बात सुन के गरब से गदगद् रहलीं। पुचकारत कहलीं–

''ना हो हमार लाल, हम तोहार दादी ना हईं ..तोहीं हमार आजा हउवा ..अच्छा जा बसिया (बस) आ गइल। टिपिन क लिहा, कुल खा जयिहा छोड़िहा नत। ठीक न...टाटा।'' हाथ हिला–हिला के दादी नीशू के टाटा– बाय करत रहलीं कि एगो लइका पिछवां से चिचिअयिलस–

''ए ! फो...रन, ए ! सी... रन । अउर ठहाका लगा के पेट पकड़ के हँसे लगल। दादी बूझ गइलीं कि उनही क मजाक उड़ावल जात ह। खुनुसा के लइकवा के फटकारे लगलीं–

''इहे कुल सहूर सिखले हउवा बड़–बड़ स्कूल में पढ़ के। घोड़ा भर क हो गइला बाकिर बूढ़–पुरनिया अदिमी से कइसे बतियावल जाला तोहार माई–बाबू ना सिखवले हउवन... आँय। तोहरे ले समझदार त हमार लाल नीसू हउवन। जा आज निसू से बादा ना कइले रहतीं त तोहके त अस बतवतीं कि जान जयिता।'' दादी वादा में बंधल बड़बड़ करत चलल जात रहलीं आ ऊ लइकवा 'फो रन, सी रन' करत, लँगड़ी कूदत दादी के पीछे लगल चलल चल आवत रहल। ••

❑ असिस्टेन्ट प्रो.(हिन्दी), डी. ए. वी.,
पी. जी. कॉलेज, वाराणसी

कहानी

चुटुर के चटकवाही

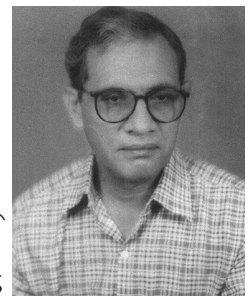

कृष्ण कुमार

चुटुर के संतान के नाम प दू गो बेटी रही सऽ। सुशीला आ रूपा। ऊ सधारण खाता–पीता किसान रहन। कसहूँ घर के गाड़ी डगरत रहे। सुशीला के उमिर बिआह लायक हो गइल रहे। तब रूपा बस बारह बरिस के रही। एक लकड़ी के लइकी रूपा, रूप–गुन दूनों से भरल–पूरल। नाम के प्रभाव उनका सुनरई के अवरू बढ़ा देले रहे। संउँसे 'बाबू के टोला' में ओकरा सुनरई के चरचा चरम प रहे। पढ़हूँ में ओसहीं तेज। गाँव के इसकूल के सतवाँ कलास के सतवाँस अव्वल लइकी। बाकिर करम फूटल रूपा के। उनकर बिआह जवान के गाँव 'परमानपुर' में तइ हो गइल।

चुटुर अपना बड़की बेटी सुशीला क बिआह परमानपुर में तई कइले रहन। बीतत समय के साथे अगुआ डेढ़िया–सवाई बतिआ के रूपा के पढ़ाई–सुनरई के बखान कऽ के बेटहा के तइआर कइलसि। आ रूपो के बिआह तइ करा देलसि। तब चुटुर से बतिअवलसि, "तू हमार लंगोटिया संघतिआ हवऽ। ना त हम एह फेरा में ना परितीं। तिलक–दहेज के हालत तोहरा–हमरा से छिपल नइखे। समय में आगि लागि गइल बा। जवन एह साल बिआह के खरचा बा, ऊ पर साल दोगुनि आ जाई। एह से चुकऽ मति। आई आम कि जाई झटहा। सुशीलवा के देवरा से रूपवा के बिआह तइ क दीं जा। देखबे कइला हा। ऊहो सुनर–सुभेख बड़ले बा। अंदाजन एके उमिर के दूनों बाड़ें स। बड़ा निकहा जोड़ी बइठीं। आ तोहरो बोझा हलुक हो जाई। एके माँड़े–भात तोहार दूनों बेटी पार उतरि जइहें स। हम ओइजा बेटहा से बतिआ लेले बानी। काल्हु होत पराते चल चलीं जा परमानपुर। सभ ओरिया के चलि आइल जाउ। उनका दूनों लइकन के एके दिने तिलक चढ़ा दिहल जाई आ एके साथे बरात बोला लिहल जाई। जिनिगी के कवन ठीक बा आ काल्हु के देखले बा? के रही आ के ना रही। बेटी करजा हई स। बेटी बोझा हई स। एहनिन से फारिग भइले में भलाई होला। आग–पाछ मति करऽ। काल्हु कवनो तरे बेटहा के घरे चलऽ। कुछुओ मति सोच। सभ पार लागि जाई...।"

"बात तऽ तू 'टू द प्वाइन्ट' कहऽ तारऽ। बाकिर एह में बाकी लागि जाता। अबहीं ऊ ढेर नबालिक बिया। अगिला फागुन आई त ऊ बारह बरिस के होई। हतना कम उमिर में बिआह...? ई उचित नइखे। आ ई, कबो ठीक ना होई...।"

"भाग मरदे! ई का तू अनरगल बतकही करऽ तारऽ? तू अबहीं ओकर बिआह कऽ दऽ। पांचि साल के बाद ओकर गवना करिहऽ। एह में का भुलाइल बाड़ऽ। गोड़ तर गरई जंताइल बिआ। अबहिं धऽ लऽ ना त तितिर उड़ि जाई...।"

"आ रूपवा ना मानी तब का कइल जाई....?"

"बड़ा बुरबक मरदाना बाड़ऽ तू...! हमार सँघतिया अइसन...! उहे ना मानी। मानी काहे ना? बेटी के अतना हिम्मत...? जब गाल पऽ लागि दू तबड़ाक, अहथिर हो जाई। तू पहिले आपन मन बना लऽ। ओकरा बाद सभ सोझिया जाई। हम बानी नूं...!"

बातूनी आ ठकुरसुहाती में अगुआ अव्वल रहे। चुपे–चोरी रूपा के बिआह फाइनल करा देलसि। इहाँ तक कि अपना घरनी से भी रूपा के बिआह ठीक करे के राय सलाह नाले पवलें चुटुर। अगुआ के बहकावा में परि गइलें। रूपा के बिआह ठीक भइला के बादे घरनी जनली। ई खबर सुनते कहे लगली, "ई तऽ रउआ रूपवा के साथे बहुते अन्याय कऽ दिहनी। अचके में घर झनझना जाई। अतना कमसिन लइकी के बिआह कइला बिनु का हरज होत रहल हा? दू–चारि साल के बादे ई काम होइत। का अकाज होत रहे। दूनों बेटी ससुरा चलि जइहें सऽ, घर में मुसरी दंड करे लागी। तनिको बिचार ना कइनी हाँ। इहे कुल्हि बेइज्जत होखे के धन्धा हऽ। कवनो मुदई–मोखालिफ पुलिस के खबर कऽ दी। डांडे रस्सा लागि जाई। अहथिर हो जाइबि। नया पऽ तेजुआ राउर सँघतिया भइल बा। बहका देलसि। बहकि गइनी। 'बाबू के टोला' के लोगन के हाल जानते हुए बरिआरी जहर घोंटि गइनी। तनिको अपना दिमाग से काम न लेनी हां। रूपवा कवनो देवालि ना फांनत रहलि हा कि रउवा हातना अकुता गइनी हाँ। अब ऊ मूड़ी झांटी त अब रउए समझे–बूझे के बा। हमरा से एकर बीच–बचवानी कइल कबो पार ना लागी। कान खोलि के साफा सुनि लीं...।"

घरनी से घिघिआत चुटुर कहे लगलें, "तू दुनियादारी से ढेर फरका बाडू। तू समझत नइखू। जिनिगी बहुते छोट बा। तिलक–दहेज के बाजार दिनोदिन आसमान छुबत जा रहल बा। काल्हु का हो जाई, ई केहु नइखे जानत। के मरी, के जीही, अपना जिनिगी में ई सभ

पार कइला के मोल हऽ। बेटी के बोझा हलुक कइले में भलाई होला। अनसात काहे बाडू? निम्मन घर–बर, बिना जूता तुरले भेंटा गइल त एह में का हरज बा....?"

"हरज काहे नइखे। घर में रस्सी रही त का ओह से फांसी लगा लिहल जाई। जरूरत मोताबिक ओकरा से खटिआ के ओरचन बनि सकऽता। हतना काँच उमिर में बेटी के बिआह होला। एह से निम्मन रहित कि रूपवा के सउरिये में निमक चटा देले रहितीं...। जीभी पऽ खइनी मलि देले रहितीं। जनमते ऊ ओरिया गइल रहित...।"

घरनी के बतकही सुनि बड़ा अफदरा में परलें चुटुर। तब ऊ कवनो तरे बड़ा अरज–विनित कऽ के हाथ–गोड़ परि के अपना घरनी के मनवलें आ अपना के बरिआर कइलें। तई सुदिन के मोताबिक दूनो बेटिन खातिर तिलक चढ़ा अइलें। अबही ले रूपा के कुछुओ पता ना चलि पावल कि उनको बिआह हो रहल बा। बड़ बहिन सुशीला के परछाहीं में लुका के अब तक के सभ काम फते हो गइल। आगे अब बिआह रहे। ना माई के हिम्मत परत रहे रूपा के जनावे के ना बाबूजी के। आखिर में बिलाई के गरदन में घंटी बान्हे के जिम्मवारी घरनी के माथे थोपि के चुटुर अहथिर भइलें।

चढ़त आषाढ़ के महीना। कहाला– 'आगिल मास आगे–आगे धावे, आधा जेठ आषाढ़ कहावे।' बाकिर बीतत समय के साथे आदमी के देखा–देखी प्रकृतिओ आपन लूर–सहूर बदलि लेलसि। बरखा के बतकही छोड़ी आसमान बदरी के एगो कतरा–कतरा खातिर घिघाइल–भुखाइल। हवो गुम–सुम। पीपर के पतई तक में कवनो हरकत ना। आधा राति बीत गइल रहे। उमस से सभे उबिआइल। केहू चैन से ना। सभे बेचैन। केहु करवट भांजत, त केहू महटिअवले रहे। तब चुटुर अपना घरनी के साथे घर में सुतल रहन आ दूनों बेटी सुशीला आ रूपा अँगना में बँसखट प पटुआइल रही। चुटुर सोचलें बेटिया सुतल होइहें सऽ। तनिको खुर–खार ना। एह से घरनी से बतकही शुरू कइले– "रूपवा के सभ बात बता देले बाडू..?"

"..... का .....?"

"चिहा तारू....? दू दिन बाकी बा ओकर बरात आवे में। हीत नाता काल्हु से जुमे लगिहें। तू अबहींले ओकरा के ना बतवलू। कान में तेल डालि के महटिअवले बाडू। तूँ तऽ हद मेहरारू बाडू! आरे बरात लागी त ओही घरी कोंहड़ा रोपाई। का जाने अइन मोका प ऊ लागी छान–पगहा तुरावे तऽ तूहीं सम्हरिहऽ, हम कुछुओ नइखीं जानत।"

"रउओ तऽ हद मरदाना बानी। हम का बूझबि आ काहे बुझबि? हम तऽ शुरूये में रउआ से कहले रहीं कि हमरा से ई कुल्हि पार ना लागी। जानसु जौ आ जानसु जाँत। आ रउआ ओकरा सुभाव के जानऽ तानी, बिआह के नाम सुनते लागी कूदे–फाने। कइसे ओकरा से बतिआईं, कइसे समझाईं, ई हमरा अपने नइखे बुझात। हम त खुदे अफदरा में परल बानीं।"

"छोड़ि दऽ। सभ काम भरत के जिम्मे। हमहीं दउरि के बिआह ठीक कइनी। दहेज खातिर हित–नाता से लेले गाँव–जवार में दाढ़ी सुहरा के, अरज–विनती कऽ के रोपेया के जोगाड़ कइनी। आ तोहरा से अबहीं तक हई हती चुकी काम ना हो पावल। माने के परी, तुहूँ केहु बाडु। मेहरारू ना मेहरार....।"

गँवे–गँवे दूनो बेकत के बतकूचन 'पीक अप' धइलसि। ढेर तेज लइकी रूपा। सभ बात जानि गइली। ऊ सुतल ना रही। महटिअवले रही। उनकर कान खड़ा हो गइल। ध्यान से माई–बाबूजी के बतकही सुने लगली। मने–मने ऊ अकबकाये लगली– "आँय....! का....? हमरो बिआह खातिर तिलक चढ़ि गइल। उनका बुझाइल, जइसे केहू बरफ के छूरी उनका करेजा में भोंकि देलस। उनका रगन में खून जमि गइल। गोड़ के नीचे के धरती धसकत बुझाइल। ओह डरावन–भकसावन, उमसल–खामोश राति के दरम्यान गँवे–गँवे उनका अइसन महसूस होखे लागल कि जइसे केहू लोहा के छड़ आगि में धिका के उनका देंहि के गतरे–गतरे दागि रहल बा। गरीब आ छोट परिवार से होखला के बावजूद रूपा के सपना छोट ना रहे। तेज–तर्रार होखे के चलते घर के महत्वपूर्ण निर्णय लेबे में उनकर मुख्य भूमिका रहत रहे। चुपा–चोरी अइसन दगाबाजी। ऊ सपनों में ना सोचले रही कि बाबूजी हतना छोट उमिर में उनका गोड़ प हइसे टाँगी चला दिहें। अइसन किलम– दोजईं...! राम.....! राम.....!! हद हो गइल। लइकाई के कुछ इयाद उनका जहन में घूमल। तब झींगा के झोंझ में अझुरा गइली रूपा। उनका बुझात ना रहे कि एह बिकट परिस्थिति में का करीं आ का ना...? मन के बटोरली आ भोरहरिआ के आसरा देखत महटिअवली। सोचली–राति में आपन फरिआद कहल उचित नइखे। बिरत राति के उमस से सभे उबिआइल बा। हमरा बतकही से अवरू उबिआ जाई।"

प्रतिक्रिया देबे के आदत के पैदाइश शून्य से कबो जनम ना लेला। बलुक परिवार, माई–बाबूजी, दोस्त–इयार भा सहयोगी के गलत व्यवहार के ई परिण

ाम होला। शुरू–शुरू में केहू ओह लोग के एह व्यवहार से क्षुब्ध होला बाकिर कुछ कहि ना पावे। फेरू अपना मन में लोगन के रूख के बारे में बार–बार सोचेला आ निरासा से घेराइ जाला। इहे निरासा ओकरा के प्रतिक्रियावादी आ क्रोधी बना देला।

होत पराते चुटुर के घर में गदर मचि गइल। पगली लेखा अपना कपार के बार नोचत, रोअत–चिचिआत माई लगे पहुँचली रूपा, "ई तोहनी लोग हमरा साथे का कऽ देलू। हतना छोट उमिर में बिआह....? कुछुओ हो जाई, हम बिआह ना करबि। जान दे देबि बाकिर जीअत–जिनिगी तोहनी लोग के मन के ई मुराद कबो पूरा ना होखे देबि। हम अबहीं चौकीदार के थाना प भेजवा के दरोगा–पुलिस बोलवावऽ तानी। तब देखिहऽ तोहनी लोग के ई ममिला कऽ सेर के परऽता...!"

"चुप–चुप....! ई का पगली लेखा करे लगलू? घर में हीत–नाता जुटल बाड़ें। का कहिहें...? बेटी घर के इज्जत होली सऽ। लाज–लेहाज करऽ। तनिका विचार करऽ। बड़–बुजुर्ग के सोझा मुँह ना लड़ावल जा। हतना तेज लइकी होके अइसन बुरबकाही। तनि महटिआवऽ। तोहरा के भाठल नखइे जात। निम्मन घर–बर देखि के ही तोहार बिआह कइल जा रहल बा। चुप होके शांति से रहऽ, ना तऽ दवरे प खड़े–खड़ी घर के लुग्गा लुटा जाई....।"

माईं से कवनो सकारात्मक जबाब ना मिलला के बाद बाबूजी से फरियाद कइली, "रउआ ई बहुते जबून काम करऽतानी। कुछुओ हो जाई, हम बिआह ना करबि। चउका पर से उठि के परा जाइबि। रउआ माड़ो में आगि लगा देबि। हमरा रउआ से अइसन उमेद कबो ना रहे कि रउआ हमरा के गड़हा में धसोरि देबि एह से निम्मन बा कि हमरा के घठिआ के दरिआव–कुंआँ में फेंकवा दीं भा जहर–माहुर देके मुआ दीं। बाप, बाप होला। ओकर कुछ धरम–करम होला। हइसे गाइ ना मारल जाला। हम कवन गलती कइनी हाँ की रावाँ हमरा के अइसन सजाइ दे रहल बानी। कुछुओ हो जाई, बाकिर हम ना मानबि....।"

बेटी के बतकही सुन डबडबा गइलें चुटुर। गला भरभराये लागल। बाकिर तबो मन कड़ा क के कहलें, "तें पूरा समाज में हमार नाक कटवावल चाहऽ तारे। अबहीं हम तोर खाली बिआह क दे तानीं। तोर गवना पाँच साल बाद होई। काहे घबड़ा तारे? हम जीअ तानी। तोरा तनिको दुख ना होई। अबहीं तोरा ससुरा नइखे जाये के। अगर अबहीं अइसन कलह पसरबे त सुशीलओ के बिआह में दिक्कत आ जाई। आइल बराती लवटि जाई त जानि जो तोर खैर नइखे। अपने से मुए के कहऽतारे त कान खोल के सुन ले कि हम साँचो के मुआ देबि। आ बरात लवटला के माने बा कि तोहनी के दूनों बहिनिन के ता जिनिगी कुँवारि रह जाये के बा। फेरू हमरा के दोष मत दिह सऽ....।"

मन मसोस के रह गइली रूपा। उनका बुझात ना रहे कि आगा डेग कइसे बढ़ाईं। नीन आंखिन से कोसहन फरका परा गइल। एकबारगी बड़ बहीन सुशीला के चेहरा उनका सोझा नाचे लागल। आखिर में मन के समझावत–बुझावत कसहूँ सबुर–संतोष देली। लगलाहे दूनों बहीनिन के बरात दुआरे लाग गइल। हाथ पकड़ के, टांग–टूंग के बरिआरी रूपा के माड़ो में चउका बइठावल गइल। पूका फार के खूबे रोवली रूपा। बाकिर ओह मौका प मौजूद बराती–सराती में से केहु के कान प ढ़ीली ना रेंगलस। चिरई के जान जा आ लइकन के खेलवना। सभे पूड़ी–बुनिआ–आलूदम के चक्कर में चकरिआइल रह गइल...।

बिआह के बिहान गवना भइल। बड़की बहिन सुशीला ससुरइतिन हो गइली। हमरा गांवे के लोग कहेला कि– "रहि गइलें जयानंद के आस नू रे भइया...?" छोड़िं ई कथा कबो बाद में। एह से आईं पहिले चुटुर के चटकवाही के पुरहर ओझाई क लिहीं जा। हं, त जयानंद लेखा चुटुर के घरे तब बंचली माई आ रूपा। बीतत समय के साथे रूपा के पढ़ाई बिल्कुल बंद हो गइल। मांग में सेनुर लगा के स्कूल गइल उनका उचित ना बुझाइल। गांव–देहात के बतकही रहे। लइका–लइकी बोलबाजी करे लगलें स,–"ए कनिआ दू गो धनिया द....।" – बड़ा फेरा में परली रूपा। गुरूजी लोग लगे ओरहन देबे मे असमरथ। जासु त कहंवाँ...? एगो सुनर–सुभेख पढ़निहार लइकी रूपा साफा दवरे पर थउंस गइली। तब घरे के कामन में माई के साथे हाथ बंटावे लगली। गोबर–गोंइठा–गरूआरी में अझुरइली।

कहाब ह– "मन के मोह रही हो उधो, मन के मोह रही...।" – ओसहीं रूपा के मन के घाव ना भरल। ऊ टीसत–टीसत अवरू भगन्दर होत गइल। ऊ भीतरे–भीतर घुले लगली। आ अपना बिआह में सिरकत करे वाला लोगन के मने–मन गरीआवत समय जया करे लगली–

"अगुआ के पुत मुओ, बभना दुखित होओ।

बाबा के होखे छोट राज हो, आहे बाबा के होखे छोट राज हो।

आहे जेहि खोजलें बरवा हमार हो, आहे जेहि....।"

समय बीतत देरी ना लागे। रूपा के गवना भेजेके

तइआरी में चुटुर जुटि गइलें। तब सतरह साल के हो गइल रही रूपा। मांग के सेनुर उनका के ढेर पोढ़ क देले रहे। अब ले देश–दुनिया के बारे में ढेर बात समझि–बूझि के पक्का हो गइल रही।

आदमी के सभ परिस्थिति अपना समाधान खातिर सबसे अधिका विवेक से भरल समय के बाट निहारेला। विवेक से लबरेज होखे के एगो समय होला। आ जब परिस्थिति के मांग होला त ओहि घरी निर्णायक काम करे के उहे शुभ सुदिन बन जाला। नया सिरा से फेरू गवना के विरोध शुरू कइली रूपा। चुटुरो ओनईस ना रहन। ऊ बुझि गइलें बिना अंगुरी टेढ़ कइले घीव ना निकली। जवान बेटी रहली रूपा। हाथ से मारल उचित ना बुझाइल चुटुर के। उठवलें लाठी आ डंटलेसन क के रूपा के अहथिर क देलें, "हिम्मत होखे त निकाल बकार। तोरा लेखा बेटी से निपुतरी रहल निम्मन। अबहीं दवरे प तोरा के धठिआ ना दीं त असलजादा के जामल ना...! अतना तोर हिम्मत रे...? मनबढू भइल बाड़े। बेटा बनऽ तारे। तेहीं ससुरा ना जइबे....! मार के तोर देह गतान क देबि। जबान लड़वले त तोर जीभ उखाड़ देबि। बूता होखे त बोल आगे। अबहीं तें हमरा के पसन से ना चिन्हले हा....?"

ऊपर से देखावटी चुप हो गइली रूपा। बाकिर भीतरी सीना में बोरसी लेखा आग तलफल रहे। गवना रोकवावे खातिर थाना में फोन कइली। बाकिर केहु ना खबर लेहल। मडर सुनि के पुलिस झटकाहे ना पहुंचे। तले गवना रोकवावे खातिर पुलिस पहुंचऽता। अगर अइसन ऊ करे लागे त दिसो–पेसाब करे के ओकरा फुरसत ना लागी। "बढ़ई–बढ़ई खूंटा फारऽ, खूंटा में मोर दाल बा। का खाईं, का पीहीं, का लेके परदेश जाईं....?" – लइकांई के सुनल चिरईं के संघर्ष वाली ई कथा उनका मन–मंदिर के हींड़ि देलस। उनकर वजूद उनका के ललकरलस, "दौड़–धूप क के एगो छोटी मुटी चिरईं खूंटा फरवा सकऽतिआ, तब हम काहे ना...? हम त आदमी हईं। चिरईं से बेसी दिमाग हमरा लगे बा....।"

तब 'जिन ढूंढा तिन पाइयां' वाली कहावत उनका जिनिगी के साथे साकार भइल। ऊ अखबार में परमारथी ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी प्रीति दीदी के बाल–बिआह निरस्त करावे के मुहिम के बारे में पढ़ली। उनकर पता आ फोन नम्बरो उनका अखबार से मिल गइल रहे। आन्हर के का चाहीं– बस दू गो आँख। रूपा के आँख भेंटा गइल। संजोग बढ़िया भइला प भगवान छान्हि फार के देबे लागेलें। तब प्रीति दीदी के फोन कइली रूपा। हिरगा–हिरगा के सभ बात बतवली आ साथे उनका लगे चीठी पतरी पेठवली। चुटुर बड़ा चतुराई से उनका गवना के दिन धइले रहन। जेवना के रूपा कवनो तरीका से जान ना पवली। चुटुर एह बात से पूरा वाकिफ हो गइल रहन कि अगर रूपवा गवना के दिन जान जाई त अइन मोका प पुलिस के सूचना दे दी। सभ गुड़–गोबर हो जाई। बाकिर रूपा माने वाली लइकी ना रही। प्रीति दीदी लगे फोन धूक देली रूपा, "हम गड़हा में गिर रहल बानी दीदी। हमरा के कसहूँ बचा लीं। हमार मदद करीं। हमरा खातिर भगवान बन जाईं। रउआ के छोड़ एह मझधार में हमार कवनो अलम नइखे। तनिको देरी मत करीं। ना त बड़हन अपशगुन हो जाई...।"

अबले बिआह के उमिर के नियरा पहुँच आइल रही रूपा। एह से दम भर रूपा के समझावे के कोशिश कइली प्रीति दीदी, "देख, घबड़ाये से काम बिगड़ेला। तू सतरह बरिस के पार हो गइल बाडू। तनिका महीना के बतकही बा। खेले–खाये में ऊहो समय गुजर जाई। बेटी दू गो कूल के दीया होली स। तू समझदार बेटी बाडू। दू परिवारन के इज्जत–हुरमत के सवाल बा। अब तोहरा नइहर–ससुरा दूनों के लाज राखे के बा। एकबाली बेटी बाडू। हिम्मत से काम लऽ आ गवना खातिर राजी हो जा। अतना छोट टाइम कवनो टाइम ना हऽ। पलक मारते गुजर जाई। जवान जब हो गइलू त आजु ना काल्हु तोहरा ई बात माने के परी। बेटी दोसरे के घर के अमानत होली स। कसहूँ तोहरा ससुरा जाये के परी। हम त इहे कहबि। आगे तोहार मरजी....।" – ई कहत आपन पिंड छोड़ावल चहली प्रीति दीदी। बाकिर रूपा अड़ि गइली, "दीदी, रउआ हमरा दिक्कत के समझे के कोशिश करीं। हमरा अबहीं पढ़े के बा आ जनम सकारथ करे के बा। ससुरा के लोग अगर जे ना पढ़े दी त का हम बरिआरी पढ़ लेबि.....? रउआ हमार दरद बूझीं दीदी आ पूरा मन से हमार सहयोग करीं। बिआह–गवना के बतकही नइखे, एगो निरीह बेटी के जिनिगी के सवाल बा। हम आपन गाँव 'बाबू के टोला' के पूरा हुलिया रावाँ लगे मैसेज क देले बानी। अगर रावाँ हमार मदद नइखीं करत त कान खोल के सुन ली कि आज रात में हम आपन घर छोड़ि देबि आ कहंवाँ जाइबि ई त हमरा खुदे पता नइखे त रउआ के हम का बताईं....? बाकिर एगो जान के रक्षा के सवाल बा। तजबीज करबि। भुलाइब मत....।"

प्रीति दीदी से रूपा के ई आखिरी बतकही रहे। आ

ठीक ओहि दिने आधा रात के बाद घनघोर अन्हरिआ में गौतम बुद्ध लेखा दुमुँहा के केवाड़ी ओठघँवली रूपा आ माई–बाबूजी के घर जिनिगी भर खातिर तेआग दिहली। डेरावन–भकसावन रात में केने जासु, बुझात ना रहे। बड़ा मोसकिल में पर गइली। गांव से निकल के गिरत–भहरात, बचत–बचावत कसहुं 'नेशनल हाई वे' प अइली। ओइजे एगो मंदिर रहे। ओहि मंदिर के किनार प आके बइठ गइली। डरे ओहिजा से आगे डेग बढ़ावे के उनका हिआव ना परत रहे। हिम्मत पस्त हो गइल। 'का करीं आ का ना...?' – इहे सोचत रही कि एगो कार उनका सोझा आके रूकल। कार के लाइट देख काँप कइली रूपा। उनका बुझाइल, ताड़ से गिर के खजूर प अटकनी। मने–मन बुदबुदइली, "ई का क देहलऽ विधना....?" – तब जान लेके परइली। तले गाड़ी में से जोर–जोर से केहु आवाज लगावे लागल, "रूपा.....! रूपा....! भाग मत बेटी। रूक जा। तनिको मत डेरा। हम आ गइनी। हम हईं तोहार प्रीति दीदी। जल्दी गाड़ी लगे आ जा....।"

ओह आवाज प विश्वास भइल रूपा के। थथम गइली आ दनाक से कार के निअरा आ गइली। अखबार में प्रीति दीदी के फोटो देखले रही। उनका के देखते विश्वास गहराइल आ प्रेम के डोरी बरिआर हो गइल। तब बिना हिचक प्रीति दीदी के कार में रूपा बइठ गइली। कार आपन रफतार पकड़लस। राते–राती प्रीति दीदी के घरे आ गइली रूपा। उनका के खिआ–पिआ के इतमिनान कइला के बाद कहली प्रीति दीदी, "अब तू एह कमरा में अहथिर से सुतऽ आ आगे खातिर कुछुओ मत सोचऽ। तू सही जगह प पहुँच आइल बाडू। बिहान होते तोहार सभ जोगाड़ पसन से क देबि....।"

होत पराते फटाफट नास्ता–पानी क के प्रीति दीदी, रूपा के साथे बाल कल्याण समिति में पहुँचली। ओकरा सामने रूपा के पेश क के उनकर कस्टडी हासिल क लेली। ओइजा से ऊ रूपा के लेले जिला मुख्यालय पहुँचली। ओइजा रूपा के ऊ राजकीय बालिका गृह में पनाह दिअवली। बीतत समय के साथे रूपा के बाल–बिआह निरस्त करे खातिर प्रीति दीदी उनका के लेले पारिवारिक न्यायालय में गुहार लगवली। कोर्ट से रूपा के पति के हाजिर होखे के सूचना जारी भइल। तथाकथित पतिदेव कोर्ट में हाजिर भइलें। बाकिर अइन मोका प साफा इनकार क देलें। धोती झार के किनार धइलें, "अबहीं हमनिन के बिआह नइखे भइल, केवल सगाई भइल बा....।"

कहल जाला, "केकरा प करीं हम सिंगार, पुरुष मोरे आन्हर हो....।" – पति के इनकार कइला के बाद केस खुदे कमजोर हो गइल। जब बिआह भइले नइखे तब केस केथी के? जज के सोझा पति के नकारला के सही–ठेपा भइल आ बेहिचक न्यायालय रूपा के बिआह निरस्त क देलस...।

कवनो काम के प्रति सकारात्मक सोच ना सिर्फ बड़ से बड़ लड़ाई लड़े के हौसला देला बलुक लड़ाई के सफलता के ओरे झुका के राखेला। रूपा के पासे आसमानी हौसला आ गजब के संकल्प शक्ति के अलावा यदि कुछ अउर रहे त ऊ रहे शिक्षा धन। कमे पढ़ल रही बाकिर ओतने के गंझिन गुनले रही। बिआह रूपी चुनौती के शिक्षारूपी हथउरी से चूर–चूर क देली। लाखों गरीब परिवार के बेटिन लेखा रूपा अपना बिआह के नियति मान लेती, बाकिर उनकर शिक्षित मन एकरा खातिर कतई तइआर ना भइल। घर से भागे वाली रात रूपा के एगो मकसद दे गइल। उनका पता रहे कि शिक्षा के बल–बुता से कुछ बेहतर हो सकऽता। एह से तमाम प्रतिकूलता के बावजूद ऊ आपन शिक्षा आगे बढ़ावे के निर्णय लेली। साथे समाज के लाचार–निरीह बेटियन के बेहतर भविष्य देबे खातिर संकल्पित हो उठली। उनका संकल्प आ निर्णय के रहबर प्रीति दीदी उनकर नामांकन स्कूल में करवा देली। राजकीय बालिका बालगृह से फेरू दुबारा पढ़ाई शुरू कइली रूपा। बड़ा लगन आ मेहनत से पढ़ाई में लगली। विद्यालय से महाविद्यालय पहुँचली। ग्रेजुएशन–पीजी के बाद बाल संरक्षण आ सुरक्षा जइसन विषयन के साथ पी–एच.डी., प जाके उनकर पढ़ाई पड़ाव लेलस। बिलाई के भागे सिकहर टूटल। पढ़ाई के पड़ाव लेते बाल–बिआह आ दहेज उन्मूलन जइसन कुरीतियन के समूल नष्ट करे खातिर राज्य सरकार के जनशिक्षा निदेशालय अभियान चला देलस। प्रीति दीदी के देखरेख में प्रशिक्षण शिविर संचालित भइल रहे। ओइजा से प्रशिक्षित कलाकार गाँवे–गाँवे जाके बाल–बिआह आ देहज उन्मूलन प जगावे खातिर लोगन के बीचे जात रहन। प्रीति दीदी तब बिचार कइली, "जेकरा गोड़े ना फाटल बेवाई, ऊ का जानी पीर पराई....!" – एह अभियान के सफल बनावे में रूपा से निम्मन कलाकार केहू दोसर ना हो सकऽता। तब राजकीय बालिका गृहसे रूपा के जरूरी कागजात के साथे मुक्त करवली प्रीति दीदी आ अपना टीम में प्रशिक्षित क के शामिल क लेली। ओह सरकारी मुहिम के सफल बनावे में रूपा के हौसला आ प्रस्तुति काबिलेतारीफ रहे। बीतत समय के साथे रूपा आपन स्वतंत्र टीम बना के एह काम के करे लगली। जहंवाँ

बाल–बिआह के भनक लागत रहे, ओइजा अपना टीम के साथे पहुंच जात रही रूपा। लइका आ लइकी दूनों परिवार के बाल–बिआह आ दहेज लेबे–देबे के दुख–तकलीफ आ परेशानी के बारे में पसन से समझावत रही। ओकरो बाद जब ऊ लोग ना मानत रहन तब कानून के सहारा लेके बिआह रोकवावत रही आ ओकरा के निरस्त करावत रही। एह दौरान ए काम खातिर उनका कई बार जान से मारे के आ रेप तक के धमकी मिलल। बाकिर ओह बनरघुड़की से ऊ ना तनिको घबड़इली आ ना घुरचिअइली। अपना धुन के पक्का लइकी रूपा। ऊ निष्ठा से अपना काम में भिड़ल रहली।

उनकर सक्षमता देख मुग्ध हो गइली प्रीति दीदी आ मने–मन बहुते अगरइली। गाँव के लोगन के प्रभावित करे में प्रशिक्षित कलाकारन में सभका के तड़िआके सभसे आगा निकल गइली रूपा। आखिर अपना के ना रोक पवली प्रीति दीदी, आ रूपा के बेटी लेखा आजीवन अपनावे खातिर ऊ महासंकल्पित हो गइली।

एगो अइसन दीमक जवन जिनिगी के खोंखड़ क देला। ख्वाहिसन आ सपनन के चकनाचूर क देला। जेवना के खिलाफ आवाज उठावे के बहुते कम जिनिगिअन के हिआव परेला ओकरा के मुआ के मिसाल बन गइली रूपा। ••

❑ महावीर स्थान के निकट, करमनटोला, आरा

लघुकथा

नामरदन के मरदानगी

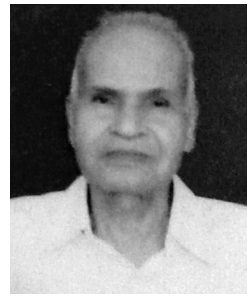

✍ शिवपूजन लाल विद्यार्थी

हम ट्रेन से आरा से बनारस जात रहीं। जनरल बोगी में उत्तर बिहार के मजदूर वर्ग के गरीब–गुरबा आ साधारन यात्री भरल रहले। डुमराँव स्टेशन पर बढ़िया डील–डौल आ मजबूत कदकाठी के तीन गो हट्टा–कट्टा औरत डब्बा में घुसली सऽ आ घुसते बेहयापन के परिचय देत भद्दा ढंग से कमर लचकावत, थपरी बजावत भारी आवाज में मजदूरन के धकियावे लगली सऽ – "निकालऽ पाकिट से.... जल्दी करऽ! अउरियो डिब्बा में जाये के बा"। उन्हन के रोबदार आवाज आ दुस्साहस भरल हरकत से बोगी में जइसे आतंक छा गइल। डरल–सहमल बेबस निरीह मजदूर बदस्तूर दस–बीस के नोट निकाल के उनुका हाजिर करे लगले। केहूओ के ना–नुकुर करे भा लाचारी जाहिर करे के गुंजाइश ना रहे। जे केहू थोरिकी आनाकानी करे ओके उनहन के बेहूदा हरकत आ फूहड़–पातर बोली के बउछार झेले के पड़े। अइसन लागत रहे कि विरोध कइला पर ऊ सब दबंगई आ नंगई पर उतर जइहें सऽ आ बलात जेब से पइसो निकाल लीहें। एह से जल्दी–जल्दी उनका आगा दस–बीस फेंकि के सब जान बचावे में लागल रहे।

हम ई अजूबा दृस्य– ई अनाधिकार वसूली के निरलज नंगा नजारा देखि के दंग रहीं। ना रहाइल त बगल में बइठल एगो महाशय से पुछलीं– "भाई साहिब, ई का हो रहल बा? गुंडा–बदमाशन के चाकू–पिस्तउल भिड़ा के यात्रियन के लूटल सुनले रहीं, पढ़ले रहीं, बाकिर हई अबला कहल जाये वाली मेहरारुन के निडर होके दिन–दहाड़े लूटत कबहूँ ना देखले रहीं।"

महाशय मूड़ी नीचे करत दबल जुबान से कहले– "भाई जी, ई सब औरत ना, हिंजड़ा हवे सऽ–नामरद–नपुंसक हिंजड़ा। बाकिर हमरा त इन्हन में विपरीते बुझाइल। इनहन में अतना मरदानगी आ हिम्मत कि जबरदस्ती वसूली करसु? ई त रंगदारी करत बाड़े सऽ।"

गनीमत रहे कि बूढ़–बुजुर्ग जानि के ऊ हमरा पासे ना अइलें सऽ। हमरो ईजत बाँचि गइल। ••

❑ गुंजन कुटिया, नारायणी विहार कालोनी, चितईपुर, वाराणसी।

कहानी

पतिता

अनिल ओझा 'नीरद'

लखनऊ जइसन शहर में जतने गर्मी पड़ेले ओतने ठंड। लेकिन हमार आदति रहे कि चाहे मई–जून के गर्मी होखे भा दिसम्बर–जनवरी के ठंढ, सबेरे भोरे उठिके गुसलखाना में जे घुसीं त एके बेर नहा–धो के बाहर निकलीं, फेर तनी पूजा–पाठ करीं, एकरा बाद तनी देर अखबार उठा के मोटा–मोटी ओकर हेडलाइन देखी आ एकरा बाद रसोई घर में घुसि जाईं।

आजु जब सबेरे के अखबार उठवनी त मेनपेज पर उपरे छपल खबर के पढ़िके सनाका खा गइनी। रहे–मशहूर समाज सेविका तूलिका प्रसाद सेक्स रैकेट चलावे के आरोप में गिरफ्तार। तूलिका प्रसाद यानी हमार लइकाईं के सहेली? अइसन कइसे हो सकेला? तूलिका के हम लइकाई से जानत बानी। स्कूल से लेके कालेज तक हमनी का एके संगे पढ़ल बानी जा। हर क्षेत्र में ऊ हमार आदर्श रहल बाड़ी। ऊ अइसन कइसे कइ सकेली। सोचत सोचत हम अखबार लेलहीं, धम्म से सोफा पर बइठि गइनी। आगे के अउरी कवनो खबर पढ़े के हमार मन ना कइल।

तूलिका आ हम खाली सहेलिये ना, पड़ोसियो रहनीं जा। अगल–बगल घर रहे। उनुका बाबूजी के आपन मकान रहे आ हमनी का भाड़ा के घर में रहत रहनी जा। उनुका बाबूजी के स्टेशन के सामने एगो होटल रहे। ठहरे–खाये मय के व्यवस्था रहे। हर तरह के खाना ओहिजा मीलत रहे। नार्थ इन्डियन, साउथ इन्डियन, चाइनिज, सभ सतरह के। हमरा बाबूजी के एगो छोटहन मिठाई, पूड़ी, कचौड़ी के दोकान सदर बाजार के मेन चौराहा पर रहे। दोकान ठीके–ठाक चलत रहे। खाये–पीये भर आ जात रहे।

हमनी दूनो सहेली, एके रिक्शा पर, एके संगे स्कूल जाइल करीं जा। एके स्कूल में पढ़तो रहीं जा। तूलिका के बाबूजी का पास आपन एगो मटीज गाड़ी रहे, बाकिी ऊ गाड़ी से स्कूल ना जात रहली, हमरा संगे रेक्से से जात रहली। अभीं छोटा स्कूल, छोटा क्लास में रहनीं जा। के0जी0 कइला का बाद स्कूल बदलल, फेर प्राइमरी, मिडिल का बाद हाईस्कूल, लेकिन हमनी के साथ ना छूटल। हर स्कूल में एके संगे रहनी जा। हाईस्कूल में आवत–आवत तूलिका अपना गाड़ी से स्कूल जाइल शुरू क दिहली, आ हमरा के हमार बाबूजी एगो साइकिलि कीनि दिहले, हम ओही से स्कूल जाये लगनी। कबो–कबो हम तूलिका के गाड़ियो से स्कूल जाईं, जब ऊ बहुत जिद करे। हलांकि ई बात ना त ओकरा बाबूजी के पसन परे ना हमरा। तबो केहू कुछ बोले ना। हमनी दूनो सहेली के दोस्ती में कबो कवनो अन्तर ना आइल।

हम त पढ़ाई में नार्मले रहनी बाकि तूलिका तेज रहे। हमेशा फर्स्ट आवे। सेकेन्ड से नीचे त हमहूं कबो ना गइनी बाकि फर्स्ट आवे के सपना कबो पूरा ना भइल। हाईस्कूल में आवत आवत तूलिका का खेलकूद क शौक बेसी चढ़ि गइल। ऊ बैडमिन्टन खेले लागलि। हमरो के खेले के कहे। हमार खेल में कवनो खास दिलचस्पी त ना रहे, बाकी ओकरा कहला गुने हमहूं कबो–कबो ओकरा संगे खेले लगनी, इहवों लेकिन हम ओकरा से कबो जीति ना पवनी। स्कूल के हर गतिविधि में ऊ आगा रहे। खेलकूद प्रतियोगिता होखे चाहें वाद–विवाद प्रतियोगिता, सबमें अउवल। आगे चलिके त ऊ एन.सी.सी. ओ ज्वाइन क लेले रहे, संगे हमरो ज्वाइन करे के परल लेकिन जब माउन्टेन ट्रेकिंग खातिर शिमला जाये के प्रस्ताव आइल त हम ना कइ देहनी। हम कहि दिहनी कि भाई हमरा पहाड़–ओहाड़ से बड़ा डर लागेला। ई पनरह दिन हमनी का एक संगे ना रहनीं जा।

हमरा घर से उनुका घर के स्तर कुछ ऊंचा रहल। उनुकर आपन मकान, ओहमें अलग से उनुकर आपन कमरा। बड़ा पलंग, बड़ा ड्रेसिंग टेबल, किताबि–कापी धरे के अलग से आलमारी, कुल्हि ठाट शाही अन्दाज में। हम कबो कबो उनुका घर में जाई, एक संगे बइठि के पढ़े खातिर हमरा इ कुल्हि देखि देखि के कुछ इर्ष्या जरूर होखे कि काश हमरो पासे अइसन कुल्हि रहित, लेकिन फेर अपना बाबूजी के आ उनुका बाबूजी के औकात के अन्तर देखिके आपन माथा झटकि दीहीं। तूलिका का अपना औकात पर कुछ गर्व रहे आ एह गर्व के ऊ कुछ अउरी ऊँचाई तक पहुँचावे के इच्छा राखसु; अइसन हमरा कबो–कबो एहसास होखे। उनुकर घर के कपड़ा–लत्ता एक से एक फैशनेबल आ महंगा रहले स। ऊ त स्कूल में ड्रेस कोड रहे, एह से सभका एके लेखा कपड़ा पहिरल जरूरी रहे, ना त ऊ ओहू घरी अपना महंगा आ फैशनेबल कपड़ा के नुमाइश कइला से पीछे ना रहिती, अइसन हमरा बुझाउ।

हमरा घर में जनम दिन मनावे के प्रथा ताम–झाम वाला ना रहे। जादा से जादा माई ओह दिन खीर–पूड़ी बना देउ आ भगवान के भोग लगा के सभ केहू उहे खा लेउ, बस हो गइल, जनम दिन के पार्टी, लेकिन उनुका घर में जनम दिन के पार्टी होखे, असली पार्टी। बाहर से बड़े बड़े लोग आवे। सभ बिजनेसमैन। होटल बिजनेस वाला जादा। सभे अपना अपना गाड़ी से आवे।

दुआर पर गाड़ियनि के कतार लागि जाउ। देर राति तक पार्टी चले। एक से एक बेशकीमती प्रेजेन्ट मिले उनुका। कपड़ा, घड़ी, चेन आ का का ना? डी0जे0 बाजे, नाच गाना होखे आ देर रात तक सभे खा पी के विदा होखे।

तूलिका अपना बाप–मतारी के एकलौती संतान रहली, एह से उनुकर रुतबा कुछ अउर रहे अपना घर में। उनुकर बाबूजी गोमती नगर आ आवास–विकास कालोनी में कइ गो प्लाट कीनि के छोड़ले रहले, आ कुल्हि उनुका आ तूलिका के ज्वाइन्ट नांव से रहे। आखिर आगे चलि के ई पूरा कारबार आ सम्पत्ति, त उनुके नू सम्हारे के रहे, त पहिलहीं से पक्का इन्तजाम कइ के रखला में का हरज रहे। हमरा घर में हमरा से बड़ एगो भाई रहले, जे बी0काम0 पास क के नौकरी चाकरी के चक्कर में ना पड़ले आ अपने मिठाई के दोकान में बाबूजी के हाथ बटावे लागल रहले।

स्कूल के बाद हमनी का कालेज में प्रवेश कइनी जा। एके संगे, एके कालेज में। इहां लेकिन पढ़ाई के विषय में तनी बदलाव भइल। बी0ए0 में हम हिन्दी में आनर्स लिहनी, आ ऊ समाजशास्त्र में। स्कूल के बाद अब ड्रेस कोड खतम हो गइल रहे, एह से तूलिका ड्रेस के मामला में अब आपन रंग देखावल शुरू क देले रहली। एक से एक फैशनेबल आ दामी कपड़ा अब उनुका पहिनावा में शामिल हो गइल रहे। कदो–काठी त अब कमाल के निखरल रहे उनुकर। सुन्दर सुभेख त रहबे कइली, लम्बाइयो करीब साढ़े पांच फीट से कम ना रहे। जवने पहिरसु ओही में उनुकर निखार नजर आवे। चाल में एगो ठसक आ गइल रहे। कबो कबो आंखि पर गोगल्स पहिरसु, कबो करिया, कबो नीला, कबो कवनो दोसरा रंग के। हाथ के कलाई में घड़ी हर हफ्ते बदलि जाइल करे। गरदनि में एगो लाकेट वाला सोना के चेन हमेशा रहे।

हमरा अलावे अब उनुकर अउर कई गो सहेली बनि गइल रहली। लेकिन हम खास के खास बनल रहनी। हलांकि हम उनुका लेखा ना त आकर्षक रहनी ना महंगा ड्रेस वाली। हमार कद–काठी सामान्य रहे आ हमार रंगो गेहुंअन मिलल हल्का सांवला रहे, बाकी तबो सभ सहेली के बीच ऊ हमरा के कबो ना छोड़सु। हम तनी सकुचाई त हमार हाथ झटकि देसु। कहसु– का यार, का हमेशा छुई–मुई बनल रहेलू, चलऽ आ शान से जीये के सीख। तबो हम सिमटि के रहि जाइल करीं। हमरा, उनुका पर गर्व त रहे, लेकिन तबो आपन औकात समझ में त आवते रहे।

बी0ए0 पास कइला का बाद हमनी के रास्ता अलग भइल। ऊ आगे समाजशास्त्र में एम0ए0 करेके प्लान बनवली आ एडमिशन ले लिहली। हमार बाबूजी बी0ए0 के बाद हमार बिआह तय कइ दिहले, कहले कि हम तोहार बिआह कइ रहल बानी, तोहरा आगे जो कुछु अउर पढ़े के मन करी त अपना ससुरार में जाके, ओह लोगन से अनुमति लीहऽ, आ अगर ओह लोगन के मरजी होई त आगे पढ़ाई करिह, ना त आपन घर–गृहस्थी सम्हरिहऽ। हम एह से आगे के पढ़ाई के अनुमति अब अपना घर में ना देबि। भइया के बिआह पहिलहीं हो गइल रहे, अब हमार बिआह होई। हम का बोलितीं। हम तूलिका लेखा ना त साहसी रहनी आ उग्र। नियति के आगे सिर झुका लिहनी।

तूलिका सुनली त बहुत नाराज भइली। कहली– का ऋतिका! तूं अतना जल्दी हार मानि लिहलू? अरे तहरा आगे अभीं अउर पढ़े के चाहत रहल हा, कुछ बनेके चाहत रहल हा। अरे अउर कुछ ना त कम से कम टीचींग लाइन में त जाइये सकत रहलू हा। फेर शादी करितू। कुछ बनि के। तब एगो अलग रुतबा रहित, कम से कम केहू के आश्रित रहे के त नउबत ना आइत कबो खैर, अब का होखे के रहे अब त जवन होखे के रहे ऊ भाग्य तय क देले रहे। तूलिका हमरा बिआह में अइली। राति भरि हमरा संगे रहली आ सबेरे हमरा बिदाई के बाद अपना घरे गइली। नेवता लेके उनुकर बाबूओ जी आइल रहले, बाकी ऊ जल्दिये चलि गइल रहले।

आज दू साल बाद हम स्थाई रूप से रहे खातिर फेर से लखनऊ आ गइल रहनी। एह से पहिले गांवहीं रहत रहनी इनिका बाबूजी अम्मा के साथ। ई एम0काम0 कइ के सरकारी नौकरी पावे के तेयारी में साल भरि से परीक्षा आ साक्षात्कार देत रहले। संयोग कि इनिका एगो सरकारी नौकरी मिलि गइल आ पोस्टिंग लखनऊवे में हो गइल। पहिले सालभरि त ई अकेलहीं इहां रहले बाकी बाद में खाना पीना के असुविधा के हवाला दे के अपना बाबूजी अम्मा के राइये से हमरा के लेके लखनऊ आ गइले। घर में टेलीफोन, टेलीविजन सब लगा के रखले रहले। अब गांव पर ई कुल्हि कहां रहे। ई आलमबाग में एगो घर किराया पर लेले रहले।

इहवाँ आवते सबसे पहिले हम अपना माई के फोन कइनी। अपना खलनऊ आवे के खबर दिहनी। एक दिन घरे आके सबसे मिले के बात कहनी। बाबूजी, भइया, भउजी सभकर हाल समाचार लिहनी। तूलिका के बारे में खास पूछताछ कइनी। पता चलल ऊ एहिजे बाड़ी आ ठीक ठाक बाड़ी। आजु काल्हु महिला समाज के लीडर हो गइल बाड़ी। अपना के महिला सामाजिक कार्यकर्त्ता कहेली। घर पर महिला कार्यकर्तन के भीड़ि लागल रहेला। सुनि के हमार मन बाँस भर उछलि

गइल। बाह रे तूलिका! तूं कहाँ से कहाँ पहुंचि गइलू? अब हमार मन उनुका से मिले खातिर जोर मारे लागल।

अब तुरन्ते मीलल त मुश्किल रहे, एह से हम दोसरा दिने, इनिका आफिस गइला का बाद, फोन कइनी। नम्बर तूलिका के कमरा के रहे, एह से फोन ऊ खुद उठवली। ओने से आवाज आइल– हेलो!..... के बोलता?

ऋतिका! एने से हम जबाब दिहनी। तूलिका! हम ऋतिका बोलतानी।

ऋतिका?..... अरे वाह, तोहरा त बड़ा जल्दी याद आ गइल हमार। कहां से बोलतारू?

हम गौर कइनी ई पहिले वाली तूलिका के आवाज ना ह। पहिले के आवाज में जवन चुलबुलापन होत रहे, ऊ गायब रहे। अब तनी गम्भीरता आ गइल रहे। हम जबाब दिहनी– "हम लखनउवे से बोलतानी। दू साल गाँवे रहि के अभी परसवें अइनी हां। अब गांव में फोन त रहल हा ना, त कइसे तहरा के इयादि करितीं?"

त इहवाँ आके फोन करतारू। मिले ना आ सकत रहलू हा। ऊ कहली– हम माई के घरे ना, अपना घरे आइल बानी। तोहरा जीजा के नोकरी एहिजे लागि गइल बा। हमनी के डेरा आलमबाग में बा। हम एही अतवार के तहरा से मिले आइबि।..... हम कहनी।

ठीक बा आव त बात होई। ढेर बात होई। दू–तीनि साल के बात जे पेट में गंउजाइ बा। एकरा बाद लाइन कटि गइल, तबो फोन के रिसीवर पकड़ि के हम, कुछ सोचत, कुछ देर ओसही बइठले रहि गइनी।

अतवार के सांझि खां, इनिका के लेइ के हमनी का चलनी जा तूलिका से मिले। अब ओहिजे त हमरो घर रहे, से मिठाई के दू पैकेट लिआइल, एगो तूलिका खातिर, एगो अपना घर खातिर। हमनी का पहिले अपना घर में घुमनी जा। देखि के माई अगरा गइलि। धधा के हमरा के गले लगवलसि। दामाद गोड़ छुवले, उनुके असीसलसि। भउजियो आ गइली। करीब एक घंटा हमनी का उहां बइठि के फेर तूलिका से भेंट करे उनुका घरे चलनी जा।

तूलिका का घर के सामने सचहूं मेहरारून के भींड़ि लागल रहे। तूलिका अपना मकान के एगो नीचे वाली कोठरी के आपन बइठका बना लेले रहली। हमनी का बाकी औरतन से बचत–बचावत कोठरी में घुसनी जा। हमरा पर नजर पड़ते तूलिका उठि के खड़ा हो गइली आ आके हमरा के गले लगवली। बुझाइल जे दूनो सखी जाने केतना दिन बाद अंकवारि भेंटनी जा, फेर हमरा के अपना से अलग करत जइसे हमरा के ऊपर से नीचे तक निहारत होखसु अइसे देखि के कहली– 'अच्छा त नया मेहमान के आवे के सुगबुगाहट शुरू हो गइल बा। हम सुनि के तनी लजा के मुस्कुरात, मुड़ी नीचे झुका लिहनी।' एह पर ऊ ठठा के हँसली आ कहली– अरे भाई! एह में लजाये के कवन बात बा। बिआह होई त एकर सम्भावना त बनबे करी। एह पर हमनी दूनो जनी एके संगे हंसि पड़नी जा। फेर ऊ ई कहत कि चल हमऽ तहरा के अपना कमरा में बात करबि, हमार आ अपना जीजा के हाथ पकड़ले लेले–देले अपना कमरा में पहुंचि गइली।

इत्मिनान से बइठत पुछली– 'हँ त कहीं ऋतिका जी राउर का हाल बा?'

हम कहनी– 'हमार छोड़, तूँ आपन बताव, सुननी हां, आजु काल्हु महिला समाज के नेता बनि गइल बाडू?'

सुनि के ऊ ठठा के हंसली। कहली– अरे कहां के नेता यार। ई त कुल्हि यूनिवर्सिटी के नेतागिरी के चलते एह सभ चक्कर में फंसि गइनी। यूनिवर्सिटी में यूनियन ज्वाइन क लिहनी, फेर अपना सहेलियनि के कहला में पड़ि के अध्यक्ष के चुनाव लड़ि गइनी आ कुल्हि लफड़ा ऊहें से शुरू हो गइल। अध्यक्ष पद पर हमार जीत हो गइल। फेर त शुरू हो गइल कबो कवनो प्रोफेसर के खिलाफ, कबो वाइस चांसलर के खिलाफ धरना प्रदर्शन के कार्यक्रम। अब त पढ़ाई से बेसी यूनियने के काम होखे लागल। कबो स्टूडेन्टस् बचाओ कार्यक्रम के तहत जुलूस, कबो महिला सशक्तिकरन पर भाषण आ ओकरा पक्ष में जलूस से शुरू भइल सिलसिला यूनिवर्सिटी से बाहर आके अब महिला मोर्चा के जुलूसन पर अटकि के रहि गइल बा। कबो कबो हम सोचीले कि अगर हम यूनिवर्सिटी ना गइल रहितीं त शायद एह लफड़ा में ना फंसल रहितीं। लेकिन सांच कही ऋतिका त अब हमरा एह में मजा आवे लागल बा। अब हम एकरा में फंसि के बहुत आगे निकलि गइल बानी। अब पीछे हटल मुश्किल बा। अब हम एह समाज खातिर कुछु कइके रहबि। अपना गोमती नगर वाला एगो प्लाट पर मकान बना रहल बानी। ओहिजे एकर आफिस शिफ्ट करबि। ओहिजे एगो महिला आश्रम बनी। दलित–पीड़ित महिलन के ओहिजे आश्रय दिआई। कुछु रोजगार सृजन होई आ एही तरह लाचार–असहाय महिलन के पक्ष में हमार आवाज बुलंद होत रही।

बात–चीत करत–करत बहुत समय निकलि गइल रहे, एह से तूलिका का निहोरा कइला पर उनुके घर से खाना खाइ के हमनी का देर राति घरे लवटनी जा।

हमरा बेटी भइल त हम फोन कइले रहनी, सुनि के तूलिका हमरा घरे अइली, ढेर सारा गिफ्ट पैक के साथ, बड़ी देर ले बइठली, खाना खा के गइली। आमने–सामने हमार तूलिका से इहे शायद अन्तिम मुलाकात रहे। बीच–बीच में फोन पर बात हो जाइल करे।

कबो–कबो टी0बी0 पर लउकि जासु। कवनो पत्रकार से नारी सशक्तिकरन पर बात करत। नारी समाज के उत्थान के बात करत। अखबार में त प्रायः उनुकर खबर रहत रहे। कबो महिला मोर्चा के जुलूस निकालत आ ओकर अगुवाई करत फोटो छापे त कबो उनुका महिला आश्रम के गतिविधि का बारे में खबर छपे। कुल मिला के तूलिका खास खबरन के विषय बनि गइल रहली। हमरा उनुका पर नाज होखे।

लेकिन कुल्हि खबरन के बाद, आजु के ई खबर पढ़ला पर का करीं, नाज कि घृणा? एकदम से सेक्स रैकेट के बात। ई तोहार दिमाग में कब आ कइसे आ गइल तूलिका? तूं अतना पतित कइसे हो गइलू? महिला उद्धार के बात करत, एकदम से उन्हनी के सेक्स रैकेट में ढ़केलि दिहलू? हलांकि हमार मन अबहिंओ माने के तेयार ना होत रहे, लेकिन ई खबर पढ़ि के एकरा से अलग सोचे के कल्पना तक दिमाग में ना आवत रहे।

“अरे का करऽतारू यार! आजु नाश्ता ना बनी का? हमरा आफिस जाये में देर हो जाई। इनिकर आवाज आइल त हमार ध्यान भंग भइल। हम एक बेरि नजर उठा के इनिका के देखनी आ उठि के अखबार उनुका हाथ में पकड़ावत रसोई घर का ओरि चलि दिहनी। मन के कवनो कोना से अबहिंओ आवाज उठत रे– राजिनीति के पतित तूलिका!! ••

❑ 28/4, भैरवदत्ता लेन, नन्दीबगान,
सलबिया, हाबड़ा, प०बं०।

लघुकथा

असाधारन मनई

केशव मोहन पाण्डेय

हमार सहकर्मी सुदीप, हऊवें तऽ साधारने बुद्धि के मनई, बाकिर कवनो चरचा–परिचरचा में आपन बुद्धि जरूरे पेसे़ले। फँस गइला पर तुरंते दाँत चिआरत रटल–रटावल वाक्य बोलिहें, – ‘अच्छा–अच्छा, ... हमरा बुझाइल हऽ ना।’

सबका नटई से एगो दबाइल हँसी निकली आ सगरो मामला शांत। एकाध घरी के बाद सुदीप अपना सीट से उठिहें आ वाशरूम ओर चल दिहें। कई दिन बाद हमरा पता चलल कि ऊ वाशरूम ना जाले, वाशरूम के लगे वाला खिड़की पर खड़ा हो के बाहर कुछू देखत रहेले। एक बेर हमरा लागल कि सभे उनके मजाक उड़ावेला, से उनका बाउर लाग जाला आ खिड़की पर जा के आपन मूड ठीक करेले। हम ढाढस बन्हावे गइनी तऽ तनी मजाक करे के मन कइलस, – ‘का हो सुदीप भाई, काऽ होताऽ? ...... केकरा के निहारत बाड़?’

‘सामने देखऽ ना!’

‘अच्छा तऽ तू हो मउगी के निहारत बाड़ऽ? अब बुझाइल कि एहिजा काहें ठाढ़ होलऽ। ..... मेहरारू निहारे खातिर?.... आ ऊहो हो सँवरकी के?’

‘साँवर बिआ तऽ का, तनी ओकरा मुँह के पानी तऽ देखऽ। केतना सुन्नर बिया।’

हमहूँ सुदीप के आँख से देखे के चहनी तऽ लागल कि सचहूँ सुन्नर बिया। सुदीप बतवले कि ऊ महतारी बनला के प्रक्रिया में बिया। ओकरा पेट के उभार से साफ बुझात रहे।

अब हम बेर–बेर सुदीप के रिगावे खातिर जाईं बाकिर ऊ सँवरकी के देख के चुप हो जाईं। ओकरा झुग्गी के सामने कबो–कबो रिक्शा ठाढ़ लउके, जवना कारने ई निश्चित हो गइल रहे कि ओकर मरद रिक्शा चलवेला। सुदीप जब ओने देखत रहें तब उनका चेहरा पर एक अद्भुत आह्लाद झलके। ...... एक दिन ऊ बड़ा उदास रहले। ओह दिन बेर–बेर खिड़की तर जासु आ आँख पोछें लागें। हम देखनी कि ऊ रोअत रहलें। हम डेरा गइनी। झुग्गी के लगे मेहरारून के भीड़ जमा रहे। लइका उछल–कूद करत रहलें। हमरा तऽ कुछू देख के रोवे वाला हाल ना बुझाइल, काहें कि भितरा से एगो जनमतुओ के रोआई आवत रहे। सुदीप से पुछनी तऽ चढ़ल साँस के रोकत कहे लगले, – ‘इयार भगवान ई अनेत काहें कइले, ई गरीबी काहें बनवले हो? ..... देखऽ ना, बेचारा रोटी खातिर रिक्शा चलावेले सों। चमड़ा जरावत गरमी में एह टीन के घर में गुजारा करत बाड़ें सों आ ओकर मेहरारू प्रसव के पीड़ा में चिल्लात रहल हऽ बाकिर अस्पताले ना ले गइले सों। लइका एहीजा हो गइल। .... तू बतावऽ, ई कवनो बात भइल?’

आगे पता ना सुदीप काऽ–काऽ कहले बाकिर हमरा बुझाइल कि ऊ कतहूँ से साधारन बुद्धि वाला नइखन। ••

मूर्ति के न्याय

शारदा पाण्डेय

एगो बढ़ई रहल। ऊ राजा किहाँ पलँग बनावत रहल। पलँग बनवला के बाद ओकरा लगे एगो लकड़ी बाँचि गइल। ऊ सोचे लागल कि एह बाँचल लकड़ी के का बनावल जाव? धइला पर एने–ओने हो जाई। अतना बड़ हइयो नइखे कि ओकरा से कवनो काम लायक चीज बनि जाव। लकड़ी हाथ में लेले ऊ एगो तिमुहानी पर पहुँचल, उहवाँ ओकरा मन में आइल कि काहें ना एकर एगो मूर्ति बनावल जाव। ऊ तिमुहानी के एकोरा बइठि गइल आ एगो सुन्नर मेहरारू के मूर्ति गढ़े लागल। तनिकिए देर में ऊ एगो खूबे सुन्दर नारी गढ़ि दिहलस। देखला पर बुझाय कि साँचो कवनो सुन्नर पुतरी हऽ, जेवन अब बोलहीं के चाहत बिया। आँखि खुलल अइसन लागे जइसे ऊ सभे कुछ देखत–समुझत होखे। बढ़ई ओकरा के देखि के बड़ा खुश भइल। सोचलस कि अतना सुन्नर मूर्ति अपना घरे का ले जाईं? एकरा के काहें ना एही तिमुहानी पर धइ दीं? जे देखी ओकर मन खुस हो जाई। ई सोचि के ऊ मूर्ति तिमुहानी के बीचो बीच धइ के चलि गइल।

जे तिमुहानी से आवे ऊ ओह मूर्ति के देखे आ बनावे वाला के बड़ाई करे। तबले एगो बजाज ओने से निकलल। ऊहो ओह मूर्ति के देखलस आ सोचलस कि अतना सुन्नर मुर्ति बा। काहें ना एकरा के एगो सारी पहिनावल जाउ? ऊ रंग बिरंगी एगो साड़ी निकाल के मूर्ति के पहिरा दिहलस। मूर्ति के त सुन्दरता अवरू बढ़ि गइल। जे–जे ओने से जाउ ऊ मूर्ति के देखों आ ओकर सुनराई देखि के बिलमि जाउ। ओही बीच एगो सोनार ओने से जात रहल। ऊ राजा के महल से गहना गढ़ि के निकलल रहे। तिमुहानी पर लोगन के ठिठकल देखि के ऊहो ओइजा पहुँचल आ मूर्ति के देखि के ओकर मन खिलि गइल। सोचलस कि जदि कवनो गहना मूर्ति के पहिरावल जाइत त एकरा सुन्दरता से चनरमो लजा जइहें। ई सोचते ओकरा धिआन आइल कि ओकरा पाले तनिकी भर सोना बा। ऊ सोचे लागल कि अतना कम सोना में का बनी, जेसे मूर्ति अउरी सुन्नर लागे? तऽ ऊ सोचि के एगो टीका बनाइ के मूर्ति के पहिरा दिहलस। फेरू ऊपर से नीचे तक देखलस। ओकरा लागल कि अतना सुन्नर मूर्ति साइत कतहूँ नइखे। जे देखी ऊहे मोहाइ जाई। खुसी–खुसी ऊ आपन राह धइलस। तबले एगो सेनुहार ओने से निकलल। ऊहो मूर्ति देखलस। ओकरा बुझाइल कि एह मूर्ति में बस एके कमी बा। काहें ना एकरा के सेनुर लगाइ दीहल जाउ, त एकर रूप दप् दप् करे लागी। सोचते सोचत ऊ राजा के घरे ले जाए वाला सिन्होरा में से तनिकी भर सेनुर लेके लगा दिहलस। अब का रहे! ऊ मूर्ति तऽ अतना सुन्दर लागे लागल कि चारों ओर शोर हो गइल ओकरा गढ़न आ रूप भरल सुघराई के।

दू–चार दिन के बादे एगो भेड़ के चरवाह ओने से निकलल, ऊहो ओह मूर्ति के देखि के अचम्भो में परि गइल। ओकर कुल्ही भेंड़ एने–ओने भागि गइली सँ। बाकिर ओकर त जइसे होसे उड़ि गइल रहे। सोचे लागल कि जदि ई मूर्ति साँचो के रहित तऽ हम एकरा से बिआह कइ लेतीं। बड़ कठिनाई से ऊ मन मारि के अपना घरे गइल। अब त ओकरा पर ओह मूर्ति के निसा चढ़िगइल। सूतत–जागत, उठत–बइठत ओकरे बारे में सोचे।

एक दिन राति खा शंकर–पार्वती जी घूमत–घामत ओने आइ गइल लोग। मूर्ति पर उनुको लोगिन के आँखि परत। देखते रहि गइल ऊ लोग। गउरा शंकर जी से कहली कि, "हे नाथ! जदि एह मूर्ति में प्राण परि जाउ तऽ एकरा नियर सुन्नर केहू ना लउकी। राउर उपकार होई आ ई राउर भक्त बनि जाई।"

शंकर जी तऽ ठहरले अवढरदानी। उनुको मन में आइल कि, "एकरा में प्राण डालि दीहल जाउ। देखीं का प्रभाव होला।" गउरा के ओरी मुस्काइ के देखत शंकर जी ओकरा में प्राण डाल दिहले आ गउरा शंकर जी के चरणामृत ओकरा मुँह में टपकाइ दिहली। ऊ मूर्ति छने भर में एगो सुन्नर नारी बनि के उनुका सोझा 'ऊ नमः शिवाय' कहि के ठाढ़ हो गइल। शंकर–पार्वती ओकरा के आशीर्वाद देके अपना बँसहा बैल पर बइठि के चलि गइल लोग। सचहूँ के ऊ प्राण परल मूरति ओही जा बइठि के रात भर 'ऊ नमः शिवाय' के जाप करत रहल। होत भिनुसहरा ऊहे भेड़ के चरवाह मूर्ति देखे खातिर ओने आइल। देखलस कि ऊ मूर्ति तऽ साक्षात् सजीव नारी बनि गइल बिआ आ आँखि मूँदि के 'ओम नमः शिवाय' के जाप कर रहल बिया। अब ऊ सोचलस कि भगवान हमार बिनती सूनि लिहले एही से काठे के मूरति नारी बनि गइल। अब तऽ हम एकरे से बिआह करबिं। ई मन में आवते ऊ ओह मूर्ति बनल नारी के सोझा आपन प्रस्ताव रखलस। मेहरारू ओकरा के अस्वीकार कऽ दिहली। चरवाह तऽ जइसे बउरा गइल। लागल जोर जबरदस्ती करे। ऊ नारी दुःखी

हो गइल। जइसे जइसे दिन चढ़त आवत रहे। ओइसे, ओइसे भीड़ बढ़त आवत रहे। बात–बढ़त–बढ़त राजा के दरबार में पहुँचल। राजा दूनू के बोलवलन। ओह सजीव मूर्ति के रूप देखि के राजा तऽ अचम्भित रहि गइलन। तबले ओह दरबार में मूरत गढ़े वाला बढ़ई, बजाज, सोनार आ सेनुहारो पहुँच गइल लोग। सभे के लालच कि ई मूर्ति वाली नारी हमरे के मिले के चाहीं।

बढ़ई कहलस कि, 'मूर्ति तऽ हमहीं बनवलीं एसे एकरा पर हमार अधिकार बा।'

बजाज देखलस कि ओकरा सारी में मूर्ति के कुल्ही अँग तोपाइल बा। ऊ कहलस कि, 'एकरा के वस्त्र तऽ हमहीं दिहनी। एसे ई हमरे के मिले के चाहीं।'

सोनार कहलस कि, "सिंगार तऽ हमहीं कइनी– एसे एकरा के पावे के अधिका अधिकार हमरे बा।"

सभले पाछा खड़ा सेनुहार कुछु कहे में सकुचात रहल। ऊहो अपना के रोकि ना पवलस। ऊ राजा के सोझा आइ के हाथ जोरि के कहलस कि, 'रउआ राजा हईं। एह झगड़ा के रउअे सुलझाईं कि सेनुर पहिरावे वाला के का कहाई?'

राजा असमंजस में परि गइलन। काहें कि सभे आ गइल बाकिर जे मूर्ति में प्राण डालले रहल ऊ सोझा ना आइल। राजा तनी सोचलन आ एह बिचार पर पहुँचलन कि एकर असली निर्णय तऽ ई मूर्तिए कर सकेले। एसे ऊ ओह नारी मूर्ति से कहलन कि, "हे देवी! तूँ ही कुल्ही सच्चाई जानत बाड़ू, एसे तू आपन विचार आ फैसला सुनावऽ।" ऊ सभके माने के परी मूर्ति राजा के ई कथन सुनि के बड़ा प्रसन्न भइली आ कहली, "हे राजा भइया! जवन बढ़इया ए भइया जनम उरेहले हे"।

ऊहे बढ़इया भइया माई–बाप कहइहें। सुनि के बढ़ई एकोरा 'जवने बजजवा ए भइया सरिया पेन्हवले हो, आरे सेहो बजजवा ए भइया, भइया कहइहें।'

फेर तनी रुकि के कहली– 'जवन सोनरवा ए भइया टिकवा पेन्हवले हे–

आरे सेहो ऊहे सोनरवा ए भइया भसुर कहइहें ए'

सोनार के बुझाइल जे रीति के अनुसार साँचे बा।

मूर्ति फेरू बोलल–

जवन सेनुहरवा ए भइया सेनुरा पेन्हवले हे

आरे ऊहे सेनुहरवा ए भइया, "सामी जी कहइहें हे!.... आरे"

दरबार मूर्ति के एह समझदारी भरल निर्णय के लोहा मानि गइल। तबो अबहीं एगो प्रश्न सभके मन में रहल कि प्राण कइले आइल आ काठे के पुतरी सजीव नारी कइसे बनि गइल?

अब पुतरी फेरू भक्ति से भरल स्वर में गवली–

जवन शिवगुरू जी चरनामृत पिअवले हे

आरे ऊहे शंकर जी हमरो गुरुजी कहइहें हे....!'

सभ केहू 'वाह–वाह' 'जय हो' कहे लागल आ राजा अपना सोझे ओह मूर्ति के 'सेनुहार' से बिआह करा दिहलन आ भेड़ के चरवाहा के धिराइ के जंगल में भेज दिहलन। ••

❑ बाघम्बरी गृह योजना, भरद्वाजपुरम्, प्रयाग

Anjoria.com
पहिलका भोजपुरी वेबसाइट

अशोक कुमार तिवारी के
तीन गो ग़ज़ल

(एक)

रहे पहिले इ सिधवा सरल आदमी।
आज नफरत से बाटे भरल आदमी।

गीत जिनिगी के गावत-सुनावत रहे
अब तऽ जिनिगी के पाछा परल आदमी।

आदमी जे रहित तऽ करित कुछ सही
आदमी के जगह बा मरल आदमी।

कबले ढोइत वजन नीति के, ज्ञान के,
फायदा जेने देखलस, ढरल आदमी।

अपना बैभव के तिल भर खुशी ना भइल
देख अनकर खुशी के जरल आदमी।

(दू)

ढेर कहलो गुनाह हो जाला।
चुप रहलो गुनाह हो जाला।

जुर्म कइला के बात बा दोसर
जुर्म सहलो गुनाह हो जाला।

नाव रहलो प' लोग डूबेला
एगो तिनका पनाह हो जाला।

चोट पर चोट मर्म पर होला
दर्द अवरू घनाह हो जाला।

बात हर नागवार गुजरेले
मन अब अनमनाह हो जाला।

(तीन)

मचल लूट बा हाय सबके समाइल।
बहुत देर से बात हमरा बुझाइल।

जे सझिया बनल ऊ जियत शान से बा
चलल जे चिलाए उ पहिले रेताइल।

खसोटल आ नोचल अबहुँओ बा जारी
बुला हाड़ में मांस बा लटपटाइल।

जनम चील्ह के बानी चाहत छोड़ावल
रहे नाव मुरखन में अबले लिखाइल।

सवख लागे हमरो कि करतीं घोटाला
तकथ ई लगइतीं कि हउवे कमाइल।

कपट छल छदम के नदी बाढ़ पर बा
केहू हाथ धोवल केहू डुबकियाइल।

भलाई करे में ना पाछा हटब हम
निमन बाटे ओहले बेजइहाँ कहाइल। ••

❑ ग्रा०पो०-सूर्यभानपुर, बलिया-277216 (उ०प्र०)

ग़ज़ल

शिवजी पाण्डेय 'रसराज'

कहाँ आदर बा अब इहाँ, कवनो विचार के
रिस्ता खतम बुझात बा, डोली-कहार के!

जेकरा पवित्रता पर, ना शक कबो भइल
कतना लगत-लचार बा, शब्दो पियार के!

हरलो, मे जीत के मजा, जे बाटे चख रहल
उहो करत बा वाह-वा, अब होनहार के!

उठि के गिरल रजनीति में, हमरा त ई लगल,
चढ़ि के उतरि गइल जस, रौनक बाजार के!

गलती से जवन हाथ प, कइलीं यकीन हम,
बाटे रंगाइल खून से, ममता के मार के।

कतनो तुँ बान्हि-छानि के, रखबऽ कोठार में
जुलमी ह लाँघि जाई, उँचको दीवार के।

'रसराज' लगल दाग ना, अब ले-लिबास में,
मेहनत का बले खाड़ इ, मनई गँवार के।

गीत

राही के ठिठकल, ठेकान लगे जिनिगी।
रतिया के बितते, बिहान लगे जिनिगी।।

पतझर के अवते, बगइचा उदासल
गरमी से तड़कल, पोखरिया पियासल
फुनुगी प अटकल, परान लगे जिनिगी!

फटही लुगरिया में, अनगिन पेवनवाँ
ओकरे में सँइचल बा, केतने सपनवाँ
आसा-निरासा के, तान लगे जिनिगी!

दुरगम रहिया में, काँट-कूस केतने,
जेतने कटत जाय, बढ़ जाये ओतने,
अनचीन्हल रास्ता के, भान लगे जिनगी! ••

ग्रा०पो०-मैरीटार, बलिया (उ०प्र०)

'बावला' का कविता में समय आ समाज

☑ डा0 अशोक द्विवेदी

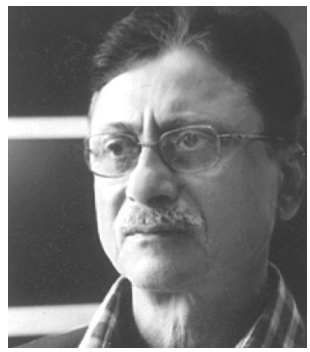

कवनो कवि के रचना–संसार अपना समय–सन्दर्भ में जीवन–स्थिति आ समाजिक अवस्था के ठहराव, गति, बदलाव ओकरा कसमसाहट के त उजागर करबे करेला, सँगे–सँगे जीवन–मूल्यन के संरक्षण आ प्रतिष्ठा खातिर संवेदनो जगावेला। कबो–कबो त ओकर रचना उत्प्रेरक क काम करेले, जवन सामायिक/तात्कालिक जड़ता के तूरि के नया चेतना भर दे। कविता–संसार में समय आ समाज के प्रतिबिम्ब झलकेला। एम्मे कवि का ओह जागरूकता क परिचयो मिलेला, जवन अपना समय आ समाज का दिसाईं जागल आ सचेत बा।

'बावला' के कबित–विवेक अपना समय आ समाज के जवना रूप में परोसले बा, ओमें उनकर स्वतंत्र चेतना आ जागरूकता झलकत बा। ऊ अपना कर्म आ कवि–कर्म दूनों का दिसाईं जागरूक, ईमानदार आ बन्हाइलो (प्रतिबद्ध) बाड़न। सरल आ बिनयी होइयो के ऊ अपना समय आ समाज का कुरूप के सोझा ले आवे के साहस देखावत लउकत बाड़न। आजादी का बाद होखे वाला 'चहुँमुखी बिकास' का बिसंगति के भीतरी पर्तन के हटावत, ऊ व्यवस्था का ओह बिडम्बना (आइरनी) के उघारत बाड़न, जवना में जीवन–मूल्यन के तेज गिरावट बा, लूट–खसोट, भ्रष्टाचार का जरिये संपत्ति के अरजन बा, महँगाई आ गरीबी का बीच, बजार में नकली दवाई क धन्धा फरत–फुलात बा– आ सबले बड़ बात ई कि एह सबका बावजूद बेहयाई चरम पर बिया–

जेतनी बिकास बा पढ़ाई क लिखाई क हो
जेतनी बिकास बड़वार बेहयाई क ऽ।
गाँव क विकास, ठाँव–ठाँव क विकास होत
होत बा बिकास इहाँ नकली दवाई क ऽ।
रोजी क विकास रोजगार क विकास होत
होत बा बिकास हाड़तोर महँगाई क ऽ।
खेती क विकास होत बारी क बिकास होत
होत बा बिकास इहाँ ऊपरी कमाई क ऽ।।

एह थोथी तरक्की के अउरियो ढेर खानी विसंगति–बिद्रूपता बाड़ी सन। राजनीति आ अफसरी जनसेवा आ राष्ट्र का उन्नति खातिर ना होके, सत्ता आ शक्ति–संपत्ति हासिल करे के जरिया बनल जातिया। आश्वासन, नारा आ तमाम तरह के सपनाइल–वादा का बाद नेता राजधानी आ मिलल कुरुसी से चिपक जात बाड़न। पावल कुरुसी बचवलो के उनहन लोग क अलगे दाँव–पेंव, कला–करतब बा। 'बावला' जी ओह लोग से बतियावत खा, ओ लोगन क इरादा आ करतूतन के चर्चा करत बाड़न– "बबुआ हो गइलैं लखनउवा/रउवा काहें के सुनैं। बाबा गान्ही के बेटउवा, रउवा काहें के सुनैं!" ए छोट शिकायती ताना का बाद ओह लोग क असलियत खोल के रख देत बाड़न–

"आसपास खाली राजधानी के घूमल रहा
गँवई क गाँव घर जरैला, जरै दा।
गोटिया बिकान के दुकानन में लगल रहा
लूटपाट चोरी डाका खुलके करै दा।
ठेलि–ठेलि गाड़ी के अगाड़ी घसकाये चला
लड़ि के मरत लोग लड़ि के मरै दा।
नेताजी नमस्कार कुर्सी बनल रहै
तेल छिछिकारि आगि फूँकि दा, बरै दा।।

तेल छिरिक के आगि लगावलो राजनीति के हथकंडे हऽ जवना में जाति, वर्ग, भाषा आ मजहब आगि लगावे आ फूँकि के जरावे के कामे आवेला। 'बावला' एह जमीनी जथारथ से बखूबी परिचित बाड़न, खीसि आ खिन्नता में, सोझिया मनई लेखा कहि जात बाड़न।

देस का आजादी का बाद जौना 'सुराज' के असरा–कल्पना लोग कइले रहे, ऊ पूरा ना भइल। जन–आकांक्षा आ सपनन पर टुषार परे का पाछा अनेक कारन गिनावल जा सकत बा– समाज आ बेवस्था के अंतर्विरोध के सझुरवला– सधला का जगहा, बेवस्था क संचालक लोग कतने मुसीबत आ रोड़ा अँटका दिहल। साधन–सुबिधा संपन्न आ दबंग लोग अपना निजी सवारथ आ ठसक में अपने कहाये वाला कमजोरन के हक मार लिहल। समानता आ न्याय के जवन उमेद–असरा लागल रहे, ओके कठया मार

दिहलस। लोकभाषा के कतने कवि अपना रचना में ए 'सुराज' का बिद्रूप आ एसे उपजल दुख आ निरासा के अपना–अपना ढंग से देखे–देखावे क कोसिसो कइल लोग, बाकि एह कबि–साहित्यकारो लोगन के कवनो कदर होखे तब नऽ! ए माहौल में 'बावला' नियर केतने भोजपुरी कवि लम्बा समय ले चर्चो से बाहर रहे।

मोती बी.ए., रामबिचार पांडेय, जगदीश ओझा, 'सुन्दर' स्वामी विमालानन्द, रामनाथ पाठक, 'द्रणयी', महेन्द्र शास्त्री, जर्नादन पाण्डेय 'अनुरागी' जइसन अनेक कवि 'सुराज' के विसंगतियन के साथ ओसे उपजल दुख आ सामान्य जन का विकल अवस्था के चित्रित करे आ उरेहे के जतन कइल लोग। जगदीश ओझा 'सुन्दर' त एह 'सुराज' का सच्चाई के अपना काव्य–संग्रह "जुलुम भइलें राम" में अइसे उघार कइले बाड़न कि मन क्षोभ आ व्यथा से भर जाई– "कुकुर भइले जुलुमी जन हाड़ भइल जिनिगी... नदी भइल नैना पहाड़ भइल जिनिगी।" सुन्दर जी अपना कई कवितन में भेद–भाव, गरीबी, ऊँच–नीच के खाई आ शोषन के बढ़त गइला के चित्रण अपना कवितन में कइले बाड़न। उनकर गँवई प्रतिनिधि सीधा–सोझबक 'बुद्धू' दुःसह पीर के अभिव्यक्ति करत बा– "बटिया निरेखत नयन पथराइल। हमरी दुअरिया सुरजवा न आइल" 'सुराज' के विद्रूप अभिव्यक्ति हवे।

'सुराज' का बाद नवका धनिक–वर्ग, नोकरशाही, आ राजनीतिक नेतन क गँठजोड़ एगो नये उभार लिहलस। संरक्षन में पलत–बढ़त अपराध आ अढ़तिया–कारपोरेट के पइसार त लोकशाही के अर्थे बदल दिहलस। मोती बी0ए0 'हाकिम' कहाये वाला एह नया भाग–बिधाता सभ के तुलना निर्दयी दइब (दैव) से कइले बाड़न, जवन ए किसान–मजदूरन का दुर्वह अवस्था पर अउर बेरहम होत जालें सन... "हाकिम दइब हतियार हो सजनी!" गँवई कस्बा का सिवान में रहे वाला, खेती–बारी–मजूरी करे वाला लोगन के जहाँ असमानता, भेदभाव, अन्याय, शोसन–दमन आ गरीबी से मुक्ति मिले चाहत रहे, जीवन–स्तर उठे के चाहत रहे ऊ ना मिलल। भासन, रासन, झूठ वादा आ सुधार के अफीम जरूर चटावल गइल पटाये खातिर।

बढ़ल कमीशन वाला धन्धा, धूल झोंकि के करैलें अन्धा,
चाम क कोठिला पहरू कुत्ता, ए बबुआ मत नींद में सुत्ता,
मोल बिकै ईमान इ हिन्दुस्तान में मारल जालीं गइया।
ए मोर बाबू, ए मोर भइया।।
ऊपर नीचे एकै लेखा, बिगर गइल जनतन्त्र कै रेखा,
केतनी कूँड़ कूँड़ सनमानी, सगरों मिलल दूध में पानी,
खरिहाने में धान बरउलीं, एक बाल में सत्तर पइया।
ए मोर बाबू, ए मोर भइया।।

रामजियावनदास 'बावला' एही साधारन वर्ग के छोट खेतिहर–मजूर रहलन। ऊ अपना समय आ समाज व्यवस्था के नीक से जनले–बुझले रहलन। कबिताई से जुड़ल रहला का कारन अपना समकालीन कवियन का अनुभव आ भावाभिव्यक्ति से उनकर जान–पहिचान आ बोध ज्ञान रहे। कम पढ़ल–लिखल रहला का बावजूदो ऊ अपना संवेदन–ज्ञान, जिनिगी के अनुभव आ प्रतीति का आधार पर समय का साँच के बयान करे में ऊ अगसर रहलन। अन्तर्विरोध आ विसंगतियन पर अँगुरी राखे आ साँच के उजागर करे के उनकर आपन शैली रहे। खेती–बारी चरवाही वाला गाँव से निकल के थाना, ब्लाक, तहसील आ जिला तक दउर–धूप कइले रहलन। उनके नीक से मालूम रहे कि जवन होखे के चाहीं, तवन नइखे होत। भेदभाव, पक्षपात, कमीशन आ घूसखोरी पूरा बेवस्था के बिगार देले बा... 'मोरे घर होरी जरै, तोहके देवारी!" आ "एक ओर होली दीवाली बा एक ओर/एक ओर भारत बटेरन क बाज हौ... मालुम न देला की बुढ़ऊ बतवलें त ऊहै सुराज हौ कि दूसर सुराज हौ!" सुराज में न न्याय मिलल न ऊँच–नीच के खाई पटल, ना आर्थिक स्वालंबन क ठेकान, ना सुधरे क कवनो भरोसा; बलुक "उँचकी अटरिया के ओर सब निरखैला/निचवाँ न ताकैला धँसल जाले खाई।" आ "एक ही धरतिया पर कइ संसार" के निर्मान होत गइल।

'सुराज' खातिर जंग लड़े वाला शहीद हो गइलन स, जवन बाँच गइलन सऽ उनहन क किरदार बदल गइल, कतने त गुमनामी का अन्हार में चल गइलन, कतने हाशिया पर ढकेल दिहल गइलन। सत्ता आ कुरुसी पर अइसनका ढेर लोग काबिज हो गइलन जवन ओघरी चुप, तटस्थ आ महत्वाकांक्षी रहलन। 'बावला' एह साँच के अपना कविता में बयान कइले बाड़न–कहीं संकेत से, कहीं क्षोभ से कहीं व्यंग्य से। जथारथ के मूल में छिपल विसंगति के उजागर करे, में 'बावला' के आपन आ अपना लोक के भोगल आ अनुभव कइल सत्य बा, कहहूँ के उनकर आपन शैली बा।

केकरे बदे किरिन मुसुकाइल,
धरती केकरे नाम लिखाइल,
के तरुनी सँग मउज उड़ावै,
बुढ़िया दादी पउलस के,
सोचा आजादी पउलस के !
केकरे आह से परवत टूटल,
शिव ब्रम्हा के आसन छूटल,
के जोगी बन अलख जगवलस,
पर परसादी पउलस के,
सोचा आजादी पउलस के !
छोट औकात वाला किसान होखे भा मजदूर–रोज

रोज क दुख–बीपत क अलग–अलग कथा बा। शोसन, दमन आ उपेक्षा पाछा परल बा, एसे कि उ सिधवा आ कमजोर बाड़न सऽ। कम से कम में गुजारा करे क अभ्यास उन्हन के सन्तोषी आ दयनीय बनवले बा। परिवार का भरन–पोसन खातिर, ओकरा सुरक्षा खातिर, करेजा पोढ़ कइये के कुछ न कुछ करे के बा।– 'बावला' एह बेकली आ छटपटाहट के अपना अनुभूतियन से जोड़ के बयान करत बाड़न–

घरहूँ बिपतिया बहरहूँ बिपतिया
न रतिया में कल बा, न दिनहीं में कल बाय।
जहाँ–जहाँ जाईं, परछाईं दुखदायी होत
धरती के अँचरा में पग–पग छल बाय!

जियका आ जिनिगी के निबाहे में केतना कठिनाई, केतना उढुक–अड़चन आ दुख बा, बतावल मुश्किल बा। इहाँ त अक्सरे औचक कवनो नया विपत्ति आ बिपरीत सोझा आके खाड़ हो जाले कि निबुकावल कठिन हो जाला। एक–एक बात के हिगराइ के बतावल आसान नइखे धरती छोट पर जाई लिखला पर– 'केतनी बिपतिया कहल कहि जात नाहीं
छोट परी धरती न लिखत अँटालै।'

कहे क मतलब ई कि छन–छन गुजरत समय का साथ खड़ा समस्या, आ चुनौतियन से पार ना पवला के विवशता एहू से बा कि जवना समाज में रहे के बा, ऊ आपन सुभाविक नैतिक–मूल्य तेयाग कर चुकल बा। ओके राजनीतिक आ तिकड़मी लोग जाति–वर्ग आ बड़–छोट में बाँट देले बा। ऊ समाज राह देबे के बदला राह रोके भा राह भटकावे का उद्दम में लागल बा–

'कलही समाज, दगाबाज के दखल बाय
कल नाहीं बाय बोझ बढ़त कपारै के।'

'बावला' अपना शिव–चर्चा तक में रुसल शिवजी का बहाने, उनसे ई समाजिक विसंगतियन के सवाल पूछे से नइखन रुकत, 'दलबन्दी से घबड़इला या कहुँ देखला घुसखोरी। हार भइल बा कोर्ट में या की भइ तोहरे घर चोरी...कहवाँ जाला बुढ़ऊ।' समाज का एह स्थिति से ऊ एतना खिन्न बाड़न कि अपना आराध्य देवता तक के, ओह विषम स्थिति में उतारि देत बाड़न। कवि 'बावला' के आपन शैली बा।

जोर–जर्बदस्ती, दबंगई आ गुण्डई का सँग–सँग ओके ना सम्हार पावे वाली शासन बेवस्था पर चोट करे क उनकर निराला अंदाज बा। उनका ब्यंग में संबेदना आ ब्यथा से भरल करुना बा– जइसे ऊ ई कहल चाहत होखसु कि 'सुराज' क ई मतलब थोड़े हवे–

जबरा के आगे मुँह दुबरा न बोलि पावे/अबरा समुझ केहु घसियो न डालै।

लोफरा लबरिया से, छुरिया कटरिया से/डरहीं क मारे केहू जीभ न निकालै।

देसवा क नेतवा अनेतवा न रोक पावैं/ खेतवा–कियरिया पसेनवा से पालै।

टुअरा क नाईं पनकुँवरा पुकार करै/अस क अन्हेर बा करेजवा में सालै।।

ई 'अन्हेर' (अन्धेर) समाज आ शासन बेवस्था के बेलगाम स्थिति आ 'लचर' रवैया का ओर इशारा करत बा, जवना में संपन्न आ बरियार, दबंग जवन चाहे कर सकत बा, जवना में वी.आइ.पी. लोगन आ नेता–मंत्री खातिर आम जन के रोक के रस्ता बनावल जाता। सगरी झंझट–झमेल आ फजिहत कमजोरन का जिम्मा बा। गरीबी हटावे आ 'समाजवाद' ले आवे का नारा का पाछा जवन असली सूरत छिपल बा ओपर समकालिक कई भोजपुरी कवियन के कलम चलल बा। गोरख पांडे जइसन युवा कबि क लिखल "गान्ही से आई आन्हीं से आई, टुटही मड़इयो उड़ाई। समाजवाद बबुआ धीरे–धीरे आई" चच्रा में रहल बा। समाजवाद आ ओसे जुड़न राजनेतन के असली चेहरा त खुद समय धीरे–धीरे उजागर करत चल गइल। जनचेतना से जुड़ल भाषा के कवियो अपना अर्थगर्भ उक्तियन से ए सच्चाई के कई रूप में बयान करे में पाछा ना रहलन सऽ। 'जनतन्त्र' कविता में 'बावला' एके अपना नाटकीय ढंग से उजागर कइले बाड़न–

एक ओर खाई धँसल जात बा, चोटी जात अकासे
समाजवादी नारा देलैं, कथा गइल कैलासे, का बताईं मितवा!'

XX XX XX

भरलैं हुँकारी भुखमरिया न होई
रोग रही भलहीं, मलेरिया न होई
अपने निवास करैं तिसरी मुँड़ेरी।
कोटा में, कोट में कचहरी में लूटैं
डाँकू चोर इनहीं क जोर पाइ छूटैं
दलगत अपने बजावें रणभेरी।

क्षेत्रीय दलगत राजनीति बँटल समाज आ भ्रष्टाचार भारतीय लोकतन्त्र के बहुत नोकसान पहुँचवलस। अपना अपना फायदा खातिर दिहल गइल, लोकलुभावन नारा आ हथकण्डन का बीच साधारने जन छल के शिकार बनल। ओकरा के छोट–छोट चीज–बतुस आ अझुरहट में अइसन फँसाइ दिहल गइल कि ओके अपना साथ होखे वाली ठगी आ छल के पते ना चलल। साधन संपन्न लोगन खातिर ना, खाली कमजोर वंचित आ गरीबन खातिर सगरी कठिनाई बा। रासन आ कपड़ा के कोटेदार बा, परमिट का सिमेन्ट खातिर ब्लाक बा। अँजोर खातिर किरासन तेल क मात्रा बा आ एह सब के पावे खातिर ओकर भाग–दउर बा। बावला' के

हफ्तावारी रोजनामचा इहे बतावत बा–

हफ्ता में सात दिन एक दिन चीनी के
एक दिन कोटा के कपड़ा में निकल गयल
एक दिन सिलमिट के परमिट पैरब्बी में
एक दिन पूछताछ आफिस में टल गयल
एक दिन बैंक में ब्लाक बदे एक दिन
एक दिन माटी क तेल बदे चल गयल
रात कुल बीत गयल सपना कलपना में
बावला लगैला ऊँट करवट बदल गयल।।

एतने ना कमजोर वर्ग आ किसान के अनुदान (सब्सीडी) पर मिले वाला कर्ज में कमीशन–घुसखोरी के अलावा छूट पर मिले वाली सुबिधो (खाद, बीज, बैल, भैंस आदि) बाड़ी सन। एके पावे बदे बरास्ते विकास आफिस बैंकन के ऋण मेलो (क्रेडिट कैम्प) बा। एह डगर से मिले वाला घीव क दिवाली कहीं अउर होले आ 'दलिद्दर खेदे' वाला सूप कहीं अउर पीटल जाला। बावला एह पूरा माहौल का निरीक्षण का बाद जवन रिपोट देत बाड़न ऊ चौंकावे वाला बा। उनका मुताबिक डी0पी0ए0पी0 योजना अकाल मृत्यु लेखा मारे वाली बा। पम्पिंग सेट में छूट दियावे आ भलाई का नाँव पर बीच क लोग अवैध कमाई करेंले। बाद में जोड़ घटाव आ हिसाब के बाद मिले वाली छूट, हाट के हलुवाई मतिन दुसरे लोग लूट लेलैं। किसान के कपारे कर्ज चढ़ी बाकिर ए0डी0ओ के दस परसेन्ट फायदा होई। अइसहीं पशुअन के मेलो के खिस्सा बा– लाभार्थी बदे त ई कर्जे क कुआँ बा–

भइँसिन क मेला की मदारिन क खेला हौ
बेला हौ कर्जा कढ़ाय जात कूप हौ।
चौगुन चलाँकी बाय झाँकी बाय सुबिधा क
दुबिधा में जान जात लउकत न रूप हौ।
मूठ घुरभारी क, छूट ब्यौपारी क,
महँगी जनात जइसे जेठी क धूप हौ।
वाह रे बिधान, बिधि बाम बा गरीबन कऽ
खात बा देवारी घीव, पीटल जात सूप हौ।।

विकास, आधुनिकता आ प्रगति का बारे में 'बावला' अपना कवितन में जवन टिप्पनी करत बाड़न ओम्में जथारथ आ ओकर बिसंगति दूनों लउकत बा। उनके स्वदेश आ संस्कृति का कीमत पर अन्धाधुंध बिदेशी नकल नापसन्द बा। जेवन अंगरेज देस के लुटलन–उजड़लन सऽ, ओकर पच्छ खींचे वाला देश के कबो कल्यान ना कर सकेलें– "कहले से कहबा कि कहैलें कटार अस/राज भयल आपन समाज परदेस कऽ!" क अर्थ ई बा कि अंग्रेजन वाला हथकण्डा आ तौर–तरीका से देस ना चल सके। नाहियें ओ आँकड़ेबाज नौकरशाहन से बेवस्था सुधर सकेले, जवन कागजी–आँकड़ा का खेल से जमीनी–सच्चाई के अउर तोप देत बाड़न। बावला के उदारवादी नीतियो में ढोंगे लउकत बा–

"वाह रे उदारवृत्ति भारत निवासिन क/चोर–चाई सबके खियावे के हो गयल। नागिन के बच्चा जे माहुर से घात करै/दूध अउर चीनी पियावै के हो गयल।. ..जोर–जोर गाँठ परदेस के बिलारिन से/घरे–घरे कुक्कुर जियावै के हो गयल।"

जाति–वर्ग, संप्रदाय का नाँव पर भारत के समाजिक एकता के बाँटे आ आपुस में फूट डाल के लड़ावे वाली राजनीति समाज आ देश दूनों के नोकसान पहुँचा रहल बिया। ई 'बावला' जी का समयो में रहे आ आजुओ बा। याने आजुओ राजनीति, जातीय विभाजन, मजहबी तुष्टीकरण आ दलित–पिछड़ा का इर्द–गिर्द घूमत बिया। निजी नफा–आ 'वोट बैंक' खातिर इस्तेमाल होखे वाला लोग एह राजनीति का जाल में अजुओ अझुराइल बा।

'बावला' जी जब "सक्ती बँटाय गइल ढोंग के बजारी में/देस मोर सरग नाहीं नरक भयल जात हौ" कहन बाड़न त ऊ एही पीर के अनुभव करत कहत बाड़न, जवना कारन दिन–पर–दिन आपुसी द्वेष–वैमनस आ अनदेखउवल बढ़ल जात बा। सुधारे–सँवारे के राहो ऊ अपना ढंग से बतावत बाड़न–

गुरुजन, पुरजन परिजन के हरिजन क
दँवरी के नधले ज जातिवाद पार हटी।
जन–जन इच्छा से, सादगी से शिक्षा से
मौत के परीक्षा से भारत के भार हटी।

'बावला' का कविता–संसार में, समाजिक सरोकारन का सँगे परिस्थिति से उपजल अवमूल्यन का कारकन के संकेतिक अभिव्यक्ति त भइले बा, सूखा, बाढ़, बनकटान, महँगाई आदि सामायिक समस्यनो पर उनकर कलम चलिल बा। अपना समय के लेखकीय तेवर, से प्रभावित होके बावला कुछ नया व्यंगात्मक तेवर के 'जनतंत्र–चलीसा' जइसन कविता लिखले बाड़न। अइसहीं रेडियो कार्यक्रम खातिर विशेष अवसर पर सुनावे लायक कविता बाड़ी सेन बाकि एह सब कविता के तात्कालिके महत्व बा। रचना–कौशल आ काव्य–सिद्धि के गवाही देबे वाली कविता उनका संग्रह "गीत लोक" में अउरियो बाड़ी सन, जवना में उनका जुगबोध क स्वर सुनल जा सकेला। 'बावला' अपना संवेदन–अनुभव–ज्ञान आ कबित–विवेक का सहारे अपना समय–सन्दर्भ में, अपना कविकर्म के निबाह ईमानदारी से करत लउकत बाड़न। ••

चम्पारन के तथ्य-कथ्य

गुलरेज शहजाद

भारत वर्ष के उत्तर पच्छिम सीमा पर बसल बा बिहार परदेस के चंपारन जनपद। पौराणिक काल से ले के आधुनिक भारतीय इतिहास के पृष्ठन पर चंपारन के नाम प्रमुखता से अंकित बा। विश्व साहित्य के प्रथम कवि महर्षि वाल्मीकि के साधना स्थली ई धरती ,भक्त ध्रव के जनम आ करम भूमियो के तौर पर जानल जाला। एह धरती पर शांति के अगुआ भगवान बुद्ध के पावन चरन पड़ल आ इहँवे उनका पहिलका बौद्ध –विहार बनवला के सौभाग्य प्राप्त भइल। गंडक नदी के किनारे ऋषि–मुनियन के साधना स्थली, महाराजा उत्तानपाद के हृदय प्रदेस, विदेह राजा जनक के प्राचीन नगरी, लिच्छवि वंश के साम्राज्य, बौद्ध लोगन के स्मारक आ राजा हर्षवर्धन के प्रिय कम स्थल रहल बा ई धरती।

बाद के दिनन में ई धरती अंग्रेजन के भारत पर कब्जा के बाद शोसन जुलुम के पराकाष्ठा देखलस आ आजादी के नया सवेरो देखलस आ अनुभव कइलस।

ई बात सब केहू जानेऽ ता कि अंग्रेजन के गुलामी से आजाद करावे खातिर कई गो आंदोलन भइल बाकिर ओह में सत्याग्रह आंदोलन के विशेष स्थान बा। 'सत्याग्रह' मतलब सत्य खातिर आग्रह –अनुराग, सत्याग्रह मतलब अन्याय के विरोध कइल बाकिर अन्यायी से बिना बैरभाव ना के।

महात्मा गांधी सब से पहिले 1906 में दक्षिण अफ्रीका के ट्रांसवाल में औपनिवेशिक सरकार का हाथे एशियाई लोगन खातिर नस्लवाद के कानून के खेलाफ सत्याग्रह के शुरुआत कइले रहलें। दक्षिण अफ्रीका से लवटला के बाद भारत मे गांधी जी के अगुआई में भारत के आजादी खातिर सत्याग्रह आंदोलन जोर पकड़लस। जेह में चंपारन सत्याग्रह, वारदोली सत्याग्रह आ खेड़ा सत्याग्रह खास बा। महात्मा गांधी चंपारन में शोषित किसानन के संगठित करत सत्य आ अहिंसा के सफल प्रयोग कइलें, जेकरा के इतिहास के पृष्ठन में चंपारन सत्याग्रह के नाम से जानल जाला।

15 अप्रैल 1916 के महात्मा गांधी के आगमन चंपारन के धरती पर भइल। 1916 में संयुक्त चंपारन में कुल गाँवन के संख्या 2846 रहे। एह में तीन चौथाई हिस्सा पर रियासतन के मिलकियत रहे। चंपारन के तीन रियासतन बेतिया, रामनगर आ मधुबन राज के रैयतन के एक मात्र काम खेती रहे। बेतिया आ रामनगर राज के अधीन 2220 गांव रहे। एह में दूनू राजघरानन के सीधे नियंत्रण में महज 283 गांव रहे बाकी 1938 गांव कोठियन के व्यवस्था के अधीन रहे, जेकर संचालन अंग्रेजन का हाथ में रहे।एह गांवन के हालत ई रहे कि कोठी वाला निलहा अंग्रेजन आ उनकर दलाल भारतीय जमीनदार लोग (जिनका अधीन पांच,दस,बीस गाँव अलगे–अलगे जमीनदारी में रहे।) मनमाना लगान वसूले खातिर आजाद रहे।नील के खेती खातिर निलही कोठी सब सहयोग करत रहे आ ष्तीन कठियाष प्रथा के जकड़न में चंपारन के किसान लोग छटपटात रहे।

अंग्रेज निलहन के जुलुम आ अत्याचार के खिलाफ पहिलका विद्रोह 1867 में लाल सरैया कोठी से सुरु भइल। एह कोठी के मालिक जेम्स मैक्लिआड रहे। मैक्लिआड के निलहा अंग्रेजन के राजा समझल जात रहे। काहे कि ओकरा जमीन के रकबा (क्षेत्रफल) काफी बड़ रहे आ ओकरा अस्तबल में 120 गो घोड़ा रहे।लाल सरैया कोठी के अंतर्गत मौजा जौकटिया के रैयत लोग नील के खेती के बदले दूसर फसल के खेती कइल सुरु कइल।कोठी आ रैयत में संघर्ष सुरु भइल।रैयत सब मिल के कोठी में आग लगा दिहल लोग जेकरा चलते बंगला के आगे के हिस्सा जर गइल।

दूसर विद्रोह 1907 में तेलहरा कोठी के एलाका में भइल,जेह में अंग्रेज ब्लूमफील्ड के हत्या ओकर कचहरी में दिनदहाड़े कर दिहल गइल। तिसरका विद्रोह साठी एलाका में भइल जब किसान लोग कोठी के मजदूर

उपलब्ध करावे से साफ इंकार कर देहल। बेतिया सब डिविजन में चौथा भारी विद्रोह 1908 में भइल। किसान संगठित होके हिंसक आंदोलन के धमकी देवे लागलन। विद्रोह के मद्देनजर पटना के कमिश्नर के अनुमोदन पर बंगाल सरकार बेतिया के SDO रह चुकल ओह समय के कृषि निदेशक डब्ल0 आर0 गोर्ले के जांच के आदेश दिहलस। ओकरा बाद 1909 में साढ़े बारह प्रतिशत अधिक दर से नील उत्पादन के कीमत के एलान भइल।दिसंबर 1911 में जॉर्ज पंचम जब नेपाल यात्रा से वापस लौटत रहलें तब नरकटियागंज में किसान नेता लोग एह बाबत एगो ज्ञापन दिहलें।

1912 में बिहारी समाचार–पत्र में चंपारन के किसानन पर जुलुम आ अत्याचार के कहानी पटना से लगातार छपत रहे। बिहारी समाचार–पत्र के संपादक महेश्वर प्रसाद अपना लेख आ प्रकाशन से गोरा निलहन

पर हमले ना करत रहस बलुक गोर्ले प्रतिवेदन के सार्वजनिक करे के मांग के साथे 1908 में बेतिया उपद्रव के बाद जेल भेजल गइल रैयतन के जेल से छोड़े के मांगो करत रहस। महेश्वर प्रसाद 1912 में चंपारन आके कलेक्टर रेनी से भेंट कइलें आ चंपारन के किसानन के हालात आ कोठियन के जुलुम के मजबूती से उठावत समाधान के मांग कइलें।

चंपारन के लोगन का हक के सवाल के अधिवक्ता ब्रजकिशोर प्रसाद लेजिस्लेटिव काउंसिलो में उठवलें। सरकार के मुख्य सचिव एचव मैकफरसन 13 मार्च 1913 के समाधान के आश्वासन दिहलें। 10 अप्रैल के बांकीपुर के राजनैतिक सम्मेलन में ब्रजकिशोर प्रसाद चंपारन के सवाल खड़ा कइलें। 03 अप्रैल 1915 के छपरा में कांग्रेस के बैठक में ई सवाल चर्चा में छाएल रहल। 07 अप्रैल 1915 के ब्रजकिशोर प्रसाद बिहार आ उड़ीसा लेजिस्लेटिव काउंसिल में एगो प्रस्ताव पेश कर के चंपारन के रैयतन पर जुलुम आ अनेत के सवाल खड़ा कइलन। मार्च 1916 में ''प्रताप'' समाचार–पत्र में ई मुद्दा उठवलें। आई0 सी0 एस0 अधिकारी जे0 ए0 स्विनी जांच कर के रैयतन पर जुलुम के कहानी आ इल्जाम के सही पवलें। स्विनी के जांच आ समाधान के कोसिस चलते रहे कि एही बीच 15 अप्रैल 1917 के महात्मा गांधी चंपारन अइलें।

चंपारन सत्याग्रह के समय चंपारन के गांव अशिक्षा आ गरीबी के दंश झेलत रहे। आमदनी के दोसर जरिया ना रहे। आजादी के बाद किसानन के हालत में अतने फरक आइल कि ऊ अब कह भर सकत रहलें कि ''आज हमनी आजाद हईं''। ओह समय राज आ उनकर लीजधारक अंग्रेजन के कोठी रहे आ देशी जमीनदार अंग्रेजन के दलाल रहले जे किसिम–किसिम के लगान से किसानन के शोषण करत रहले आ ओकर कुछ हिस्सा चंपारन के छोट–छोट जमीनदारन के मिलत रहे।

मौजूदा समय पर नजर डलला पर पता चलऽ ता कि आजो सत्ता के दलाल, ठेकेदार आ माफिया लोग उहे काम कर रहल बा। नील के कोठीयन के खात्मा के बाद चीनी मील आ उनके दलाल किसानन के नगदी फसल गन्ना के नाम पर लूट रहल बा। आज सरकार का ओरी से जारी योजना सब के नाँव पर गांव के दबंग, दलाल, अधिकारी आ नेता मिलजुल के

किसानन के लूट रहल बाड़ें। जे विकसित होत गइल आ शिक्षा में तरक्की कइल उ लोग गांव छोड़ दिहलें। नवका पीढ़ी गांव से पलायन कर के दिल्ली, पंजाब आ हरियाणा जइसन परदेस में मजूरी करे लागल। दूसर ओरी गांव के भोला–भाला, अनपढ़–गंवार मजूर–किसान आजो अपना खातिर जारी योजना सब के कुछ हिस्सा खर–खैरात खानी पाके संतोष कर के जुलुम–जेयादती के चालाक चक्र झेल रहल बा।

गांधी जी जे बुनियादी शिक्षा के बात कहले रहस, आजो ओह शिक्षा पर प्राइवेट माफिया सब के कब्जा बा। सरकारी शिक्षा व्यवस्था खिचड़ी होके रह गइल बा आ सब सरकारी शिक्षा–स्वास्थ्य आ कृषि के योजना सब दलालन के चंगुल में फँसल बा।

चंपारन सत्याग्रह का बाद चंपारन में कृषि विकास खातिर दू गो बड़ काम भइल। गंडक नहर प्रणाली के विकास आ नगदी फसल गणना के उत्पादन के बढ़ावा गन्ना किसानन खातिर काफी सुखद रहल। आर्थिक संपन्नता के दिशा में चंपारन के चीनी मील सब से बड़ा फायदा भइल। खेती पर निर्भरता के चलते गंडक नहर प्रणाली चंपारन के कृषि प्रधान आबादी खातिर बरदान साबित भइल। दुर्भाग्य ई बा कि आजादी के बाद एह दिशा में कुछ खास ना हो सकल। पारा–पारी चीनी मील बंद होत चल गइल। चकिया, मोतिहारी, लौरिया आदि क्षेत्र के लाखन के कृषि प्रधान आबादी के आर्थिक आजादी पर ग्रहण लाग गइल। गंडक नहर प्रणाली के विस्तार भइल बाकिर सदानीरा नदियन

के जलग्रहण क्षेत्र बरखा के अभाव में सिकुड़त चल गइल। नहर प्रणाली ध्वस्त होत गइल आ सिचाई के एकलौता साधन निजी नलकूप रह गइल। सरकार सब किसानन खातिर सरकारी नलकूपन पर अरबन रुपिया खरच कर के कुछ खास ना कर पवलस। कृषि आधारित उद्योग के जाल खड़ा करे लाएक परिस्थिति के बावजूद कृषि प्रसंस्करण के कउनो उद्योग पूर्वी आ पश्चिमी चंपारन में खड़ा ना हो पावल। पहिले बिजली आपूर्ति के बहाना रहे बाकिर आज बिजली आपूर्ति के व्यवस्था ठीक भइला के बादो कउनो सकारात्मक पहल के रास्ता जोहल नियति बन गइल बा।

खादी आ ग्रामोद्योग के गांधी जी के सपना जे गांव के आत्म निर्भर बनाइत, विकसित ना हो पावल। खादी ग्रामोद्योग के पूरा संरचना ध्वस्त हो गइल। हस्तकरघा आ खादी उत्पादन के बढ़ावा देवे खातिर सरकार सकारात्मक कदम ना उठवलस। शहद, सीप आ तेल सहित कृषि आधारित दूसर प्रसंस्कृत उत्पाद के प्रोग्राम आकार ना ले पावल। पशुपालन आ गोवंश संवर्धन खातिर सरकारी संरक्षण आ सघन सहयोग के विशेष प्रोग्राम चंपारन में विकसित ना हो सकल।

साहित्य आ संस्कृति के बढ़ावा देवे खातिर पुस्तकालय, वाचनालय, ग्रामीण खेल–कूद प्रोग्राम के विशेष आयोजन आ योजनात्मक उपलब्धि चंपारन के भाग्य में ना रहल। महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय चंपारन के जरूर मिलल, बाकिर ई आवे वाला समय बताई कि चंपारन के गांव के शिक्षित बनावे आ ओकर विकास में ई कइसन भूमिका अदा करेता चंपारन के राजनैतिक नेतृत्व अब संज्ञा–शून्य नइखे। वर्तमान में कृषि आ किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार पूर्वी चंपारन के बाड़ें। उनका ओरी से कई तरह के एलान आ प्रयास चल रहल बा। इनका अलावा पर्यटन मंत्री, बिहार सरकार पूर्वी चंपारन के जिला मुख्यालय मोतिहारी के विधायक बाड़ें। चंपारन सत्याग्रह के शताब्दी वर्ष पर उनकरो ओरी से कई तरह के एलान भइल बा। गांधी सर्किट, सूफी सर्किट आ बुद्ध सर्किट से चंपारन के संबंधित ऐतिहासिक जगह के जोड़े के एलान भइल बा आ कुछ कामो चल रहल बा। मोतिहारी के ऐतिहासिक मोतीझील के संरक्षण आ विकास के बरिसन पुरान मांगो पर कई तरह के एलान भइल बा। अब आवे वाला समय बताई कि जमीन पर काम कतना उतरल? कुल मिला के गांधी के सत्याग्रह के जे बुनियादी सिद्धांत रहे ओकर एक–एक तत्व आज ले उपेक्षित रहल चलि आइलन। गांधी के सपना के भारत कौन कहे गांधी के

सपना के चंपारनो ना बन पावल। मौजूदा समय के ई चुनौती इहाँ का हर समाजिक, राजनीतिक, बुद्धिजीवी खातिर बा, साथहीं जनतो के जागे आ कमर कसे के माँग करत बा।

मौजूदा समय पर नजर डलला पर सच्चाई एकदम उघार लउकी। पथ उहे बा पथिक बदल गइलें। सत्य उहे बा आग्रह बदल गइल। बुनियादी सवाल अपना जगह काएम बा। आजादी मिलल बाकिर आजादी के सूरज रास्ता देखत आँखियन में ना उतरल। समूचा चिंतन, विचारधारा आ यत्न विश्वग्रामी हो गइल। वैश्वीकरण आ बजारवाद के तिलक माथा पर चमक रहल बा। गाँव के खरिहानन में धूरा उड़ियाता। किसानन के दशा आ गांव के तस्वीर बदरंग भइल जाता। शोषित किसानन के बयान के दर्ज करी? गांव के छछांइल धरती के घाव पर राहत के अंगुरी के राखी? टूटत मूल्य, दरकत संबंध, चटकत नैतिकता आ अंघुआत कर्तव्यबोध के शोकगीत आखिर कब ले? देश–दुनिया के गरम बयार हमनी के चारू ओरी चकराता, बाकिर आपन गांव आ किसानन के निरास भाव वाला मातम हमनी के सुनाई नइखे पड़त। हमनी 'लोकल' भइले बिना 'ग्लोबल' होखे के आन्हर दउरा–दउरी में लागल बानी, इहे आज के भारत आ चंपारन के सच्चाई बा।

••

❑ नकछेद टोला, वार्ड संव- 04, मोतिहारी, पूर्वी चंपारण-845 401 (बिहार)

❑ ❑ 'पाती' पत्रिका क अंक 85–86 (सितम्बर 2017) में मिल गयल। एकर कवर पृष्ठ बहुत सम्बेदना जगावे वाला बा। बाढ़ में डूबत एक औरत अपने सोहाग के चीन्हा के हाथे लेहले बा। आउर कुछ नाहीं। सम्पादक जी नीकें तरीके से सांस्कृतिक सोच उघार देहले बाड़न। डॉ. उदय प्रकाश जी क अट–पट बानी के वइसहीं समझे के पड़ी, जइसे कबीरदास जी के 'बरसे कम्वल भींजे पानी' के समझे के पड़ेला। ए गहराई के नापे के प्रयास खातिर डॉ. प्रकाश उदय जी धन्यवाद क पात्र हयन।

एह अंक क सब रचना बेजोड़ हइन। ई सम्पादक क जौहरी के तरह रचना पहिचाने आ परोसै क आपन विशेषता हौ। प्रदेश विशेष, व्यक्ति विशेष पर लिखल आलेख पत्रिका के सोने में सोहागा क काम करत हौ। डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र जी अउर पाण्डेय कपिल जी पर मूल्यवान सामग्री बा। कविता, गीत, गजल साहित्य क्षेत्र में महमह करे वाली बाड़िन। पं0 हरिराम द्विवेदी क बरवै छन्द में लिखल 'बरसात' में, बरसात क बहुत सजीव चित्रण बा। ओही तरह पाण्डेय कपिल जी क गीत, गजल मन के छू लेवे वाला लगल।

"जिनगी सिराइल अइसहीं, कुछ जीत में कुछ हार में।
एह हार–जीत के खेल में, मन के चढ़ाव उतार में।।"

डॉ. आशारानी लाल के कथा 'बेटी के' पूरे जीनमी क दास्ताँ हौ। नारी मन क पीड़ा झलकत हौ। लेकिन बेटा खातिर जवन तिरिया आवेले, ऊहो त केहू क बेटी होले? एपर सम्पादजी क "कुछ आग–कुछ राग" पुस्तक क 'रेवाज' कविता इयाद आवत बा। "का हो हरे चलबू" छोट बिटिया के आजी अइसहीं कहत हइन, आ ओनहूँ जब छोट रहलिन त ओनकरो आजी अइसहीं कहत हइन, आ ओनहूँ जब छोट रहलिन त ओनकरो आजी अइसहीं कहत रहलिन।। मतलब नारी के मुक्ति आ उत्थान बदे नारी समाजे के जागल आ आगा आइल जरुरी बा।

प्रो0 सदानन्द शाही जी के 'कथक्कड़ी' पढ़ल–पढ़त "अम्मर बाबू आ बनारस क पण्डा" पर जात–जात सिगनल लाल हो गयल। गाड़ी ओही दरिये खड़ी हो गइल। हम 'घीव देत घोड़नरियाय' के मुंहावरा सुनले रहली हँ। मुला अइसन मुहावरा पहिली बार सुनलीं "घीव देत बाभन नरियाय!" अपने चउहतर साल के उमिर में पाँच ठे किरिया– करम करे के पड़ल। हमके अइसन नरियावे वाला पण्डित नाहीं मिललन। न अइसन खेत लिखवावे वाला। अपने प्रेम से अपने सामर्थ के अनुसार लोग देला। ई लोग महाब्राह्मण होवै करेलन, छरियाय के माँगे वाला समाज में इहै चलल आवत हौ। नाहीं त इ कुल करे क का जरुरत हौ?

हमरे इहाँ काशी में, हमरे इहाँ फुल्ला के गंगा जी में डाले बदे नइया कइके बीच गंगा में जापे के पड़ेला। मुरदा लेके श्मशान घाट पर डोम राजा से आगी लबे के पड़ेला, नाइ से बाल मुड़वाये के पड़ेला, लास जलाये बदे तिखती, लार, घीव, चन्दन क लकड़ी, क इन्तजाम करे के पड़ेला। कचौड़ी गली में अदमी पीछे डेढ़–डेढ़ पाव खोवा मिठाई, कचालू खियावे के पड़ेला। ईहो सब क संस्मरण अनुभव लेखक के जरुरे होई?

बनारस में जेतना पण्डा वेशधारी होलन ऊ सब बांभनै नाहीं होलन। आधा से जियादा मल्लाह होलन। गंगा पुत्र लोग घाट पर रहेलन। अलग–अलग जात क होलन। पक्का महाल में सब जात क लोग, पण्डागिरी करेलन। प्रोफेसर साहब क पाँचो संस्मरण नीक लागल। पहिला संस्मरण एक प्रकार क कुप्रथा हौ, एके पढ़े लिखे लोगन के आगे आके खेयाल करे के चाहीं। ई भ्रम में न रहे के चाहीं कि ई सब काम खाली बांभने करेलन।

अयोध्या में सरयू जी पर सब पण्डा मल्लाह हयेन। इहाँ हम देखले रहलीं एक मुसलमानो के अपने हिन्दून मित्रन के साथे यात्री लोगन के मन्दिर–मन्दिर घुमावे, जवन चढ़ावा चढ़ै ओमे से मन्दिर से हिस्सा लेव। केतने हिन्दू देवी–देवता क स्थान पर इहे मुस्लिम भाई लोग फूल–माला–नारियल प्रसाद बेचलन। कहल गइल हौ कि, "पारस परसि कुजात सुहाई" अइसहीं रउवाँ हमरे दूनो कविता के छू के लोहा से सोना बना दिहले हईं। एकरे बदे नमन। सब कवि लोगन के, लेखकन के बड़ाई करब त कथा बढ़ जाई। एसे बस एतनै। आपे के शब्दन के साथे–

"हे–पुरवा–हे पछुआ। तूँ ही बतावऽ साँच–साँच/हम सुख लोढ़लीं कि दुःख! बस हमरा बदे तू आपन मनवाँ साफ रखिहऽ, हमार भूल चूक माफ करिहऽ।" ••

❑ विजय शंकर पाण्डेय, गुंजन कुटिया, नारायणी विहार कालोनी, वाराणसी।